क्षत्रियोंके जो जो अपूर्व गुण हैं, मुख्यकर अनीतिका उच्छेद शिष्टोंकी
ा इत्यादि; उन सब गुणोंसे विभूषित भोंसले मालोजीकी यह मनोहर कथा
ननेसे क्षत्रियोंको अपना कर्त्तव्य सूझ पड़ता है, अब भी उनको अपनी
थिल वीरतामें अपूर्व स्फूर्ति हो उठती है। वीर रस तथा परोपकारकी तो
में मूर्ति खड़ी की गयी है।

यह पुस्तक मराठी भाषामें थी हमने इसका अनुवाद सरल हिन्दी
में कराया है।

आशा है कि सच्ची वीरताके प्रेमी इस पुस्तकको पढ़कर यवनादि दुष्टोंसे
ाये हुए निरपराध गौ ब्राह्मणादियोंको बचाने वाले वीर मालोजीके गुणोंको
ृदयमें धर कर बड़े प्रसन्न होंगे। और क्षत्रिय लोग अपने वीरकी वार्त्ताओंका
ुकरण कर परोपकारमें तत्पर होकर पीड़ितोंकी रक्षाका फल प्राप्त करेंगे।

इति।

हिन्दीहितैषी-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) प्रेस-बम्बई.

श्रीः ।

वीर मालोजी भोसले ।

प्रकरण १.

भोसले वंशका परिचय ।

आज हमारे यहां न्यायशीला परमकृपालु सरकारका इकडंकी राज्य है, लोग अपने २ धर्म कर्मको स्वतंत्रतासे पालन कर सकतेहैं, मुसलमान अपनी जेदोंमें नमाज पढ़ते हैं, तो हिन्दू अपने मंदिरमें कथा कीर्तन करते हैं; कोई ो रोक नहीं सकता। हजारोंका माल लेकर जहाँ जाना चाहे वहाँ एक साधा- मनुष्य भी अपने इच्छित समयपर पहुँच सकता है। मार्गमें कोई यहभी नहीं सकता कि "साहजी कहाँ जाते हो?" अथवा "क्योंबे काफिर क्या लिये ा है?" बाबू लोग अपनी नवोढ़ा सुन्दर अर्धांगिनीका हाथ पकड़े हुए सुख- स्वतंत्रतासे घूमते फिरते हैं; परन्तु किसी भी प्रकारका भय उनको नहीं ता। ये सब हमारी सरकारके न्यायकी सुप्रणालीका ही फल है कि "बाघ ी एक घाटपर पानी पीती हैं।" परन्तु आजसे तीन साढ़े तीनसौ वर्ष जिस समयका मैं आज पाठकोंको कुछ वर्णन सुनाना चाहता हूँ, यह बात थी। उस और इस समयमें कौड़ी मोहरका सा अन्तर है। उस समय मुस- न बादशाहोंका यहाँपर राज्य था, उन्हींकी इकडंकी बज रही थी, भारतका , भारतका धर्म, और भारतका सौभाग्य नष्ट करनाही एक मात्र उनका य था। किसी भी मनुष्यको जरा स्वच्छ वस्त्र पहने देखा कि तुरंत उसका ार छीन लिया जाता था, किसी भी अबला सुन्दरी स्त्रीको पाया कि उसी य उसको उसके पति अथवा अन्य सम्बन्धियोंसे बलपूर्वक छीनकर बीबी लिया जाता था और उसपर अनेक प्रकारके बलात्कार किये जाते थे, ह्मणोंका जनेऊ तोड़कर पैरोंमें कुचला जाता था और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, दि सबही वर्णोंको मुसलमान करलिया जाता था। बिचारे, अनाथ हिंदुओंके उस समय कौड़ी सेरके होरहे थे और असंख्यही हिंदुओंके गले यवनोंकी वार द्वारा मूलीकी तरह काट दिये जाते थे। हिंदूधर्म रसातलको पहुँचरहा और उसके बदले सर्वत्र "दीन इस्लाम" ही ने अपना राज्य जमा लिया । यवनोंकी तलवारही सूर्यके समान चमकती थी और प्रत्येक मनुष्यको ना प्राण, अपना धन और अपना मान रखनेके लिये उसके आगे शिर झुकाना ा था। इतनेपरभी प्रातःकालसे सायंकाल पर्यंत निर्दय यवनोंके कराल के विकराल मुखमें असंख्य हिंदुओंकी बलि लगजाती थी। इतनाही नहीं,

और मालोजी भोंसले ।

रन अवाक् दीन गौओंके रक्तकी नदी वहानेमें भी दुष्ट यवन विलकुल नहीं
हिचकते थे। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य सबही अपने २ धर्म कर्म से च्युत होतेजाते थे
और क्या स्त्री, क्या पुरुष, क्या वाल, क्या युवा और क्या वृद्ध सबही अपने मनमें
यवनोंको गालियाँ देते तथा उनके नाश होनेकी परमात्मा सर्व शक्तिमान् जगदी-
श्वरसे प्रार्थना करते थे; परंतु प्रत्यक्षमें किसीकाभी साहस चूं करनेतकका
नहीं होता था।

लगभग पौने तीनसौ वर्षतक विजयनगरके वीरोंने यवनोंसे खूबही वदा-
वदी चलाई और उनको पास न आने दिया; परंतु अंतमें सन् १५६५ में वे परा-
जित होगये और तबही विजयनगरके स्वातंत्र्यका लोप होकर यवनोंका
अधिकार जा जमा। उधर राजपूतानेके और राजा तो यवन वादशाहकी सेवा
स्वीकार करही चुके थे केवल चित्तोड़ही ऐसा बचा था जिसने कई वार यवनों-
को हराकर भगा दिया था और निरंतर कई वर्षोंके युद्धमें अपने असंख्य वीरोंका
योग देचुकनेपर भी यवनोंकी सेवा करना स्वीकार नहीं किया था। केवल इतनाही
नहीं वरन वीर राजपूतोंने अपनी मुट्ठीभर सेनासे टीडीदल समान यवनोंको
इतना मारा, इतना ठोंका और अपनी वीरतासे वढ़कर उनकी इतनी खवर ली कि
विचारोंको हार खाकर कई वार लज्जितमुख भागना पड़ा था परन्तु एक कहावत
प्रसिद्ध है कि "अकेला चना भाड़को नहीं फोड़ सकता" वही दशा चित्तोड़की
हुई। पराये मनुष्यसे लड़नेके लिये मनुष्य वीरता करसकता है; परन्तु जब घर
फूट जाता है तो कोई उपाय नहीं चलता। यद्यपि चूहा एक छोटासा जीव होत
है; परन्तु जब वह पीछे पड़जाता है तो नींवको खोद २ कर एक बड़े महलको भी
गिरादेता है। किसी २ रजवाड़ेने मुगल वादशाहसे मिलकर जब चित्तोड़
को दवाने और अपनी श्रेणीमें मिलाने पर कमर वाँधी तब "घरका भेदू लंका
ढाहै" की कहावत चारितार्थ होगई और अंतमें अपना धर्म रखनेके लिये महाराना
प्रतापसिंहको अपने, अपने पुत्रके, और अपनी रानी आदिके प्राण हथेलीमें लेकर
चित्तोड़से कूँच करना पड़ा। वस इसतरह पर यवनोंका राज्य और अधिका
चारों ओर वढ़गया और ऊपर लिखे अनुसार अन्याय, वलात्कार तथा दुष्ट क
होने लगे; परन्तु कोई भी उनको रोकने वाला न रहा।

यह अनादिकालसे होता चला आता है कि जब दीनों और गौ ब्राह्मणोंपर
अत्याचार होता है तब उस दयामय परमात्माको अपनी संतानकी रक्षा करनेके
लिये कुछ न कुछ यत्न करना पड़ता है। आगे जब २ गो ब्राह्मणोंने दुःखी होकर
शेषशायी श्रीभगवान्‌की क्षीरसागरपर जाकर प्रार्थना की थी तबही तब उनको
अवतार धारण करना पड़ा था। इसी तरह पर इस समय भी जब प्रजा अधिक
दुःखित होगई तो उसकी रक्षाके लिये भगवान्‌को इस कथाके नायकजैसे वीरोंको
उत्पन्न करना पड़ा।

जिस समय इस तरह पर यवनोंका दौरदौरा होरहा था दक्षिणमें कई कुल गाँवोंमें खेती वारीसे अपना निर्वाह करते थे। देवल गांव, जिंती, खानवरुल आदि ग्रामोंमें एक क्षत्रियकुलकी पटेलाई चलती थी। यह कुल भौंसले नामसे प्रसिद्ध था। यद्यपि इन क्षत्रियोंके व्यवहार तथा रहन सहनमें वहुत परिवर्तन हो गया था, तलवार, तीर और बंदूकोंके बदले उनके हाथमें हसिया, गोफन और लाठी आगई थी; घोड़ोंके वदले गाय और भैंसोंको चराना उनके भाग्यमें आगया था और वनमें शिकारी जीवोंको मारनेके बदले खेतोंमें चिड़ियोंको उड़ाना पड़ता था; परन्तु तबभी उनके स्वभावसे क्षत्रियत्वका जोश नहीं गया था, बाहरसे किसान बनजाने परभी मन उनका क्षत्रियही बना हुआ था और इतनेपरभी वीरताने उनका पीछा नहीं छोड़ा था। और होना भी ऐसाही चाहिये; क्योंकि जिस वंशमें अवतार लेकर महात्मा रामचन्द्रजीने रावण आदि राक्षसोंका संहार करके ऋषि और गो ब्राह्मणोंको संकटसे बचाया था, जिस वंशमें उत्पन्न महाराणा प्रतापी प्रतापसिंहजीने यवनोंको परास्त करने और अपने धर्मकी रक्षा करनेमें अपने प्राणतककी पर्वाह नहीं की थी, जिस घरानेके महाराणा उदयपुरके वंश आजदिन भी उसी प्रणालीपर चले आते हैं और जिस कुलके वीर समशेर जङ्गबहादुर आज भी नेपालमें अपनी इकडंकी बजा रहे हैं उसी वंशसे यह भोंसला कुटुम्ब है तब कहिये सूर्यवंशीय तेज जाभी कहा सकताहै? जिस समय खूनी यवन अलाउद्दीनने महारानी पद्मिनीके रूपसे मोहित होकर राना भीमसिंहको धोखेसे कैद करलिया था तो पद्मिनीने अपने बुद्धिबलसे सातसौ डोलियोंमें कहार और दासीके रूपसे २१०० शस्त्रधारी वीर राजपूतोंको यवनसेनामें भेजकर पतिको छुड़ा लिया और शत्रुको खूब छकाया तथा इसतरहपर अपने कपट जालमें अलाउद्दीनको फँसाकर कई हजार वीर राजपूत रमणियों सहित अपने धर्म और सतीत्वकी रक्षा करनेके लिये जीवित भस्म होकर जोहार किया तो निराश होकर अलाउद्दीनने चित्तौड़में खूब काटमार मचाई और "भूखा सिंह मेंड़क मारै" की कहावतको चरितार्थ कर दिखाया। इसके उपरान्त भी जब कई वर्षोंतक यही दशा रही, तो महाराणा अजयसिंहने अपने वंशको नष्ट होता देखकर लगभग सन् ... में अवसर पाकर अपने एकमात्र १६ वर्षके पुत्र सजनसी (सज्जनसिंह) को चुपकेसे राज्यसे बाहर भेज दिया। यद्यपि सज्जनसिंह को यह स्वीकार न था परन्तु पिताकी आज्ञाका उनको पालन करना पड़ा। वह वहाँसे चलकर यह इधर उधर अपने दिन काटने लगे और समय पाकर दक्षिणमें जा रहे। उन्हींका वंश भोंसला नामसे प्रसिद्ध हुआ।

इस वंशमें बाबजी नामक एक प्रसिद्ध पुरुष होगये हैं। यद्यपि वह इस समय घर और राज्यरहित सज्जनसिंहकी सन्तान थे; परन्तु उन्होंने अपनी वीरता और बुद्धिबलके प्रतापसे दक्षिणके कई ग्रामोंमें अपनी ...

करली थी और लोगोंमें अपनी अच्छी प्रतिष्ठा करली थी । सब लोग उनको पू. मानते थे और समय पर उनसे सलाह लिया करते थे । बावजीका कुटुम्ब बड़ा थ और बड़ी दीनावस्थासे उनको अपना निर्वाह करना पड़ता था; परन्तु इतनेपरभं वह इतने ब्राह्मणसेवी और स्वजनप्रेमी थे कि अपने पूर्वजोंके साथ आये हु कुलगुरुके वंशज मल्हारभट्टके कुटुम्बका भार भी अपनेही शिरपर रखते थे मल्हारभट्ट भी पूरे विद्वान् और यजमानसेवी थे तथा अन्तःकरणसे यं चाहते थे कि किसी यत्नसे फिर अपने यजमानके हाथमें गया हुआ राज्य आजाय उनसे जहाँतक बनता था वह यत्न भी इस बातका करते रहते थे और अप स्वामीके साथ सुखपूर्वक निवास करते थे ।

समयको जाते कुछ देर नहीं लगती । इसी तरहपर कई वर्ष निकल गये परन्तु अधिक कालतक यह दशा भी न रही और अपने छः तथा चार वर्षके द पुत्रोंको अनाथ, स्त्रीको विधवा और मल्हार भट्टको दुःखी करके, उनको सदाके लिये शोकसमुद्रमें डुबोकर बावजी इस संसारसे विदा होगये ।

प्रकरण २.
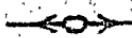
कैदमें मल्हार भट्ट ।

बावजी रावके मरनेसे दोनों पुत्रोंका पालन, दोनोंकी शिक्षा तथा पटेला के सब कामोंका भार उनकी विधवा स्त्रीके शिर जापड़ा । इस बातसे उस विचारीको अतिकष्ट होगया; परन्तु उस चतुर स्त्रीने बड़े धैर्यसे सब काम अपने शिरपर ओढ़लिया और वह शांतिसे काम करने लगी । यह तो मैं पहले लिखह आया हूँ कि बावजीकी मृत्युके समय उनके दो बालक एक छः और दूसरा चार वर्षका था । बड़ेका नाम था मालोजी और छोटेका विठूजी । मालोजी जन्महीसे चतुर और वीर था; उसकी नस २ में क्षत्रियत्व भरा था; वह प्रत्येक बात और कामको ध्यानपूर्वक देखता और सुनता था और उसकी स्मरणशक्ति भी बड़ी प्रबल थी; परन्तु छोटे भाई विठूजीकी यह दशा नहीं थी । यद्यपि वहभी राजपूत था और वीरतामें कम नहीं था परन्तु अपने बड़े भाईसे हजार दर्जे कम था । उनकी माता, जिसको अब मैं आगे जाकर पटेलिनके नामसे सम्बोधन करूँगा अपने कर्त्तव्यको खूब समझती थी । एकाएक पतिवियोगका दुःख आपड़ने प. भी वह घबड़ाई नहीं; अधीर नहीं हुई वरन् एक धीर पुरुषकी तरह अपना काम चलाने लगी । वह अच्छी तरह जानती थी कि किसी दिन बड़ा पुत्र मालोजी सब कामको सँभालेगा, अपने पूर्वजोंके नामको सार्थक करेगा और यश प्रा करेगा । सन्तान कैसीही कुपूत क्यों न हो; परन्तु माताका उसपरभी अखूट औ

पवित्र प्रेम होता है तब मालोजी तो जन्महीसे 'होनहार बिरवान होत चीकने पात" के अनुसार एक भावी वीर और विद्व प्रतीत होते थे फिर उनपर मातृस्नेहका क्या कहना। वह दो को समान गिनती और दोनोंका समानही लालन पालन करती थी। आजकल बालक जैसे धूलमें लोटते और इधर उधरके निरर्थक खेल खेलते हैं वैसे व अपने बच्चोंको नहीं करने देती थी। आरम्भहीसे उसने अपने प्रियपुत्रोंका राजपु के योग्य खेलोंकी ओर ध्यान लगाया था और समय पाकर वह उनको अप पूर्वजों की वीरता, उनका धर्म, उनका अभिमान, उनका गौरव और उनकी प्रति तथा मान मर्यादाका पूरा २ वृत्तान्त सुनाया करती थी जिसका परिणाम य हुआ कि उनके कोमल हृदयमें बचपनहीसे ये सब बातें दृढ़तापूर्वक ठस गई थीं

इधर मल्हारभट्ट अपने यजमानके दोनों पुत्रोंको स्वपुत्रोंसे भी अधिक गिन ते थे। वहभी अच्छी तरह जानते थे कि स्वधर्म, स्वाभिमान, स्वदेशाभिमान तथ स्वकुलाभिमानकी रक्षा करनेवाला यही मालोजी होगा इसलिये वह अन्त: करणसे उन दोनों भाइयोंको पढ़ाते और शिक्षा देते थे। वह चाणक्यनीति, विदुर नीति, कामन्दकीय नीति, भर्तृहरि नीति शतक, गीता, महाभारत, पुराण, आदिमें से चुने हुए उपदेश और कथाएं उनको सुनाया करते थे। कभी आपद्धर्मका उप देश करते थे, कभी दश कुमारचरित्र सुनाते थे, कभी विक्रमादित्य और शालि वाहनका चरित्र तो कभी गुजरात प्रांतके पाटन नगरके राजा सिद्धराज जयसिंह, रण थम्भोरके हमीर, मेवाड़के समरसी, सीसोदियोंके जोहार तथा पद्मिनीका इतिहास सुनाया करते थे। तात्पर्य यह कि मालोजीके चित्तमें बचपनहीसे वे गुण और बातें दृढ़ जम गई थीं जिन्होंने उनको उस पदपर पहुँचाया जो पाठक आगे चलकर भलीभांति जानलेंगे।

अंगरेजीमें कहावत प्रसिद्ध है कि Misfortune never comes alone अर्थात् विपत्ति अकेली नहीं आती है। बावजीरावके मरणसे सुख तो पहलेही नष्ट होचुका था; परन्तु दोनों पुत्र सहित पटेलिन तथा मल्हार भट्ट अपने चित्तको धैर्य देकर कुछ संतोष ग्रहण कर बैठे थे, सोभी विधाताके वाम होनेसे अधिक दिन न ठहर सका और शीघ्रही छिन गया। मल्हार भट्ट बड़ेही स्वामिभक्त थे और अन्त:करणसे फिरभी अपने बालक यजमानको राजगद्दीपर सुशोभित देखकर अपने मनकी लालसा पूर्ण करनेके उत्सुक थे। इस खटपटके लिये उनको कईबार उदयपुर जाना पड़ता था तथा राजपूतानेके कई राजाओंसे भी उनका पूरा परिचय होगया था। बस यही शत्रुओंको बुरा लगता था और परिणाममें यही उनके कष्टका कारण होपड़ा। एक दिन मल्हार भट्ट घोड़ेपर सवार होकर इसी उद्योगमें कहीं जा रहे थे कि मार्गमें यवनोंने उनको घेर लिया और पकड़कर एक थानेमें कैद कर दिया।

इधर कई दिनोंतक मल्हार भट्ट, बूढ़े मल्हार बाबा, वृद्ध गुरु मल्हार बुवाको न देखकर मालोजी दुःखी होने लगे । वह नित्य अपनी मातासे पूँछा करते "मा।बाबा कहाँ हैं ? आज कल वह क्यों नहीं आते ? तूने उनसे कुछ कह तो नहीं दिया है ? तो क्योंरी मा ! अब उनको कब बुलावैगी ? उनके आये बिना मैं कलेऊ नहीं करूँगा" और कभी२रो भी दिया करते थे। माता जैसे बनता तैसे उनको बहकानेके लिये कभी कहती "जिन्ती गये हैं तेरे लिये टोपी लावेंगे", कभी कहती "खानवट रुपया लेनेको गये हैं,वहाँसे तेरे लिये बहुतसे रुपयेलावेंगे" कभी कहती "यात्रा करने गये हैं जल्दीही आजायँगे, आ तुझको घीसे चुपड़ी रोटी दूं।" इसतरह वह अनेक प्रकारसे मालोजीका चित्त उधरसे खींचकर अन्य बातोंमें लगाने और मल्हार भट्टका स्मरण भुलानेका यत्न करती परन्तु मालोजी अवस्था में बालक होनेपर भी बुद्धिके बालक नहीं थे जो इसतरहकी थोथी बातोंमें बहक जाते । मल्हारभट्टका पुत्र लक्ष्मण भट्ट भी विद्वान् था, अपने पिता की तरह वहभी मालोजीके पास नित्य जाता और उनको नई २ कथायें सुनाता जिससे थोड़ी देरतक उनका चित्त इधरको बँट जाता; परन्तु मल्हार भट्टकी याद उनके चित्तसे न हटती । वह सदा इसका कारण जाननेके लिये उत्सुक रहते और माता तथा लक्ष्मण भट्टसे पूँछा करते;परन्तु वे दोनों उनकी चंचलता और जल्दबाजी को देखकर अच्छी तरहजानते थे कि जो मालोजी मल्हारभट्टका यवनों द्वारा कैद किया जाना जानलेंगे तो न जाने क्या उपद्रव करेंगे इसी भयसे वे इस बातको छिपाते थे; परन्तु एक दिन उन्होंने उन दोनोंकी बातको छिपकर सुनलिया और सब हाल जानलिया ।

अपनी माता और मल्हार भट्टके द्वारा मालोजी जो यवनोंका अपने पूर्वजों के साथ अत्याचार और राज्य छोड़कर बनवास भोगनेकी कथा कई बार सुन चुके थे आज वही बात ताजी हो आई और क्षत्रियरक्त उनकी नस २ में फड़क उठा । बालक मालोजीका केवल इतनेहीसे संतोष न हुआ; परन्तु उन्होंने अपने साथियोंको भड़काया और दश बीस लट्ठधारी छोकरोंको लेकर मल्हारभट्ट जिस स्थानमें कैद थे उस थानेपर चढ़ाई करनेका पक्का विचार करलिया। जब पटेलिन को यह खबर मिली तो उसने दौड़कर उनको पकड़ा और बड़ी कठिनाईसे रोका। खैर जैसे तैसे माताके समझानेसे उनको उस समय तो अपना विचार रोकना पड़ा; परन्तु हृदयकी क्रोधाग्नि बदला लेनेकी इच्छारूप आहुतीसे अधिक २ प्रज्वलित होती गई और उसी समयसे उन्होंने यवनोंको अपना पूर्ण शत्रु मानकर समय पानेपर अपना बदला लेनेका दृढ़ प्रण करलिया । इसीसे कहा है कि "संस्कारात प्रबला जातिः" अर्थात् संस्कारसे जाति प्रबल होती है । यद्यपि मालोजी संस्कारसे एक किसान थे और उन्हींके बच्चोंमें खेलते थे; परन्तु क्षत्रियत्वका जोश उनमें बनाही रहा ।

इधर लक्ष्मण भट्ट अपने बालक यजमानको समझान, उनका धैर्य दे और उनको शांत करनेके लिये पिताकी खोजमें घरसे निकला और पूँछते पाँछते उसी स्थान में पहुँचा जहाँ मल्हार भट्ट कैद थे। सिपाहीको कुछ द्रव्य देनेका लालच देकर वह पिताके पास पहुँचा और उनकी वह शोचनीय दशा देखकर बहुत दुःखित हुआ। पुत्रके मुखसे अपने होनहार बालक यजमान मालोजी तथा उनकी माताका कष्ट सुनकर मल्हार भट्टके चित्तको भी बड़ा दुःख हुआ; परन्तु वश क्या था। अन्तमें उन्होंने कहा "लक्ष्मण! देख! भोंसलाकुल हमारा यजमान है, वह हमारा सदासे पालन करता आया है और वही आगे भी करेगा। हम ब्राह्मण हैं, कठिनतासे अपने कुटुम्बका पालन करनेकी शक्ति रखते हैं; परन्तु यह क्षत्रियवंशही है जो आपत्ति आनेपरभी ब्राह्मणोंको नहीं छोड़ते हैं। बावजी रावने हमारी रक्षा की है और अब मालोजी भी वैसाही है। मुझको पूर्ण आशा है कि वह अपने पितासे बढ़कर पराक्रमी और यशस्वी होगा। मैंने यथाशक्ति अपने कर्त्तव्यका पालन कियाहै और इसहीमें अब मेरा अन्त होगा। आजसे चौथे दिन मैं इस संसारसे चल दूंगा योगद्वारा यही स्थिर किया है इसलिये अब तुझसे मेरी यही आज्ञा है कि जो तू मेरी आत्माको संतुष्ट करना चाहै तो उस कुटुम्बकी अन्तःकरणसे सेवा करना। उनके सुखमें हमारा सुख और दुःखमें हमारा दुःख है। बस अधिक क्या कहूँ। मेरी ओर की कुछभी चिन्ता न कर और सुखसे रहै। यही मेरा आशीर्वाद है; परंतु देख! अपने यजमानसे कभी विमुख न होना।"

प्रकरण ३.

मालोजीकी बाल्यावस्था।

जब रोगी असाध्य होता है तो घरके सब लोगोंको, आत्मीय जनों को, सगे सम्बन्धियोंको तथा इष्टमित्रोंको उसे रोगमुक्त करनेकी चिंता रहती है; वे बड़े २ डाक्टरोंको बुलाते हैं; हकीम साहबको याद करते हैं; कविराजों और वैद्यराजोंके पास दौड़ते हैं; गारुडी और जादू टोनावालोंकी शरण लेते हैं; भैरव, भवानीको बलि चढ़ाते हैं; भूत और प्रेतोंके नामसे अपना पेट पालने वाले धूर्त्तोंके पंजेकी शिकार बनते हैं; ज्योतिषियोंसे नवग्रहका विधान कराते हैं; ब्राह्मणोंसे मृत्युंजयका जप और दुर्गापाठ कराते हैं; बड़े २ व्रत और उपवास करते हैं; "जबतक श्वासातबतक आशा" रखकर अपनी शक्तिभर द्रव्यको व्यय करते हैं और खाना पीना, सोना बैठना, सब छोड़कर उसी चितामें लगे रहते हैं; परन्तु जब वह मर जाता है तो चिंता और दौड़धूप दुःख और शोकमें बदल जाती है। जबतक शव घरमें पड़ा रहता है सिवाय रोने पीटने और हाय तोबा करनेके कोई भी काम किसी

को नहीं सूझता और घरवाले यही समझते हैं कि अब हमारा काम कैसे चलैगा; परन्तु शवका अग्निसंस्कार करके श्मशानसे लौटते ही रुपयेमें एक आना दुःख शांत होजाता है, और हिंदुओंकी रीतिके अनुसार जहाँ मृतकका द्वादशाह कर्म हुआ और ज्ञातिके लोगोंने आकर घरके मुखियाको पगड़ी बँधवाकर अपने साथ लिया और नियत काममें लेजाकर प्रवृत्त किया कि शोक आधा रह जाता है। इसी तरहपर ज्यों२ दिन निकलते जाते हैं त्योंही त्यों दुःख और शोक कम होता जाता है। पहले तो दिनभर मृतककाही ध्यान रहता है; दश बारह दिन उपरांत दिनभरमें दोचार बार स्मरण आता है; इससे उपरांत महीने भरमें एक बार मासिक तिथिपर याद आती है और फिर इसीतरह शनैः२ कम होते२ बिलकुल चित्तसे हट जाता है। परमात्माकी माया ऐसी प्रबल है कि इस तरहपर मनुष्यके चित्तको शीघ्रही वैराग्यसे छुड़ाकर सांसारिक व्यवहारोंमें लगादेती है।

यही दशा मल्हार भट्टके विषयमें हुई। जबतक वह कैदमें रहे, लक्ष्मण भट्ट और मालोजीकी माताने तन मन धनसे उनको बंदीमुक्त करानेका यत्न किया; खाना पीना, सोना आदि सब सुख छोड़कर उसीपर कमर बांधली और "कौड़ी को कंकर" कर डाला; परन्तु जब उनके देहत्यागकी खबर सुनी तब प्रथम तो बहुत दुःख और शोक हुआ; कई दिनतक खाना पीनाभी छूटगया और शोकके बादल छागये; परन्तु ईश्वरी मायाका चक्र चलतेही शनैः२सब शांत होने लगेऔर उसी सांसारिक व्यवहारमें लीन होगये। किसीने ठीक कहा है कि "आशाहि परमं दुःखं नैराश्यं परमं सुखं।" आशाही सब उपद्रवोंकी जड़ है, आशाही सब विपत्तियोंका कारण है और आशाही सब सम्पत्तियोंका साधन है। जबतक मल्हार भट्ट जीवित थे, उनके बंदीमुक्त होनेकी आशा थी और इसीके लिये प्रयत्न किया जाता था; परन्तु जब उनके मरनेसे आशा जातीरही और सब लोगोंके हाथ पैरभी ढीले पड़गये तो अब उसतरहका यत्न बंद होगया और बदला लेनेकी क्रिया चलने लगी।

मालोजी प्रथमही अपनी माता और मल्हार भट्टके मुखसे अपने पूर्वजोंके साथ यवनों का वर्त्ताव सुनकर उनसे पूर्ण द्वेष मानते थे और भलीभाँति जानते थे कि अवसर पाकर अवश्यही किसी न किसी दिन उनसे बदला लेना पड़ेगा; परन्तु जबसे मल्हार भट्ट कैद हुए और बंदीगृहमें उनका प्राण गया तबसे मालोजीका क्रोध औरभी बढ़ निकला। इस घटना ने मानो उनकी हृदयस्थित ढकी हुई द्वेषाग्निमें औरभी घी होमकर प्रज्वलित कर दिया हो। बस उसी दिनसे मालोजीने अपना चित्त कसरतकी ओर लगाया और क्षत्रियत्वकी रक्षा करने वाले प्रत्येक वीरताके कामोंका अभ्यास करना उन्होंने अपना मुख्य कर्तव्य समझ लिया। शरीर को नीरोग, फुर्तीला, सुन्दर, सुडौल, गठीला, दृढ़ और

चुस्त रखनेके लिये कसरत ही एक उत्तम उपाय है । पटैलिनको मालोजीका कसरत करना पसंद नहीं था क्योंकि वह जानती थी कि कसरत करने वाले छोकरोंके साथमें रहना हानिकर है और आजकल बहुधा ऐसा ही देखाभी जाता है कि कसरत करनेके बहाने लड़के अखाड़ा बनाकर ऐसे लड़कोंके साथ रहते और दिन गवांते हैं कि जिससे शरीर बनना तो एक ओर रह जाता है किन्तु चोरी, जुआ, व्यभिचार, आदि कुटेवें उनके शरीरमें घर करलेती हैं और वे गंजेड़ी, भंगेड़ी तथा चिलम चट बनजाते हैं। इतनाही नहीं वरन् किसी २ लड़केमें तो ऐसी कुटेव पड़जाती है कि वह जन्मभरके लिये किसी कामका नहीं रहता और लोगोंमें घृणा तथा हँसीका पात्र बन जाता है । मालोजीमें यह बात नहीं थी । वह वास्तवमें अपनेको बली और दृढ़ करनेहीके लिये कसरत करते थे । ज्यों २ उनकी अवस्था बढ़ती गई, शरीर भी उनका दृढ़ और सुन्दर होता गया । कसरतके साथ जोर बातें होती हैं, मालोजीने सबहीमें अपने को मास्टर बनालिया था।डँड फरी और पटा खेलना, तलवारके हाथ निकालना, बीस आदमियोंके बीचमें खड़ा होकर चारोंओरके प्रहारोंको एक लकड़ीसे रोकना, और अपने देहकी रक्षा करना,आदि सब बातोंका उन्होंने पूरा अभ्यास कर लिया था । कुश्ती लड़नेमें भी उन्होंने दांव पेच और काट प्रतिकाटका यहाँतक अभ्यास करलिया था कि देखनेवाले ज्योंके त्यों रहजाते थे । इस तरहपर उनका नाम चारोंओरके ग्रामोंमें फैल गया और पचास २ कोसतकके पहलवान् उनसे मिलने तथा लड़नेको आनेलगे; परन्तु परमात्माकी कृपासे इस नवीन पहलवानने कभी हार नहीं खाई ।

इस तरहपर मालोजीकी दूर २ तक प्रशंसा फैलने लगी और उनके ग्रामके लोग भी बड़ी प्रतिष्ठासे उनके साथ वर्त्ताव करने लगे । अबतो प्रत्येक काममें मालोजीही प्रथम गिने जाने लगे और बाद विवाद,लड़ाई झगड़ा,सलाह सम्मति में सब लोग उन्हींको मुखिया मानने लगे । इधर जब विट्ठूजीने अपने भाईकी यह दशा देखी तो उनको भी लज्जावश अपना चित्त बड़े भाईकी तरह कसरतमें लगाना पड़ा और इसतरहपर राम लक्ष्मण कीसी जोड़ी बनगई । पटैलिनने भी अपने पुत्रोंकी ऐसी स्थिति देखकर अपनेको सुखी मानलिया ।

एक दिन सायंकालको पटैलिन और दोनों भाई बैठे हुए बातें कर रहे थे कि पटैलिनने कहा "क्योंरे मालू ! अब तुझको पन्द्रहवाँ वर्ष लगा है ना ?"

मालोजी-"हाँ मा ! आज मैं पूरे चौदह वर्ष आठ महीने और २५ दिनका हुआ हूँ; परन्तु यह तो बता कि इस समय तुझको यह बात कैसे याद आई ?"

माता-"कुछ भी नहीं रे ! ऐसेही पूँछा है ।"

मालोजी-"नहीं २ सच बता तेरे पूँछनेका क्या कारण है ?"

माता—"कारण सारण कुछ नहीं है केवल इतनाही है कि अब तुझको चौपगा करनेकी फिकर करनी चाहिये ।"

मालोजी—"नहीं २ मा ! मुझसे बिना पूँछे कुछ न कर डालना ।"

माता—"क्यों,क्या हुआ ? इसमें कुछ नई बात है। सारा संसारही करता है

मालोजी—"संसार चाहे कुछ करै; परन्तु मेरे लिये तू कुछ न करना । मैं इस झगड़ेमें नहीं पड़ना चाहता।"

माता—"वाह ! इसमें झगड़ा क्या है ? यह तो संसारकी रीति है। इसके बिना काम थोड़ाही चल सकता है ?"

मालोजी—"काम क्यों नहीं चल सकता ? चलाया और चला। स्त्रीके आने से पुरुष पराधीन होजाता है और पैरोंमें बेड़ी पड़ जाती है ।"

माता—"हाँ २ जान लिया । अब तू बड़ा समझदार होगया है । इसीहीसे पुरुस पराधीन होता है तोअपने बापसे क्यों नहीं कहा कि वहभी कुआंरेही रहते?"

मालोजी—"नहींमा ! अप्रसन्न मत हो । मैं तो सब तरहसे तुम्हारी आज्ञामें हूं: परंतु तुम विट्टूके विवाहकी चिंता करो । मैं इस फांसीमें गला नहीं फँसाऊंगा।"

माता—"परसन वरसन मैं कुछ नहीं होती परअब तू मेरे आगे नहीं २ मत कर।

इसी तरहकी बातें हो रही थीं इतनेहीमें रामभट्ट नामक एक मसखरे आ पहुँचे और बोले "हां २ ठीक तो है । नाहीं करनेका क्या काम है । जो आवै सबही स्वाहा करना चाहिये । रामनाम जपना, पराया माल अपना ।"

इनको आते देखकर पटैलिन बोली "आओ महाराज । आज कहाँ भूल पड़े? आपकी तो मैं बहुत दिनसे राह देखती थी।"

रामभट्ट—"माजी क्या कहूँ । आनातो मैं भी बहुत ही चाहता था; परन्तु राघो की माताका कुछ ऐसा स्नेह है कि उसको छोड़कर घरसे बाहर होनेकी इच्छाही नहीं होती । वह पीसा करती है मैं उसके सामने बैठा रहता हूँ । कभी २ जब वह थक जाती है तो उसके साथ मैंभी पीसने लगता हूँ । उसको कभी काम अधिक होता है तो घरमें झाडू भी लगादेता हूँ ।"

पटैलिन—"तो क्या राघोकी मा इतना भी काम नहीं करती है ?"

रामभट्ट—"नहीं यजमान ! वह बिचारी इन्कार थोड़ा ही करती है । वह तो बहुधा मुझको रोकती है और कभी २ मुझको इसके लिये झिड़क भी देती है; परन्तु सब काम वह करती है तो इतनासा मैं करडालूँ तो क्या हुआ ।"

पटैलिन—"तुमारी घरवालीकी उमर क्या है ?"

रामभट्ट—"अजी उमर तो अभी थोड़ीही है । मुझसे ८।१० वर्ष बड़ी है । ४५ पूरे होकर ४६ वां लगा है।"

पटैलिन—"(मनमें हँसकर) तब तो अभी जवान ही है।"

रामभट्ट—"हाँ यजमान ! अभी कुछ बूढ़ी नहीं हुई है तबही तो उसकी इतनी खातिर करता हूँ ।"

पटैलिन—"भट्टजी देखो इस मालूको भी तो समझाओ! कहता है कि मैं ब्याह नहीं करूंगा ।"

रामभट्ट—"क्यों पाटिल बुआ ! माजी क्या कहती हैं ?"

मालोजी—हां ठीक तो है । विवाह करनेमें कुछ सार नहीं है । तुलसीदासजीने भी तो कहा है कि—

दोहा—"फूले फूले फिरत हैं, होत हमारो ब्याव ।
तुलसी गाय बजायके, देत काठमें पांव" ॥

रामभट्ट—"अरे भैया ! रहने दे इस बातको । स्त्री के बराबर संसारभरमें कोई पदार्थ नहीं है । सब सुखको देनेवाली साक्षात् स्त्री ही है ।"

मालोजी—"नहीं २ जो ऐसा मानते हैं उनकी भूल है ।"

रामभट्ट—"जानता नहीं है इस बातको । हमको देख! मुँहके दांत गिरगये हैं; परन्तु तब भी स्त्रीके पीछे मरेजाते हैं । जबतक स्त्री नहीं मिली है तबतक ज्ञानकी बातें करता है; परन्तु जब घरमें आजायगी तो उसका तलवा चाटैगा तलवा ।"

मालोजी—"नहीं बाबा ! यह बात मुझसे नहीं होगी ।"

रामभट्ट—"हां २ मैं जानता हूँ कि तुझसे यह होगी या नहीं। दाईसे पेट क्या छिपाता है! 'मनमें भावै अरु मूँड़ी हिलावै' की कहावत मत कर। बापके आगे हमभी पहले ऐसाही कहा करते थे; परन्तु जबसे स्त्रीका मुँह देखा है तबसे गुलाम बनगये हैं । भैया संसारमें स्त्रीही एक सार है ।"

प्रकरण ४.

वीरताका आरम्भ ।

आज माघ शुक्ला १५ है । शीतका चारोंओर राज्य होरहा है । ठंडी हवाके झपाटेसे देहकी चमड़ी फटी जाती है । अमीर लोग मारे ठंडके घरमेंसे बाहर भी नहीं निकलते हैं; बन्द कमरोंमें बैठे हुए अँगीठियोंसे तापनेपर भी जाड़ेके मारे वे जब शी शी करते हैं; तो बिचारे किसानोंको सुख कहाँ? वे वैसीही तीव्र ठंडी हवाके झोंकोंमें भी खलियानोंमें पड़े हुए हैं । कहीं जुवारका ढेर लगा है; कहीं तिलोंका अम्बार है; कहीं मूँग और उर्दके गंज हैं । दूसरी ओर देखते हैं तो रबीकी फसल तैयार होती है; अलसीके रंग बिरंगे फूल, गेहूँकी सब्जी और कहीं २ से धनियेकी महक चित्तको प्रसन्न कर रही है । गन्नेके खेत अलगही बहार देरहे हैं तो तीसरी ओर चनेके पौधोंमें सब्ज रंगके घुंघरू अलगही लटक रहे

हैं। इसी तरहपर चारों ओर उगी हुई फसलकी हरी चादरके बीचमें खाली खेतोंके टुकड़े और भी शोभाको बढ़ा रहे हैं। ग्वाललोग अपनी गायोंको चराकर गीत गाते और जंगली फूलों तथा हरे २ पत्तोंके गुच्छे शिरमें लटकाये हुए आनन्दके साथ देवलगांवको लौट रहे हैं। कितनेही किसान दिनभर परिश्रमसे खेतोंका काम करके रोटी खानेको अपने घर जारहे हैं और कितनेही अपनी हरी खेतीमें चिड़ियोंको उड़ाने और दूसरे पके हुए सूखे अनाजके ढेरोंकी रक्षा करनेके लिये खेत और खलियानमें पड़े हुए हैं। सूर्यभगवान् भी दिनभर चलकर अस्ताचलको पहुँच चुके हैं, केवल उनकी लाल किरणोंका प्रकाश ऊँचे वृक्षोंकी चोटियोंपर पड़ रहा है जिससे वृक्षों परभी यौवनसा छाया हुआ है। चिड़ियोंका चहचहाना सुननेवालोंके चित्तको आकर्षित किये लेता है। गायें भी दिनभरके वियोगके उपरांत अपने बच्चोंको दूध पिलानेके लिये रांभ २ कर घरकी ओर दौड़ती जारही हैं। ऐसे समयमें हमारे वीर मालोजी भी ग्रामके पासही अपने एक खेतमें मचानके ऊपर लेटे हुए दैवी नियमोंको देख २ कर विचारमग्न होरहे हैं; कभी पृथ्वीकी ओर देखकर कहते हैं कि "देखो परमात्माकी कैसी विचित्र गति है कि एक दाना डालनेसे हजारों दाने होते हैं; परन्तु तबभी हमारा पेट नहीं भरता। अहा! कैसे आश्चर्यकी बात है कि सब वस्तु इसी भूमिमेंहीसे निकलती हैं, खैर और तो ठीक ही है; परन्तु हमारे कपड़ेभी इसीमेंसे निकलते हैं," और कभी आकाशकी ओर देखकर कहते हैं कि "यह क्या वस्तु है, ये इतने सितारे चमकते हैं सो क्या हैं और ये क्योंकर ठहरे हुए हैं। कोई कहते हैं कि ये ऋषि महात्मा हैं जो तप कररहे हैं और कोई कहते हैं कि ये भी हमारी भूमिकी तरह अलग २ लोक हैं; परन्तु नहीं मालूम वास्तवमें क्या है। चाहे जो हो; परन्तु देखो कैसी शोभा होरही है, नीचे पृथ्वीपर सब्जी दिखाई देती है तो ऊपर नीले आकाशमें श्वेत रंगके तारे ऐसे विदित होते हैं मानो बागमें अनेक पुष्प खिल रहे हों। देखो इस जगन्नियंताके कैसे नियम हैं कि सब कार्य अपने २ नियत समयपर स्वतः होते जाते हैं। समयही पर सूर्य चन्द्रमा उदय होते हैं, समयहीपर इन्द्र वर्षा करता है, समयही पर सरदी गरमी पड़ती है और समयही पर वृक्षोंमें फल पत्ते तथा खेतोंमें अन्न उत्पन्न होता है। इससे उस सर्वशक्तिमान्‌की अनंत शक्तिका पूरा परिचय मिलता है"

इसी तरहके विचारसागरमें मालोजी विदेह होकर गोता लेरहे थे; उनको यह भी नहीं खबर थी कि मैं कहाँ हूँ और क्या करता हूँ। इतनेहीमें अकस्मात देवलगाँवमें तुरहीका शब्द हुआ तो चौंककर मालोजीने कहा "यह क्या है। इस समय तुरहीका शब्द कैसा?"

इतना कहकर ज्योंही वह उठे तो क्या देखते हैं कि ग्राममें घोड़ोंकी हिनहिनाहट और पैरोंकी आवाज आरही है तथा बस्तीभरमें घबड़ाहट और कोलाहल होरहा है। अबतो उनको निश्चय होगया कि यह अवश्यही यवन लोगोंका झुंड है और ग्रामको लूटने आया है। उधर खेत और खलियानोंमें जितने मनुष्य थे सब चौंक २ कर खड़े होगये और लगे यवनोंको गालियाँ देने तथा दौड़धूप करने। मालोजी तुरन्त मचानसे नीचे आये और चिल्लाये "अरे रामा! यह क्या गड़बड़ होरही है?"

रामा—"कुँवरजी! अरे साहब! यह तो लुटेरे जान पड़ते हैं। अब क्या होगा?"

मालोजी—"होगा क्या? मेरे साथ चल। अभी उनको मार भगाते हैं।"

रामा—"(मुँह बिगाड़कर) एं! मार भगातेहैं! वेतो बहुत हैं हम दो आदमी क्या कर सकते हैं? हाय २ मैं तो अब मरा।"

मालोजी—"(घुड़ककर) ऐसा क्यों घबड़ाता है? तू चल और घरमेंसे मेरी तलवार तथा बरछा निकाल। मैं अभी औरोंको लेकर आता हूँ।"

रामा—"अजी साहब! मैंतो कभी नहीं जाऊँगा। जो कहीं उन लोगोंने मुझे मारडाला तो बिचारी मेरी घरवाली किसके जीको रोवेगी। मैं मर जाऊँगा तो वह विधवा होजायगी फिर उसके लिये रामा कहाँसे आवेगा?"

मालोजी—"अरे रोता क्या है? चलता क्यों नहीं? तू तो इधर बातें मिलाता है और उधर गाँवका नाश हुआ चाहता है।"

रामा—"योंतो मैं आपके साथ मरनेको कभी न जाता; परन्तु एक बात याद आगई। मेरी घरवाली बड़ी खूबसूरत है, आस्मान जैसी गोरी है, पैरसे बराबर चलभी नहीं सकती, बोलतीभी कुछ तुतलाकर है, कानसे बहरी है, और आँखसे कानीभी है; परन्तु उसकी एकही आँख बड़ी कटीली है; जिस समय वह उसमें काजल लगाती है तो गजब होजाता है। जो लुटेरोंने उसे देख लिया तो उसे अवश्य पकड़ ले जायँगे। चलिये २ अब, आप जल्द चलिये नहीं तो ..."

रामाकी बातको बीचहीमें काटकर मालोजीने कहा—"बस २ सुन लिया तेरा राग! जल्दी चल नहीं तो अब मैं तेरी खबर लेता हूँ।"

रामाने उत्तर दिया—"नहीं साहब चलिये! मैं भी चलता हूँ; परन्तु आपसे हाथ जोड़कर बारम्बार यही प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरी घरवालीको जरूर बचालेना। आपभी उसे एकबार देखलेंगे तो खुश होजायँगे।"

अन्तमें बड़ी कठिनाईसे मालोजीने रामाको आगेसे रवाना किया और स्वयंभी कईएक किसानों सहित ग्रामकी ओर दौड़े। दौड़े तो सही; परंतु शस्त्रधारी सवारोंका सामना करना बिना शस्त्रके कैसे बन सकता था। अंतमें मालोजीकी सलाहसे किसीने फरसा, किसीने कुलहाड़ी, किसीने गड़ांसा, किसीने हँसिया, किसीने बेलचा, किसीने तुतारी और किसीने लाठी सोंटा आदि लिया और चले शत्रुओं पर आक्रमण करने।

"अंधोंमें काना राजा" की तरह गाँवोंमें पटेल अर्थात् नम्बरदारही प्रतिष्ठित तथा धनपात्र माना जाता है, इसीके पास वास्तवमें कुछ अधिक मालटालभी होता है और गल्लाभी विशेष करके उसीके पास अधिक रहताहै,कारण कि इसका घरू माल तो होताही है; परन्तु और किसानभी अपने पास रक्षित स्थान न होनेसे गल्ला, कपड़ा तथा नकद रुपया इसीके पास रखजाते हैं। इसलिये नम्बरदारके घरपर आक्रमण करनेसे अधिक माल हाथ लगता है । बस इसी कारण यवन सवार सीधे मालोजीके घरपर पहुँचे। प्रथम तो मालोजी ग्रामके नंबरदार थे और फिर सर्वप्रिय थे इससे सब लोगोंको सहायता करनाही चाहिये; परन्तु सर्वोपरि एक बात यहभी थी कि "धोबीके घर चोरी हो, लुटें गांवके लोग"। इस कारण सबही वस्तीवाले तुरंत अपना अस्त्र शस्त्र हँसिया, कुल्हाड़ी तथा सोंटा लेकर मालोजीके मकानपर पहुँच गये और लगे सवारोंकी पीछेसे खबर लेने। इधर मालोजीके द्वारपर कई लट्ठधारी जवान सवारोंपर प्रहार करही रहे थे कि मकानके पीछे वाले गुप्त द्वारसे कई आदमियों सहित मालोजीने भीतर घुसकर अपनेभी हाथ चलाना आरंभ किया। दैवसंयोगसे दो सवार घरके भीतर जापहुँचे। उनके शिरमें मालोजीने ऐसा लट्ठ प्रहार किया कि एक तो भूमिपर जा पहुँचा। तुरंतही बड़ी फुरती से दूसरेकीभी यही दशा कर डाली और "जिसकी जूती उसीका शिर" की कहावतको चरितार्थ करते हुए मालोजीने उन्हीं सवारोंकी तलवारें छीन ली और उन्हींके घोड़ेपर सवारी करके शत्रुओंसे काटमार करना आरम्भ करदिया।

अबतो यवन सवार चारोंओरसे घिरगये और लाठियोंके खटाखट, गड़ासों के खचाखच, कुल्हाड़ियोंके धमाधम और बेलचा तुतारीके गदागद प्रहार होने लगे। प्रथम तो सवारोंने भी बड़ी वीरता दिखलाना आरम्भ किया और प्राण झोंककर शस्त्र चलाये; परन्तु कुछ कर न सके । उनका यवन सरदार बहुतही उनको उत्साहित करनेके लिये चिल्ला २ कर कहता जाता था " शाबास बहादुरो ! शाबास ! वाह खूब किया ! खबरदार कोई बचने न पावै ! मारो साले काफिरोंको ! जवानो हम दीन इस्लामके लिये लड़ते हैं ! घबड़ाओ मत, खुदा हमारी मददपर है। " परन्तु "नक्कारखानेमें तूतीकी आवाज" कौन सुनता है। इधर " मारो मारो ! पकड़ो पकड़ो ! " " देखो कोई बचने न पावे ! " "जोज्ये कोई भागी न शकै ! " " हां हां मारो म्हारा सालानने ! याने भी घणो ऊधम मचायो है ! " " बचि हैं कैस ? अबै पूर कारि डारति हैं ! " आदि पचरंगी वस्तीके पचमेल लोगोंकी भिन्न २ भाषाके अनेक प्रकारके शब्द हवामें उड़कर आकाशको भेदे डालते थे। बस थोड़ेही समयमें सवारों और घोड़ोंकी लाशों का ढेर लग गया जिनको देख २ कर औरभी बचे बचाये सवारोंका कलेजा दहल उठा और वे लगे इधर उधर भागने; परन्तु वहाँ तो चारों ओर देहाती

लोगोंका कोट बना हुआ था। अन्तमें कोई उपाय न देखकर यवन सरदार बहादुरखांने शस्त्र डाल दिये, वीर मालोजीके पैरोंमें शिर जा दिया और कहा "वल्लाह! क्या कहना! खुदा आपकी उम्र दराज करे! मैं आपकी जवाँमर्दी और दिलेरी देखकर बाग २ होगया। अब यह आजिज हुजूर ही की ताबेदारीमें हाजिर है। जो कुछ इस आजिजने बिना सोचे खता की उसकी खुदाने सजादी, मगर अब यह कमतरीन हुजूरकी खिदमतमें हाजिर है। इख्तियार मालिकको है ख्वाह जानबख्शें ख्वाह गर्दन मारें"।

मालोजी को उसपर दया आगई और वह बोले "अच्छा खाँ साहब तुमने अपने कियेका फल तो चखही लिया। अपने सौ सवासौ सवारोंकी बलि इस रणभूमिमें देचुके इससे मैं अधिक क्या कहूँ। परन्तु याद रखना अबकी बार मैं तुमको छोड़ता हूँ किन्तु जो फिरदूसरीबार तुमने ऐसा किया तो अवश्यही अपने प्राणसे तुमको हाथ धोने पड़ेंगे। अच्छा जाओ"।

बस इतना कहकर मालोजीने उसे छोड़ दिया। ठीक है "क्षमा वीरस्य भूषणम्" वीरोंका भूषण क्षमा करनाही है।

यवन सवार आये तो थे अपना आतंक जमाने और धन लूटने, परन्तु इस-तरहपर गांठकी पूँजीभी खोकर अपनासा मुँह लिये घरको गये। "चौबेजी गये छब्बेजी होने रहगये गांठके दुब्बेजी"।

प्रकरण ५.

दीपाका विरह।

श्रावणका महीना है, दिनके ५॥ बजनेका समय है, काले डरावने बादलों की ओटमें आकर सूर्य भगवान् दिनको रात्रि बना रहे हैं, केवल कभी २ अपना मुँह दिखलाने और अपने विद्यमान् होनेकी सूचना देनेके लिये चंचल युवतीकी भाँति बादलोंकी खिड़कियोंमेंसे क्षण २ भरके लिये गरदन निकाल देते हैं; परंतु बादलोंको उनकी इतनी स्वतंत्रता भी पसंद नहीं आती इसलिये वे तुरंतही फिर उनको ढांक देते हैं, कभी २ बिजली भी चमककर अंधेरेका उजेला बना देती है और लोगोंकी आँखोंको चकाचौंध करनेमें अपनी शक्ति और पराक्रमका नमूना दिखा रही है। उष्णकालकी प्रचंड गरमीसे दुःखित और प्यासी भूमि वर्षाका पानी पीकर ऐसी प्रसन्न होरही है कि कुछ कहा नहीं जाता, केवल इतनाही नहीं बरन् लालचके मारे उसने इतना अनापशनाप पानी पीलिया है कि पेटू मनुष्यकी डकारोंकी तरह उसमेंसे भी जगह २ पानी बुल २ करके निकल रहा है। स्थान २ में लबालब भरी हुई तलाइयोंमेंसे निकलकर हरियालीकी ओर

जाता हुआ पानी प्रेमकी विचित्र गतिका नमूना दिखा रहा है । जहाँतक दृष्टि पहुँचती है सिवाय हरियालीके और कुछ भी दिखाई नहीं देता जिसके ऊपर बीच २ में लाल, पीले, काले, श्वेत, और मिश्रित रंग विरंगे अनेक प्रकारके फूल विचित्रही शोभा दे रहे हैं जिन्हें देखनेसे यही प्रमाणित होता है कि उस सर्व शक्तिमान् विधाताने दुःखी जनोंके चित्तको शांत करनेके लिये यह विचित्र बाग बनाकर अपनी अद्भुत बागवानीका नमूना दिखाया है। ग्रीष्मऋतुके प्रचंड मार्त्तंडकी असह्य तीव्र किरणोंसे दग्ध और वृद्धावस्थाको प्राप्त वृक्ष आज वर्षाकालकी कृपासे हरे २ पत्तोंकी पगड़ी तथा वैसेही वस्त्रोंसे आच्छादित होकर युवा बन गये हैं और अपने ऊंचे २ मस्तकोंको उठाकर आकाशसे बातें करना चाहते हैं। एक ओर कल २ शब्द करके नालोंका पानी बह रहा है, दूसरी ओर मंद २ गतिसे सरसर शब्द करके शीतल वायु बह रहा है, तो तीसरी ओर पत्तोंका चर २ शब्द होरहा है और पक्षिगण ऊंचे २ वृक्षोंकी चोटियोंपर बैठे हुए चकचकाहट मचा रहे हैं। उनकी ओर दृष्टि देनेसे यही प्रतीत होता है कि मानो सब मिलकर एक स्वरसे उनको ग्रीष्मऋतुमें दुःखित करनेवाले सूर्यके अस्ताचलको जाने और पावस ऋतुके आगमनसे प्रसन्नताके मारे गान कर रहे हैं और बधाई दे रहे हैं। दिनभरके थके हुए सूर्यदेवभी अस्ताचलको पहुँचते २ आकाश मंडपको अपनी मंद पड़ी हुई किरणोंके द्वारा लाल, पीले, रंगसे रंगकर मानो अपनेसे दुःख पाये हुए जीवों और वृक्षोंको प्रसन्न करनेके लिये महफिलकी पूरी छटा बनानेका यत्न कर रहे हैं और ऊंचे २ वृक्षोंको अपनी किरणोंसे लाल २ पगड़ी बँधाकर उनके दिलसे अपनी ओरका द्वेष दूर कराना चाहते हैं। भूमिने हरे रंगकी मखमलका फर्श बिछाकर उसपर जगह २ फूलोंके गमले रख दिये हैं, सूर्यदेवने आकाशमें रंगीन बादलोंसे मंडप बना दिया है, बिजली अपनी चमकसे प्रकाश पहुँचा रही है, बादल गर्जना करके नक्कारे बजा रहे हैं और चिड़ियें मधुरस्वरसे गानकर रही हैं। इस तरहपर आज पावसकी पूरी महफिल जमी हुई है और इंद्रदेव भी समय २ पर वर्षाकी बूंदें डालरकर रंग बरसा रहे हैं।

ऐसे समयका दृश्य देखकर प्रत्येक मनुष्य और प्रत्येक जीव आनन्द मग्न होता है। कोई कैसाही दुःखी क्यों न हो, ऐसे आनन्द और हर्षके समयमें उसका भी चित्त थोड़ी बारके लिये प्रसन्न हुए बिना नहीं रहता, वह भी एकबार परमात्माकी विचित्र कारीगरी और उसकी अद्भुत लीलाकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता परन्तु अंगरेजीमें कहा है कि Amusement to one is torture to the other अर्थात् जो बात एकको प्रसन्न करने वाली होती है वही दूसरेको दुःखदायी। ठीक इसीका उदाहरण इस समय हमारी आँखोंके सामने आरहा है। एक ऊंची अटारीमें एक सुन्दरी बाला अपने दोनों हाथोंमें शिरको छिपाये नीची

गरदन करके बैठी हुई है; उसकी ओर देखनेसे स्पष्ट यही प्रतीत होता है कि अवश्यही उसको किसी हार्दिक पीड़ा और शोकने सता रक्खा है।

कवित्त–कोटि चन्द्रमाकी छवि प्यारीको मुखारविंद, लाजत फणिंद लखि शोभा तासु बारनमें। चंचल कटाक्ष मान भंजन कुरंगनको, बरछीसी मारै बाल तिरछी निहारनमें॥ सारी सरकत त्यों उरोज उघरत जात, मंगल भनतसु उजागरी हजारनमें। ऐसी सो अनोखी नारि राजत सखीन बीच, होति छवि जैसी शशि मानहु सितारनमें॥

इस कवित्तका बहुतसा अंश उसपर घटित होता था। यद्यपि वह शोकाग्निसे जली हुई थी, वस्त्रभी उसके मैलेसे थे और कुछ भी ठाठबाठ नहीं था; परन्तु विधाताका दियाहुआ रूपही उसके लिये हजार आभूषणोंसे बढ़कर था। लगभग आधे घण्टेतक वह इसी तरह शिर नीचा किये बैठी रही। अकस्मात् किसी पासहीके वृक्षपरसे एक पपीहेका "पिया पिया" शब्द उसके कानोंमें जा पहुँचा। सुनतेही एकदम उसने शिरऊंचा किया और अश्रुपूरित आँखोंसे कहा:–

दोहा–अरे पपीहा बावरे, तू क्यों दीनी कूक।
धीरे धीरे सुलगती, तूने दीनी फूक॥

"अरे दुष्ट पापी पपीहा! तू क्यों पिया२ करता है? पिया हैं कहाँ जिसको बुलाता है? यहसायंकालकी मंद हवा और वर्षाकीहलकी बूँदैंमेरी हृदयस्थित ज्वालाको प्रथमहीसे बढ़ा रही थीं जिसपर तूने फिर पिया२ पुकारकर एकनया दुःख खड़ा कर दिया। पावसका प्रतापही ऐसा है कि प्रत्येक जीवके हृदयमें काम उत्पन्न होता है और प्रत्येकही जीव अपने प्रियतमसे मिलनेको दौड़ताहै। अरे! जीवकी कौन कहे निर्जीव पदार्थोंको भी काम सताये विना नहीं रहता। देखो नदियाँ यौवनपूर्ण होकर बड़े वेगसे समुद्रसे मिलनेको दौड़ी जारही हैं और लताएं भी वृक्षोंको आलिंगन करती हुई उनके चारों ओर लिपटती जाती हैं जिसमें वे उनको छोड़कर न भाग सकें; परन्तु हाय! मैं दुखिया अभागिनी! इस सुखसे बंचित हूँ। आज तेरह वर्ष पूरे करके मैंने चौदहवेंमें* पदार्पण किया परन्तु माता पिता का मेरे दुःखको मिटानेके लिये ध्यानही नहीं गया!"

इतना कहते२ही वह फिर कुछ सॅभलकर बोली "नहीं २! मैं माता पिताको दोष लगानेमें भारी भूल करती हूं। उनका इसमें क्या दोष है? वे भी कितना २ यत्न कररहे हैं; परंतु उनको योग्य वर मिलता भी तो नहीं है। जो वे कहीं जल्दी करके 'भैंस बैलका जोत' करदें, मुझे किसी अयोग्य पुरुषके हवाले करके 'कव्वेके गलेमें हंस' बांधदें तब भी तो मेराही अकाज है क्योंकि रत्नकी परीक्षा जौहरीही करसकता है दूसरा नहीं। कहा है कि:–

---

* यह ऐतिहासिक घटना है।

सोरठा—एक लघू सोनार, जानत मूल्य सुवर्णको ।
नहीं चतुर कुम्हार, पहचानत तेहि तनकहू ॥
दोहा—कैसहु चतुर लोहार हो, कैसहु हो मतिधीर ।
पर नहिं जानत भेद वह, हीरा है कि पथीर ॥

मैं वीर पिताकी पुत्री हूं और वीर घरानेमेंही मैंने जन्म लिया है। यदि किसी कायर वरके हाथमें मुझको सौंप दियाजाय तो बड़ा अनर्थ होजाय। क्या करूं कुछ बुद्धि काम नहीं देती। इधर काम सता रहा है और उधर योग्य वर नहीं मिलता। इस समय मेरी वही दशा होरही है जो सरोतेके बीचमें पड़नेसे सुपारीकी होती है। हे परमेश्वर! अब तूही मेरी, मेरे धर्मकी रक्षा करनेवाला है।"

इधर जिस, समय यह बाला इस तरहके शोकसागरकी प्रचंड लहरोंमें गोते माररही थी उसी मकानके दूसरे भागमें दो स्त्री पुरुष बैठे हुए पावसराजकी सभाके आनंदको देख २ कर मग्न होरहे थे। उनमेंसे पुरुषने कहा "प्यारी! देखो कैसी बहार होरही है। उस सृष्टिकर्त्ताकी भी कैसी लीला है कि दो सप्ताह पूर्व जिस भूमिको देखनेसे प्रचण्ड वायु द्वारा दो चार पैसेभर धूल मुँह और कान नाकमें गये बिना नहीं रहती थी और जिसको देखनेसे भयसा लगता था आज वही आनन्ददे रही है।"

स्त्री—"स्वामी!आपका कहना सत्य है।इस हरियालीको देखकर चित्त प्रफुल्लित होता है और प्रत्येक जीवधारीके हृदयमें काम उत्तेजित होता है, परन्तु यह तो कहिये कि आपने दीपाके विवाहका क्या विचार किया? उसका कन्याकाल निकलगया और हम विवाह न कर बड़ा अनर्थ कररहे हैं। जरा धर्मका तो विचार कीजिये।"

पुरुष—"विचार क्या किया?वरकी तलाश कररहा हूं; परन्तु कोई योग्य पुरुष दृष्टिमें नहीं आता।"

स्त्री—"ठीक है; परन्तु अब वह बालक नहीं है।आप जानते हैं कि समय बड़ा नाजुक है। चारों ओर यवनोंके झुंड घूमते हैं। जिसको देखते हैं उसीको छीन लेते हैं और ऐसा न हो तब भी तो अब उसका विवाह न करनेसे हमारा धर्म नष्ट होरहा है।"

पुरुष—"हाँ प्यारी! मैं सब जानता हूं कि हम धर्मशास्त्रके विरुद्ध काम कररहे हैं; परन्तु करूँ क्या? हमारी दीपा सुंदरी है, पढ़ी लिखी है और वीर भी है, घोड़े पर चढ़ना और शस्त्र चलाना अच्छी तरह जानती है। ऐसी कन्या योग्य वरको ही देना चाहिये।"

स्त्री—"यों तो 'कन्या और गाय, भेजै तहां जाय' परन्तु जब एक पैसेकी हंडियाही अच्छी तरहसे ठोंक बजाकर लीजाती है तब वर पसन्द करनेमें तो पूरी सावधानी रखनाही चाहिये।"

पुरुष-"परमात्माकी कृपासे हमारा निंबालकर घरानाप्रसिद्ध है कई ग्रामोंमें एक तरहसे हमारा राज्य सा है, यवन बादशाहके घरमें हमारा मानभी है और द्रव्य भी हमारे पास है; फिर यदि वर गरीब भी हो, तो कुछ चिंता नहीं; परन्तु वह होना चाहिये गुणी, वीर और पराक्रमी क्योंकि आज कल 'जिसकी लाठी तिसकी भैंस' है। पराक्रमी मनुष्यही इस यवनशाहीमें सुखसे रह सकता है।"

स्त्री-"प्राणनाथ! आपका कहना यथार्थ है। एक वर मेरी दृष्टिमें आया है। यद्यपि हमने उसको देखा नहीं है; परन्तु उसके वीरत्व, पराक्रम और गुणोंकी प्रशंसा चारों ओर फैलरही है। बाबजी रावका लड़का मालोजी भोंसला इस कामके लिये अत्युत्तम है।"

पुरुष-"वाह वा प्यारी! अच्छी याद दिलाई। वास्तवमें वह हमारी दीपाके लिये योग्य वर है। शास्त्रकारोंने वरके जो गुण लिखे हैं उसमें सब विद्यमान हैं। अच्छा तो मैं कलसेही उसका देखनेका यत्न करता हूँ। "पानी पीना छानकर बेटीदेना जान कर" एक बार उसको अपनी दृष्टिसे देखलें तो फिर उससे दीपाका पाणिग्रहण करादें।"

पाठको! ऊपरके संवादसे आपने भलीभाँति जान लिया होगा कि हमारी उस शोकसागरमें गोते लेती हुई युवतीका नाम दीपा है जिसका वर्णन आप ऊपर पढ़ चुके हैं।

प्रकरण ६.
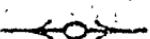
आफतमें भाई बहन।

दाक्षिणमें शिंगणापुर नामक एक स्थान है। वहाँ एक ऊँचे पर्वतके शिखरपर महादेवका मन्दिर है। पर्वतके चरणोंको स्पर्श करती हुई एक छोटीसी नदी बहती है जिसका थोड़ा परन्तु जोरसे बहता हुआ पानी पत्थरोंपर टकरा २ कर नये आनेवाले मनुष्योंके चित्तको अपनी ओर आकर्षित करता है। पानी भी उसका ऐसा मीठा और ठंडा है कि मानो परमात्माने गरीबोंकी तृषा मिटानेके लिये नदी के नीचे बर्फका कारखाना खोलरक्खा है। कैलासवासी शंभुके मन्दिरके चारों ओर ऊँचे २ वृक्षोंकी ऐसी कुँज लगी है जिसमें सूर्य भगवान्‌की तीव्र किरणोंको भी प्रातः कालसे सायंकाल तक कठिन परिश्रम करनेपर ठीक मध्यान्हके समय दश पाँच मिनटके लिये प्रवेश करनेका अवसर मिलता है। कहीं सिंहकी दहाड़, कहीं शेरकी गरज और कहीं भालूकी घरघराहट औरभी हृदयको फाड़े डालती है। केवल इतनाही नहीं वरन भोले भंडारी आक अहारी, स्मशानवासी दुःख वि-

नाशी, भक्तहितकारी पापपुंजहारी, भंगेड़ी, गँजेड़ी बूढ़े बाबाके पवित्र मंदिरतक पहुँचनेके लिये कमसेकम १०।१२मीलकी चढ़ाई तय करनी पड़ती है तब उस सदानन्द महादेवके दर्शन मिल सकते हैं। यों तो बाहरसे चारोंओर दृष्टि डालनेपर ऊँचे २ वृक्षोंके अतिरिक्त कुछभी दिखाई नहीं देता और बड़ा भयानक बन प्रतीत होता है; परन्तु भीतर घुसनेपर प्रत्यक्ष कैलास आंखोंके आगे आजाता है और फिर वहाँसे हटनेकी इच्छा नहीं होती। चित्तमें यही आता है कि संसारी मायाजालको छोड़कर यहीं सदाशिवकी सेवामें लीन होजाना चाहिये।

जिस समयका मैं वर्णन कररहा हूँ, इन महादेवकी वहाँपर बड़ी धाम थी। उदयपुरमें जैसे एकलिंगनाथका मन्दिर क्षत्रियोंके लिये परमपूज्य स्थान है वैसे ही दाक्षिणमें यह शिंगणापुरका मान्दिर था। दाक्षिणके लोग पचास २ और सौ २ मीलसे इस स्थानपर दर्शनोंके लिये आया करते थे। चैत्र शुक्ला ५ से १५ तक यहाँपर बड़ा मेला लगता था जिसमें सैकड़ों नहीं हजारों मनुष्य एकत्रित होते थे। कोई पुरुष मान प्राप्त करनेके लिये महादेवसे प्रार्थना करते थे, कोई धनवान् बननेकी इच्छा रखते थे, कोई यवनोंके अत्याचारसे बचनेके लिये प्रार्थी होते थे और कोई व्यापारमें लाभ कमानेके उत्सुक होते थे। अपुत्रा स्त्रियाँ पुत्र माँगनेको आती थीं और पुत्रवती पुत्रवधू माँगनेको। लक्ष्मीके लाल यहाँपर सैर करनेको आते थे और चोर, उठाईगीर, गँठकटे अपनी २ ताकमें। तात्पर्य यह कि सबही प्रकारके मनुष्य इस स्थानपर एकत्रित होते थे और अपना २ अभीष्ट पूरा करते थे। व्यापारभी वहाँपर बहुत होता था। गाय, बैल, भैंस, घोड़े आदि जीवोंकी वहाँपर बड़ी बिक्री होती थी और हलवाई, बजाज, बिसाती, तम्बोली, आदि लोगोंकी दूकानें भी बहुत लग जाती थीं। इस तरहपर थोड़े दिनके लिये उस जगह जंगलमें मंगल होजाता था। इसीके साथ वहाँ खेल तमाशे भी कई प्रकारके लगते थे और पहलवानों तथा कुश्तीबाजोंके एक दो अखाड़े भी वहाँ पर पहुँच जाते थे।

चैत्रका महीना है, गरमी अपनारूप धारण करती जाती है, प्रातः और सायंकालको ठंडी हवा चलती है, परन्तु मध्याह्न कालकी उष्णता शनैः २ अपना बल बढ़ाती जाती है। वृक्षोंके पुराने पत्ते गिररहे हैं और उनके बदलेमें नये २ कोमल पत्ते आसन ग्रहण करते जाते हैं। आज चैत्र शुक्ला प्रतिपदा है। शिंगणापुरकी यात्राका आरम्भ होगया है। यात्रियोंके झुंडके झुंड जारहे हैं; किसी झुंडमेंसे "महादेवबाबाकी जय" किसीमेंसे "बोलो भाई कैलासवासीनी जय" और किसीमेंसे "शम्भु महादेवांची जय" की आनन्दध्वनि निकलती जाती है। कहीं साधु महात्माओं और सन्यासियोंकी मण्डली जारही है, कहीं किसानोंके झुंड नाचते गाते और अलगोजे बजाते जारहे हैं और कहीं स्त्रियाँ अपने बच्चोंको टोकरेमें रखकर शिरपर लिये हुए और कोई पीठपर बांधे हुए जारही हैं। ऐसे

समयमें एक १४ वर्षका लड़का और उससे दो वर्षके लगभग कम अवस्थाकी एक लड़की भी जारही है । दोनोंका चेहरा मोहरा देखनेसे मालूम होता है कि वे कदाचित् भाई वहन हैं । यद्यपि इस समय दोनों टूटी हालतमें हैं, कपड़े भी साबित नहीं हैं और न कोई और वस्तु उनके पास है; परन्तु जो आँखें देखतेही हजार रुपयोंके ढेरमेंसे खोटे खरेको पहचान लेनेकी शक्ति रखती हैं वेही आँखें इस बातको कहे देती हैं कि ये दोनों लड़के,लड़की किसी अमीर और धनवानकी सन्तान है । यद्यपि इस समय लड़केके पास कोई शस्त्र नहीं है परन्तु उसके चेहरेको देखनेसे उसकी हृदय स्थित वीरताका भास होता है । यद्यपि मार्ग-श्रम और उड़ती हुई धूलने उस कन्याके मुखचन्द्रको छिपानेमें कसर नहीं रक्खी है; परन्तु "चञ्चल नैन छिपैं न छिपाये" के अनुसार उसका रूप छिपता नहीं है । श्रमसे बहती हुई पसीनेकी धाराने जगह २ पर उसके मुखको धोकर भीतरी गौर वर्णको प्रकट कर दिया है । खैर !

चलते २ दोनोंही ऐसे थकित होगये हैं कि एक कदम भी आगे बढ़ानेकी किसीमें शक्ति नहीं है; परन्तु जिसमें भी कन्याके पैरोंने तो बिलकुल जबावही दे दिया है । वह बहुतही यत्न करती है कि दो चार कदम आगे बढ़े; परन्तु पैरोंके आगे कुछ वश नहीं चलता । साथही भाईके अप्रसन्न होने और मार्गमें शत्रुका भयहोनेसे बिचारी जल्दी २ चलनेका यत्न करती है और दशबीस कदम उठाती भी है; परन्तु फिर थककर गिरजाती है । इसी तरह गिरते पड़ते वे कुछ दूर गये कि कन्याके पैरमें एक पत्थरकी ऐसी चोट लगी जिससे वह "अरी मा!" कहकर पृथ्वीपर गिरपड़ी और घावसे रक्त बहने लगा । लड़केने जैसेतैसे उस घावपर मट्टी डालडूलकर रक्तका प्रवाह कुछ कम करनेका यत्न किया और कहा "बहन ! मतघबड़ा ! अभी अच्छा हो जायगा । इस अगले ग्राममें जाकर इसपर पट्टी बाँधदेंगे । थोड़ी और हिम्मत कर तो हम बस्तीमें पहुँच जायँ ।"

कन्याने उत्तर दिया "अरे भाई ! मैं क्या करूँ!मेरा तो पैरही नहीं उठता;मैं बहुतही यत्न करती हूँ; परन्तु वश नहीं चलता।यह देखतो सही कैसा घाव लगा है।"

भाई-"हाँ बहन ! मैं जानता हूँ परन्तु यहाँ विदेशमें हमारा कौन सहायक है ।'घरकी जाली बनगई औ बहूँपर लागी आग' वाली दशा इस समय हमारी होरही है । और तोहै सोही है परन्तु यवनोंका बड़ा भय है ।"

"हाँ भाई ! हम अभागे हैं । हमने न जाने कितने पाप किये हैं जिनका बदला भोगते हैं । विधाताने न जाने अभी हमारे ललाटमें क्या २ लिखा है । अच्छा चल ! रस्ता तो काटेहीसे कटैगा ।" इतना कहकर ज्योंही वह कन्या खड़ी हुई कि उसकी आँखोंके आगे अँधेरा छा गया और "अरे भाई" कहती २ वह फिर भूमिपर गिरपड़ी ।

"मरेको मारे शाह मदार" वाली कहावत चरितार्थ होगई। इधर कन्याकी यह दशा थी उधर एक कालासा युवा मुसलमान सिपाही उनके पास जाखड़ा हुआ और बोला "तुम्हारा नाम क्या है और तुम किधर जाते हो!"

लड़का-"मेरा नाम है सम्भाजी!हम शम्भुके दर्शनोंको सिंगणापुर जाते हैं।"

मुसल०-"वह पहाड़ तो बड़ा ऊंचा है। तुम कैसे चढ़ोगे?"

सम्भाजी-"हम धीरे २ चढ़ जायँगे।"

मुसल०-"हम ऐसा कहते हैं कि तुम नहीं चढ़ सकोगे। हमारे साथ तुम चलोगे तो हम तुम्हें मदद देंगे।"

संभाजी-"नहीं साहब। हमको आपकी सहायताकी कुछ आवश्यकता नहीं है। आपश्रम न कीजिये। हम अपने आप चले जायँगे"!

मुसल०-"क्या तुम्हारे मा बाप नहीं है जो तुम अकेले आये हो"?

संभाजी-"महादेव हमारे पिता और पार्वती हमारी माता हैं; हम उनहीके दर्शनोंको जाते हैं। वह हमारी रक्षा सर्वत्र करेंगे! उनहीके भरोसे हम आये हैं और वही हमारी सहायता करेंगे।

मुसल०-" चाहे कुछ हो, मगर हम तुझको जाने नहीं देंगे। तू इस परीजाद चाँदके टुकड़े और हूरके बच्चेको कहाँ उड़ाकर लिये जाता है?"

संभाजीने डपटकर उत्तर दिया "यह मेरी बहन रमा है और मैं इसका भाई हूं।यात्राके लिये जाते हैं। आप यह न समझना कि हम अकेले हैं जिसके दर्शनों के लिये हम जाते हैं वही हमारे साथ लट्ठ लिये चलता है।"

"अच्छा बता तेरा महादेव कहाँ है?" इतना कहकर ज्योंही उस मुसल्मानने सीटी बजाई पाँच चार शस्त्रधारी मुसलमान एक साथ झाड़ियोंमेंसे निकल पड़े और लगे पुकारने "पकड़ो २!, जाने न पावै!, देखो शिकार निकल न जाय"। अब तो दोनों भाई बहन घबड़ाये और लगे अपने इष्टदेवका स्मरण करने। इतनेहीमें सब सिपाहियोंने संभाजीको घेर लिया; परन्तु उसने भी अपनी लम्बी लाठीको इस तरहपर जोरसे चारोंओर घुमाया कि किसीके शिरमें लगी, किसीके नाकपर लगी और किसीकी आँखोंमें आघात पहुँचा जिससे वे लोग थोड़ी देरके लिये उसका सामना करना भूलगये और अपने २ दुःखको रोने लगे। इधर अवसर पाकर रमा भी भाग निकली और संभाजी भी पीछेसे दौड़ा; परन्तु ये दोनों भाई बहन प्रथमहीसे थके हुए थे दौड़ कैसे सकते। कुछही कदम आगे बढ़े थे कि" काफिर जाता है मारो सालेको" कहते २ वेही सिपाही फिर उनकी ओर दौड़े। संभाजीने भी गोफनमें रखकर ढेले ऐसे जोरसे मारे कि फिर एक बार मुसल्मान चक्कर खागये;परन्तु अकेला लड़का करही क्या सकता था। उनमेंसे एकने दौड़कर रमाको पकड़ लिया और कहा "प्यारी जान! क्यों भागी जाती हो? मेरे साथ चलो। मैं तुमको अपनी बीबी बनाकर बड़े मौजके साथ

रक्खूंगा" । "चल दूर हट ! मुझको बीवी नहीं बनना" इतना कहकर ज्योंही रमाने झटका देकर अपना हाथ छुड़ाया और भागनेका डौल किया कि वह भूमि पर गिरपड़ी । इतनेपर भी उस दुष्ट को दया न आई । उसने उस दीन अबलाको हाथ पैर बाँधकर डालदिया । इधर संभाजीके हाथसे घायल हुए सिपाही बड़े लज्जित हुए और क्रोधके आवेशमें आकर अपनी २ तलवारें निकाल उसपर टूट पड़े । जहाँतक बनपड़ा संभाजीने केवल एक लाठीहीसे शत्रुओंकी तलवारोंके वारसे अपनेको बचाया और उनमेंसे एक दो को ऐसा घायल किया कि वहीं पर उनको कब्रकी शरण लेनी पड़ी;परन्तु अन्तमें एक तलवार उसके ऐसी लगी कि जिससे संभाजीको भूमिपर पड़जाना पड़ा । पड़ते२उसने चिल्लाकर कहा"दौड़ो२ जो किसीमें दया और पुरुषार्थ हो तो दो निर्दोष जीवोंका प्राण बचाओ । दुष्ट मारे डालते हैं..." । इतना कहते २ संभाजी बेहोश होगया ।

इधर अपने एक मात्र सहायक, अपने माके जाये एक मात्र भाईकी यह दशा देखकर रमाके शोककी सीमा न रही । वह चिल्लाकर रोने और गालियों की वर्षासे भाईका बदला लेने लगी । अबला स्त्रियोंके पास रोने और गाली देनेके सिवाय शत्रुका सामना करनेका और यत्नही क्या है । दुःखी रमासे भाईका वियोग न सहागया और उसने भी अपना शिर पत्थरपर देमारा जिससे वह भी मूर्च्छित होगई ।

प्रकरण ७.

परदुःख भंजन मालोजी ।

हिन्दुओंके कभी २ दुःख और कष्ट उठानेका कारण हमारा धर्माग्रह भी होता है । रमा जब केवल १२ वर्षकी लड़की थी और कुवारी थी तब ऐसी दशामें वह उन मुसल्मानोंका कहना स्वीकार करके उनके साथ चली जाती तो उसका बिगड़ताही क्या था । क्या वे मनुष्य नहीं थे जो उनका कहना स्वीकार न कर उसने अपने और अपने भाईके प्राणोंको भयमें डाल दिया ? परन्तु चली कैसे जाती ? जब उसका मन और विचार जानेकी आज्ञा देता तबही तो वह यवनोंके साथ जा सकती थी । हम हिन्दू लोगोंमें जबसे कन्या गर्भमें आती है तबहीसे उसके हृदयमें पातिव्रत, स्वधर्म और कुलाभिमानकी रक्षाके पवित्र आग्रहका अंकुर जम जाता है और वह उसके साथ२ बड़ा होते २ आगे जाकर इतना प्रबल होजाता है कि अपने विरुद्ध भूलकर भी उस कन्याको और बड़ा होनेपर उस स्त्रीको नहीं चलने देता है । इसी धर्माग्रहने रमाको प्राण देनेपर कटिबद्ध कर दिया और यवनोंकी मीठी २ बातों तथा लालचका उसके हृदयपर किञ्चितमात्र भी असर न पड़ने दिया । और पड़े भी कैसे ? जो गुण दादी, नानी तथा मातासे वारसेमें मिलता है वह क्षणभरमें नष्ट भी तो नहीं होसकता है ?

एक ओर जब रमा और सम्भाजी दोनों मूर्छित होकर पड़े हैं तो दूसरी ओर मुसल्मान सिपाहियोंमें झगड़ेका आरम्भ होरहा है । काले खां कहता है "इसे मैं लूँगा" । मुहम्मदबख्श कहता है "वाहजी तुम कैसे लोगे ? क्या हमने मिहनत नहीं की है ?" इतने हीमें बहादुरबेग कहता है "सुनो भाई । तुम दोनोंके पासतो बीबियाँ हैं मगर मैं अकेला हूँ यह प ीतो मेरेही लायक है । देखो तो मैं कैसा खूबसूरत हूँ । और तो क्या मगर मेरी मूँछैंही कैसी बाँकी हैं जिनपर नींबू ठहर सकते हैं । यह नाजनी मेरे लायक है और वह भी मुझकोही पसंद करेगी " । इतनेहीमें पहला कहता है क्या तुमही खूबसूरत हो हम नहीं हैं ? क्या हमारे एक आंख होनेहीसेहम खूबसूरत नहीं हैं?क्या तुमने नहीं सुना है कि बनावटी आँखें मिलती हैं? बस एक आँख लगा लेंगे"।दूसरा कहता है"क्या खूब । आँखतो नई लगा लोगे मगर नाक कहाँ जायगा नाक ? खूबसूरत तो बनने चले हो मगर यह तो सबसे आगेही रहेगा"। पहला कहता है "नाकमें क्या नुक्सहै?फोड़ा हुआ था जिस में कुछ हिस्सा गलगया है । मिलैगा तो उसपर भी ताँबेका नाक लगालेंगे; मगर याद रक्खो यह परीजाद तुमको नहीं लेनेदंगे ।" "कैसे नहीं लेनेदोगे ? क्या तुमही आदमी हो हम आदमी नहीं हैं ? याद रक्खो ! हम मारेंगे और मरेंगे मगर तुमको नहीं लेनेदेंगे" तीसरेने डपटकर कहा । एकने कहा "चुप रहो । बकवाद मत करो" । दूसरेने कहा "खबरदार कुछ मुँहसे निकाला है तो । चुप २ " । तीसरे ने कहा "चुप ! चुप !! चुप !!!" इसी तरह "चुप २ " होते हुए बात बढ़ गई और हाथापाईपर नौबत पहुँच गई । कोई घूँसा मारता है, कोई लात मारता है और कोई अपने प्रतिद्वंद्वीकी दाढ़ी पकड़कर खींचता है; परन्तु बीच २ में प्रत्येक मनुष्य उनमेंसे झुक २ कर मूर्च्छित पड़ी हुई रमाकी ओर देखता जाता है कि कहीं ऐसा न हो कि हमतो लड़नेमें रहें और "खोदतरे चूहे मरे, कीन्हो अमल भुजङ्ग"की कहावतके अनुसार कोई चौथा मनुष्य आकर उसे उठा ले जाय । ठीक भी तो है "बाराती ब्याह ले जाय, दूल्हा मुँह ताकता रहजाय" तो इसमें आश्चर्यही क्या है क्योंकि उस समयमें तो 'जारू और जमीन" जोरावर की थी ।

पाठको ! ईश्वरजो कुछ करता है सब अच्छेहीके लिये । इनको इसी तरह लड़ने दीजिये क्योंकि जितनी देरतक इनकी मारपीट और लड़ाई अधिक ठहरैगी उतनाही रमाके लिये अच्छा है परन्तु अब जरा उसकी दशा भी तो देखनी चाहिये । कुछ देरमें जब रमाकी मूर्च्छा जागी तो अपने हाथ पैर बँधे हुए देखकर वह बहुत घबड़ाई और भाईको याद करके रोने लगी। सिसकियाँ भरते २ रमाने कहा "हा राम ! अब मेरा क्या होगा । मा बाप तो पहलेही चलचुके थे केवल एक भाई था वहभी नहीं रहा; अब इस अनाथ बालिकाकी रक्षा करने वाला कौन है। अरी मा ! तू कहाँ गई ? अपनी प्यारी पुत्रीको क्यों नहीं साथ लेगई ? तू जिसकी शरणमें मुझको रखगई थी वह भी आज दुष्टोंके हाथसे निर्जीव होकर भूमिपर पड़ा है । हा बाप ! तुमही अपनी लड़कीको बचाओ । अरे

भाई ! क्या तुमको अपनी इस दीन बहनपर दया नहीं आती ? मा बाप मुझको तुम्हारे भरोसे छोड़गये थे परन्तु तुमने भी मुझको निराधार कर दिया इस पापिन बहनका साथ नहीं दिया । अरे ! अब मैं जीकर क्या करूँगी ? यह देखो मेरे शिरमेंसे रक्त बहरहा है, आँखोंके आगे अंधकार छागया है;परन्तु पापी प्राण निकलते नहीं हैं । नहीं मालूम अभी क्या २ पाप भोगने लिखे हैं । हे माता पृथ्वी ! तुमही रक्षा करो ! मुझको अपने पेटमें जगह दो तो मैं दुःखसे छूटूँ । जिस समय जगन्माता सीताजी दुःखी हुई थीं तो तुमनेही उनको अपनी गोदमें लिया था; परन्तु ठीक है । मैं पापिनी हूँ मुझको तुमभी नहीं बचासकती "। इसी तरह विलाप करते और रोते २ रमाको फिर भी मूर्च्छा आगई; परन्तु जबतक आयु पूरी नहीं होती हजार दुःख और विपत्ति सहनेपर और लाख उपाय करनेपर भी प्राण नहीं निकलता । थोड़ी देरमें फिर वह सचेत हुई और रोते २ यह पद गाने लगीः—

"द्रोपदि धार्‌यो ध्यान जबहिं मन आतुर होइ।तुम बिन श्रीनन्दलाल और मेरो नहिं कोई ॥ बूड़ति हौं दुखसिन्धुमें, शरण द्वारकानाथ । त्राहि त्राहि सुध लीजिये, अब मैं भई अनाथ ॥ हाय हाय यदुनाथ हाय गोबर्द्धनधारी । हाय हाय बलवीर हाय श्रीकुंज विहारी ॥ हाय हाय राधारमण, हा श्रीकृष्णमुरार । हाय हाय रक्षा करो, श्रीब्रजराज दुलार ॥ शरन शरन सुखधाम शरन दुख भंजन स्वामी । शरन शरन रछपाल शरन प्रभु अन्तर्यामी॥शरन परी मैं हारके, शरणागत प्रतिपाल । लज्जाराखोदासिकी,दीनानाथ दयाल ॥ भीरपरी प्रह्लादरूप नरसिंह बनायो ।गजने करी पुकार,पायप्यादे उठि धायो ॥ दुर्वासा अम्बरीषहित, निजजन करी सहाय।कौन अवज्ञा दासिकी, विलमकरी यदुराय ॥ युग युग भक्त सहाय पैज तिनकी तुम राखी । सबही कहत पुराण वेद स्मृति मुनि साखी ॥ मैं तो दासी चरणकी, जानत सब संसार विरद आपनो जानके, लज्जाराख मुरार ॥ अन्तरयामी श्याम बेर इतनी क्यों लाई । कापे करूं पुकार मोहि तुम देहु बताई । तुम माता,तुम पिता तुम, बान्धव सुहृद सुवीर । तुम बिन मेरो कौन है, जाहि सुनाऊं पीर ॥ नगर द्वारका माहि सार खेलत गिरिधारी । जानी श्रीबलवीर दीन होइ दासि पुकारी। नयन रहे जल पूरके,, पासा डार अनन्त । पचहारी सेना सकल, चीर न आयो अन्त॥ नग्न न होई द्रोपदी, रक्षा करी मुरार। पुष्पदेव वर्षाकरी, जय जय शब्द उचार ॥"

इधर जब सम्भाजीकी मूर्च्छा जागी तो वहभी विलाप करने लगा और रो रोकर चिल्लाने लगा " अरे भगवान् ! यह तूने क्या किया ? मेरी भोलीभाली बहनको कहाँ भेज दिया ? हाय मेरे बिना उसकी क्या दशा होती होगी ? माता पिता विहीन रमा एक मुझकोही देखकर अपने दिन निकालती थी सो दुष्टोंके पंजेमें पड़कर न जाने कहाँ गई होगी । हाय २ धिक्कार है मुझको ! मैं उनकी भी रक्षा न कर सका । अब परमात्माके आगे मैं क्या उत्तर दूंगा

मैं तो अब अपने क्षत्रिय भाइयोंमें मुँह दिखाने योग्य भी न रहा । हा दुर्भाग्य कायर प्राण ! तू अब भी इस देहमें क्यों फँसा है ? निकल २ दुष्ट ! इसी समय निकलजा ! क्यों मेरे मुँहपर स्याही लगाता है । बस अब मैं तुझको नहीं रखना चाहता । पापी ! अधम ! इसी क्षण चलाजा" ।

इतना कहकर सम्भाजीने एक पछाड़ ऐसे जोरसे खाई कि फिर वह अचेत होगया और थोड़े समयके लिये चित्तकी व्यथाने उसका पिण्डा छोड़ दिया; परन्तु यह दशा अधिक समयतक न रही । कुछही मिनटमें फिर उसकी मूर्च्छा जागी और वह कहने लगा "अरे मूर्ख सम्भू ! यह समय रोनेका नहीं है । रोनेसे कुछ काम नहीं चल सकता । विपत्तिके समय तो इष्टदेव परमात्माकाही स्मरण करनेसे भला होता है। हमारे हरि बड़े कृपालु हैं वेही इस समय हमारी रक्षा करनेवाले हैं। अरे मन ! तू भूलता क्यों है ? जिसके दर्शनोंके लिये आज सैकड़ों मनुष्य जारहे हैं उसहीकी सेवामें हम भी जाते हैं फिर वह क्या हमारी रक्षा नहीं करेगा ? नहीं २ अवश्य करेगा । इतना कहकर उसने यह कवित्त पढ़ाः—

"गिरिको उठाय ब्रजगोपको वचाय लियो, अनलतें उवार्यो पुनि बालक मंजारीको । गजकी अरज सुन ग्राहते छुटाय लीनो, राख्यो व्रतनेम धर्म पांडवकी नारीको ॥ राख्यो गजघंटतर बालक विहंगनको, राख्यो पन भारतमें भीष्म ब्रह्मचारीको । त्रिविध ताप हारी निज भक्तन सुखकारी एक, मोहिं तो भरोसो भारी ऐसे गिरिधारीको ।"

इसमें सन्देह नहीं है कि परमेश्वर अपने भक्तोंकी रक्षा करनेके लिये सदा तत्पर रहता है; परन्तु करता तवही है जब पूरी परीक्षा करलेता है । इन दोनों भाई बहनोंका आर्त्तनाद सुनतेही उस दयामय जगत्‌रक्षकको अपनी निःसहाय सन्तानकी रक्षा करनेके लिये तत्क्षण एक वीर युवाको भेजनाही पड़ा । सम्भाजीने गिरते २ जो आर्त्त स्वरसे चिल्लाकर कहा था कि "दौड़ो २ जो किसीमें दया और पुरुषार्थ हो तो निर्दोष दो जीवोंका प्राण बचाओ" वे शब्द एक बहुत दूरसे आते हुए युवाके कानमें पहुँचे और दैवप्रेरित वह उसी समय हाथमें लट्ठ लिये अपने साथियोंको पीछे छोड़कर दौड़ा । ज्योंही वह पास आया तो क्या देखता है कि एक कन्या पड़ी हुई रोरही है और हाथ पैर उसके बँधे हुए हैं । कुछ दूरपर एक युवा अलग हो रोरहा है और कुछ मुसलमान आपसमें लड़रहे हैं । ऐसा हृदयविदारक दृश्य देखतेही उस युवाने इसका आशय समझ लिया और हृदय उसका क्रोधाग्निसे जलने लगा । उस समय क्रोधके मारे उसकी आंखोंमेंसे रक्त टपका पड़ता था, हाथ पैर कांपते थे और वह मानो बिलकुल नृसिंहावतारही धारण किये हुए था । भक्त प्रह्लादको सतानेपर भगवानने जैसे दुष्ट हिरण्यकश्यपको वध करनेके लिये अकस्मात रूप धारण किया था वैसेही वह लट्ठधारी युवा अचानक वहाँ जा खड़ा हुआ जिसको देखकर मुसलमानोंके छक्के छूट गये और लगे वे अपने २ शस्त्र ढूंढने; परन्तु उनके सचेत

होनेसे पूर्वही उस युवाने कड़ककर कहा " अब होशियार हो जाओ और अपने प्राणोंका मोह छोड़ दो ! दुष्टो ! तुमने असहाय और दो दीन प्राणियोंको कष्ट दिया है। इसका फल अभी तुमको मिलता है। लो सँभालो !" और अपना कानतक पहुँचनेवाला लम्बा लट्ठ इस जोरसे घुमाया कि उनमेंसे दो तो चक्कर खाकर भूमिपर गिरपड़े और एक रहगया; परन्तु उसकी सीटी सुनतेही ८।१० मुसल्मान सिपाही तलवारें निकाल २ कर उस युवापर टूट पड़े । युवाभी पूरा वीर और पहलवान था और उसके हाथसे मालूम होता था कि उसको पटावाजी का पूरा अभ्यास था। बस दस चमकती हुई तलवारोंके बीचमें घिरजाने पर भी उसने ऐसी चालाकीसे अपसे लट्ठसे काम लिया और इस सफाईसे हाथ मारे कि एकभी तलवार उसके पासतक न पहुँच सकी और लट्ठही लट्ठसे उसने सबकी खबर ले डाली । सिपाहियोंने भी वीरता दिखानेमें कमी नहीं की, बहुतही "काटो २ मारो २" की चिल्लाहट मचाई परन्तु न जाने उस युवाके लट्ठमें क्या करामात थी जिसके आगे बिचारे "या अल्लाह मारडाला!" "ऐ खुदा ! अब तूही मालिक है ! " "खुदा हाफिज ! जान बचा" की चिल्लाहट मचानेके सिवाय और कुछभी न करसके । इस तरह पर उस युवाने किसीको कम और किसीको अधिक घायल करके सबको निर्जीवसा कर दिया और उनके शस्त्र छीन लिये ।

प्रकरण ८.
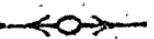
संभाजीकी आत्म कहानी ।

पाठकवृंद ! आप लोगोंको इस बातके जाननेकी बड़ी उत्कंठा होगी कि यह वीर पुरुष कौन था जिसने अपना साथ छोड़ा, भाई और बन्धु छोड़े, मित्र और पड़ोसी छोड़े,जो सवारी छोड़कर धूपमें दौड़ा और जिसने अपने प्राणकी कुछ परवाह न कर उन दोनों अनाथ अपरिचित बालकोंकी दुष्ट यवनोंके हाथसे रक्षा की परन्तु थोड़ी देर ठहरिये तो कुछ दूर जाकर आपको उसका परिचय मिल जायगा ।

दुष्ट यवनोंसे जिस समय उस वीरकी मारामारी और काटाकाटी होरही थी, एक ओर सम्भाजी और दूसरी ओर पड़ी हुई रमा मनही मनमें विचारती थी कि यह युवा कौन है जो हमारे लिये इतना कष्ट उठारहा है और साथमें उसकी जयकामनाके लिये परमात्मासे प्रार्थना भी करती थी। ज्योंही सिपाहियोंके हाथ पैर ढीले हुए और वे अपने शस्त्र डालकर शरणागत हुए कि वह वीर तुरन्त सम्भाजीके पास जाकर बोला "भाई घबड़ाना नहीं ! अब कोई तुम्हारा बालभी बांका नहीं करसकता।चलो उस दीन कन्याकी भी तो खबर लें"। यद्यपि इस समय सम्भाजीमें इतनी भी शक्ति नहीं थी कि वह एक पैर उठा सकता; परन्तु जैसे तैसे उठकर लकड़ीके बल उस युवाकी सहायतासे वह अपनी बहन रमाके पास पहुँचा और उसके हाथ पैर खोलकर उसको बन्धमुक्त किया ।

इस समय तीनोंकी दशा बड़ीही विचित्र थी। यवनोंके हाथसे लगे हुए घावोंकी पीड़ा, थकावटके श्रम, नैराश्यकी अंतिम सीढ़ीपर पहुँच चुकने उपरांत भाई बहनके परस्पर मिलनेके आनन्द और सर्वोपरि उस प्राणदाता युवाके उपकारने दोनों भाई बहनको इतना दबा दिया था कि इच्छा होनेपरभी मुखसे एक शब्द नहीं निकलता था। इधर वह वीर भी दोनोंकी दीनदशा और उनके कृतज्ञतापूर्ण नेत्र देखकर मुग्ध होगया था। पाँच मिनट तक इसी तरह तीनोंजन अवाक् रहे। जिस तरह सूमके हाथसे पैसा नहीं निकल सकता है वैसेही इनकी जवानसे शब्द न निकलने पाया और तीनों पत्थरकी मूर्त्तियाँसी बनगये। अंतमें उस वीरनेही अपने मनको संभालकर चुप्पी खोली और कहा—" आजका दिन बड़ाही अच्छा है कि महादेवबाबाने तुम दोनोंके प्राण बचाये"।

अबतो संभाजी को भी उत्तर देनाही पड़ा। वह हाथ जोड़कर उस वीरके पैरोंमें गिरपड़ा और बोला—" आपहीकी दयासे हम दोनों भाई बहनके प्राण बचे हैं। यदि आप न आते तो न जाने हमारी क्या दशा होती। आपने जो उपकार हम दोनोंपर किया है उसको प्रकट करनेके लिये मुझे शब्द नहीं मिलते। ईश्वर आपको चिरायु करै। यही मेरी उससे हाथ जोडकर प्रार्थना है"।

अब तक रमा भी नीचा मुँह किये बैठी थी। प्रथम तो श्रमहीसे वह ऐसी थकगई थी कि उसके मुखसे बोल नहीं निकलता था और फिर एक नये अपरिचित मनुष्यसे बात करना हिन्दू स्त्रीके लिये परमकठिन और लज्जाकी बात है। इसी कारणसे अबतक रमाका कण्ठावरोध होरहा था। अब उसने भी सम्भाजीकी ओर मुँह करके दबेहुए कण्ठसे कहा—"भाई। हम हैं तो महापापी; परन्तु हमारे पूर्वजन्मके पुण्यका इतनाही अंश शेष है जो हमको आज ऐसे उपकारी जीवके दर्शन हुए। जो आज उन्होंने हमारी सहायता न की होती तो अवश्यही हम यमराजके घर पहुँचगये होते। हम दीन हैं, अभागे हैं, हमारे पास कुछभी नहीं है जिससे हम अपने प्राणदाताके उपकारका कुछ भी बदला देसकें; परन्तु परमात्मा ही इसका बदला देगा। इन्होंने हम दुखियाओंका जीव बचाया है इसके लिये अवश्यही वह इनाम देगा। हाय! हमारे समान इस संसारमें कोई अभागा नहीं होगा। दुःखपर दुःख और विपत्तिपर विपत्ति आती जाती है। न जाने अभी और क्या २ होने वाला है ......"

इतना कहते २ रमाकी आँखोंसे आसू बह निकले और कण्ठ उसका रुक गया। बारह वर्षकी कन्याके मुखसे ये शब्द सुनतेही उस वीरका हृदय पानी होगया और अश्रुपूर्णआंखोंसे उसने उत्तर दिया "बहन! तू इतनी क्यों दुःखी होती है? मैंने ऐसा कियाही क्याहै जिसके लिये तुम दोनों इतना उपकार मानते हो। परस्पर सहायता करना हम मनुष्योंका धर्मही है। आजतक जो कुछ हुआ उसे

चित्तसे उतारदो। अबसे जबतक मेरे शरीरमें प्राण रहेगा तुम दोनोंपर किसी प्रकारकी आपत्ति नहीं आवेगी। मेरे कोई बहन भी नहीं है। बस आजहीसे तू मेरी बहन है। अब किसी भी तरह तुझको शोच करनेकी आवश्यकता नहीं है। दोनों सुखसे मेरे साथ चलकर घरपर रहो और जो कुछ परमात्मा दे सो खाओ।"

सम्भाजीने फिर नम्रतासे कहा "धन्य है आपको साहब! आपने हमपर बड़ाही उपकार किया है; परन्तु इतनेपर भी आप ऐसी नम्रता करते हैं। हम दीन हैं, दयाके पात्र हैं परन्तु नम्रताके पात्र नहीं हैं। यह आपकी योग्यता है कि आप अपनेको ऐसा समझते हैं। वीरता और नम्रतामें द्वेष है। जो वीर होता है वह नम्र नहीं होता; परन्तु आपमें दोनों गुण आगये हैं। यह बड़े पुण्यका फल है। कृपा करके यह तो बताइये कि आप कौन हैं और हमपर इतनी दया करनेसे आपको सिवाय कष्टके क्या मिला और क्या मिलैगा?"

वीर युवाने उत्तर दिया "मिलैगा क्या? क्या सब काम मिलनेहीके लिये किये जाते हैं? मैं एक साधारण मनुष्य हूं। मुझसे किसीका उपकारही क्या बनता है? यह तो 'गंगाको आनाही था और भगीरथको यश मिल गया'। जिस महादेवकी यात्राको हम तुम निकले हैं उसीने तुम्हारी सहायता की है। इसमें मेरा कुछ नहीं है। मैं अपना हाल पीछे कहूंगा प्रथम तुम बताओ कि तुमपर ऐसी विपत्ति कैसे आई और तुम कौन हो?"

सम्भाजीने उत्तर दिया "साहब! हमारा हाल पूछकर आप क्या करैंगे? हम महादुखियां हैं। हमारी कथा सुनकर आपको भी दुःख होगा"।

वीरने उत्तर दिया "कुछ चिंता नहीं। भाई तुम्हारी बातें सुन २ कर और उत्कण्ठा बढ़ती है। जरा जल्दी कहो।"

सम्भाजी—"अच्छा आपको आग्रहही है तो सुनिये। भालेराव रामभाऊ गोइनकरका मैं पुत्र हूं और सम्भाजी मेरा नाम है। यहाँसे २० कोसपर नाम-गाँव एक ग्राम है वहाँ मेरे माता पिता रहते थे। परमात्माकी कृपासे मेरे छोटे तीन भाई और दो बहनें और थीं, खाने पीनेकोभी अच्छी तरहसे था और ग्राम-भरमें प्रतिष्ठा थी। मेरे हुक्ममें दो चार नौकर सदा रहते थे; परन्तु हाय! मैं जैसा महँगा था वैसाही आज सस्ता होरहा हूं धूलके बराबर भी कोई नहीं पूंछता...।"

कहते २ सम्भाजीका कण्ठ रुकगया और वह आगे न बोलसका। उस वीर पुरुषने धैर्य्य देकर फिर आगे बढ़नेको कहा तब सम्भाजीने फिर कहना आरम्भ किया "इस मेरी बहन रमाके विवाहका माघ शुक्ला १० मंगलवारका शुभ मुहूर्त्त था। सब तरह तैयारियाँ होरही थीं, ठाठबाठ होचुका था और बाहरसे सगे सम्बंधी लोग आ पहुँचे थे। चारों ओर स्त्रियाँ गाती बजाती और नाचती कूदती थीं; परन्तु क्या कहूं कुछ कहा नहीं जाता। कलेजा फटा जाता है। साहब! रसमें विष घुलगया और मंगलमें दंगल होगया।"

इतना कहते २ सम्भाजीकी आँखोंमें आँसू भर आये और उसका कंठ रुक गया। "भाई घबड़ाओ मत ! मनको धैर्य धरो।फिर क्या हुआ?"वीर युवानेपूछा सम्भाजीने कहा " हुआ क्या ? पारायण पूरी होगई । जिस समय बारात ठाठबाठसे बाजारमें होकर आ रही थी अकस्मात् 'भागो २ !' 'दौड़ो!!२ 'लुटेरे आगये !!!' की गाँवभरमें चिल्लाहट मचगई। सब लोग इधर उधर अपने प्राण बचाकर भाग निकले। दशही मिनट हुए होंगे कि मुसलमान सवारोंका एक भारी झुंड दौड़ता आता देखपड़ा और तुरन्तही हमारे घरपर आ पहुँचा। हाय हाय ! जो मण्डप नाच रंगके लिये बनाया गया था वह समरभूमि बन गई; जो लोग निमंत्रित होकर अच्छे २ पदार्थ खानेको आये थे सो दुष्ट यवनोंके घोड़ोंकी दुलकी चपेट धक्काधक्की, लातें घूसे और शस्त्रोंके घाव खा खाकर पीछे लौटने लगे; जो लोग महफिलका रंग और वेश्याके कटीले नेत्र देखने आये थे वे नङ्गी तलवारकी चमक देखरेकर भयभीत हो इधर उधर गिरने लगे। बस इस तरहपर थोड़ीही देरमें गाने बजानेके बदले हाय २ का कुहराम मचगया। हाय दुर्भाग्य "।

ये अन्तिम शब्द निकलतेही सम्भाजीका कण्ठ एकदम रुकगया और छातीमें घूँसा मारकर बड़े जोरसे उसने निश्वास डाला। इस समय उस वीरकी आँखोंमें भी पानी भर आया। थोड़ी देरतक वह भी अवाक् होगया। अन्तमें उसने सम्भाजीको फिर धैर्य देकर आगे चलनेको कहा। उसने कहना आरम्भ किया "फिर क्या कहूं ? दुष्ट सवार घरमें घुस आये और लगे एक २ को काटने। मेरे पिताने उनका सामना कर दो तीनको मारा भी; परन्तु लाग पाकर दुष्टोंने उनके दोनों हाथ काट डाले। प्रथम उन्होंने दूध पीते हुए बालकको मारा, फिर उससे बड़ेको और तब तीसरेको। यह देखकर मेरा चौथा भाई जो पाँच वर्षका था दौड़कर मेरी माताकी गोदमें जा घुसा और उसके चिपटकर तुतलाता हुआ कहने लगा " मा ! मुझको बचा। ये मार डालेंगे।"उस समयका दृश्य ऐसा करुणा जनक था कि स्वयं दयाको भी दया आती थी और पाषाणका हृदय भी पिघला जाता था; परन्तु उन दुष्टोंको; उन राक्षसोंको दया नहीं आई और मा की गोदसे छीनकर उस निरपराधी अबोध बालकको काटही डाला।मेरी माता हाथ जोड़ २ कर उनसे बारम्बार प्रार्थना करती थी कि जो आप को सबका प्राणही लेना है तो प्रथम हम दोनोंको मार डालिये, हमसे यह पुत्र शोक नहीं देखा जाता।चन्द्रमासे चाहे आग निकले,सूर्यकी किरणें चाहे बरफ बरसावें, पत्थरमें चाहे चिकनाहट हो और सिंह चाहे बकरीसे प्यार करे; परन्तु दुष्ट अपनी दुष्टताको नहीं छोड़ता। 'सर्पाद्दुष्टतरः खलः' यह वाक्य सत्यही है। मेरे मातापिताके प्रार्थना करनेपरभी उन्होंने कुछ न सुनी और एक २ करके मेरे सब भाई बहनोंको तथा भावी दामाद तकको मारकर सत्यानाश करडाला।

दोनों माता पिताने तो पत्थरपर शिर पटककर अपने प्राण देदिये और हम दोनों भाई बहन बचकर निकलभागे। न जाने हमारे भाग्यमें अभी क्या २ पाप भोगना लिखा है। दुष्टोंने सारा मालटाल लूटकर घरमें आग लगादी और इसतरह पर 'नेस्त औ नाबूद' कर दिया।

बस अबतो दोनों भाई बहन जोर २ से चिल्लाकर रोने लगे। उनकी यह दशा देखकर उस वीर युवाका हृदयभी भर आया और उसकी आँखोंसे अश्रुधारा बह निकली। थोड़ी देरतक तो तीनोंकी यही दशा रही अन्तमें उस वीरने अपनेको सम्भाला और चिन्ताको शांत करके कहा "भाई सम्भाजी! वास्तवमें तुम्हारी कथा बड़ीही हृदयवेधक है; परन्तु अब मत घबड़ाओ! यथा सम्भव मैं तुम दोनोंकी सहायता करनेको तैयार हूँ"।

प्रकरण ९.

दुष्टोंपर दया।

इधर इन लोगोंमें इसी तरहकी बातें हो रही थीं कि उस वीर युवा पुरुषके साथ वाले सबलोग, जिनको वह पीछे छोड़कर भागा था उसी स्थानपर आपहुँचे और वहाँका वह दृश्य देखकर उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। उनमेंसे कितनेही जब आपुसमें कानाफूसी करने लगे तब एक वृद्ध पुरुषने कहा "माल्रू! यह क्या दृश्य है? हमतो तुझको वहाँ ढूंढते थे। नहीं मालूम तू कब सटक आया। यह तो बता यह मामला क्या है?"

"क्या करूँ जिस समय मेरे कानोंमें इस भाईका दीन वचन पड़ा, तो मुझसे रहा नहीं गया। मैं एकसाथ दौड़पड़ा। यदि आप लोगोंसे कहता तो कदाचित विचाराविचारमें देर होजाती और देर होनेसे इन दोनों दीन दुखियाओंके प्राण जानेमें कसर न थी। आज उस भोले भंडारी महादेवने इन दोनोंको यमराजके द्वारसे पीछा खैंचा है।" उसने उत्तर दिया।

"तबतो हमको आज बड़ी खुशी मनानी और सबको एक स्वरसे कैलासवासीकी कृपाका धन्यवाद देना चाहिये"।

इतना कहतेही सब लोगोंने एक साथ "बोलो भाई कैलासपतिकी जय" कहकर अपना हार्दिक स्नेह प्रकट किया। इतनेहीमें एक दूसरे मनुष्यने कहा "परंतु यह तो बताओ कि ये दोनों कौन हैं? और इनकी यह दशा कैसे हुई? भाई मालोजी! जरा कहो तो।"

"मालोजी" शब्द कानमें पहुँचतेही दोनों भाई बहन चकितसे होगये। बहन तो लज्जाके मारे कुछ बोल न सकी, कृतज्ञतापूर्ण नेत्रोंसे नीचा मुँह किये

खड़ी रही और सम्भाजीने लपककर मालोजीके पैर पकड़ लिये और कहा "तवह साहब ! आपने इतना उपकार हमारे साथ किया। मैंने भी आपका नामतो बहु दिनोंसे सुनरक्खा था और मिलनेकी बड़ी अभिलाषा थी; परन्तु आज व अभिलाषा पूरी हुई। आपके दर्शनोंसे नेत्र सफल हुए। आपके विषयमें जो बातें सुनी जाती थीं आज उनसेभी कहीं बढ़कर पाया। एक कविका वाक्य है:-

कवित्त-हानि और लाभ में न शोक हर्ष भूलि करैं, नीतिपंथ त्यागिके कुपन्थ में न जात हैं। दीन दुःख टारिबेको अवला उबारिबेको, दुष्टन पछारिबेको वीर ही उठात हैं। शुद्ध सदाचारी धीर वीर व्रतधारी सहैं, कोटि कष्ट भारी पै न नेक घबरात हैं। पर उपकारसे न हार पग पीछे धरैं, तेई बलदेव सांचे शूरमा कहात हैं॥

ठीक येही सब गुण आपमें पाये जाते हैं। आप शूर हैं; विद्वान् हैं और पूजनीय हैं। ऐसे पुरुषोंसे भेट बड़े भाग्यसे होती है। आपने मेरा और मेरी बहन का प्राण बचाया है, हम दीन, गृह विहीन, दुखिया, भुखिया, को आश्रय दिया है और हम अभागोंको अभयदान देकर सभागा बना दिया है। इस उपकारके बदलेमें ऐसी कोई वस्तु मेरे पास नहीं है जो आपके भेट करूं। केवल यह शरीर है उसीको मैं आपके चरणोंमें अर्पण करता हूँ। इसे स्वीकार कीजिये। लीजिये!! अपनाइये !!!...."

इतना कहते २ सम्भाजीने साष्टांग दंडवत प्रणाम करके उस वीर मालोजी के पैरोंमें शिर देदिया और वह अपने अश्रुजलसे उनके पादप्रक्षालन करने(चरण धोने) लगा। इस समयका दृश्य बड़ाही चित्ताकर्षक और दयाजनक था। जितने मनुष्य उस समय प्रस्तुत थे कदाचितही उनमें कोई एक आधा ऐसा कठोर हृदय होगा जिसपर इसका कुछ प्रभाव न पड़ा हो, बाकी सब लोगोंकी आँखोंसे पानी बहनिकला था और सबही सम्भाजीकी कृतज्ञताकी प्रशंसा करते थे।

मालोजीका हृदय भी इस घटनासे ऐसा पिघल गया था कि नेत्रोंके द्वारा बहरकर बाहर आता था। उन्होंने तुरन्तही अपने चित्तको संभाला और सम्भाजीके उठानेको हाथ बढ़ाया; परन्तु वह उनके पैरोंको छोड़ताही नहीं था। जैसे एक कंजूस अपनी मोहरोंकी थैलीको पकड़कर छुड़ानेपर भी नहीं छोड़ता है वैसेही सम्भाजीने भी मालोजीके पैर पकड़लिये थे। जैसे तैसे मालोजीने उसे छुड़ाया और सम्भाजीको अपनी छातीसे लगाकर कहा "नहीं संभाजी ! तुम अपने चित्त को इतना दुःखी क्यों करते हो ? तुमभी मेरे भाई हो कोई दूसरे नहीं हो। जैसे यह विठूजी हैं वैसेही तुमभी हो। जबतक मेरे शरीरमें प्राण है तबतक तुमको अब कुछ भी चिंता करनेकी आवश्यकता नहीं है। तुम्हारा घर है और मेरा द्वार। तुम दोगे और मैं खाऊंगा। तुम दोनों भाई बहन मेरे साथ चलो और अपने घरमें सुखसे रहो।"

इस समय सूर्यभगवान् भी अपने रथको हाँकते २ ठीक मस्तकपर आचुके थे और गरमी बड़ी तेजीसे अपना प्रताप दिखा रही थी। भूख और प्यासके मारे सब लोग व्याकुल होचुके थे इसलिये सब लोगोंने यही उचित समझा कि वहाँपर ठहरकर कुछ जलपान करलिया जाय। बस सबलोगोंने वहींपर कमर खोल २ कर डेरा डाल दिया और वे पेटपूजाकी चिन्ता करने लगे।

इधर सम्भाजीके देहमें लगे हुए घावोंसे रक्त तो बहताही था और भूख प्यासने भी खूबही सताया था इस कारण दोनों भाई बहनोंकी दशा बड़ीही बिगड़ी हुई थी। मालोजीके देहमें भी यवनोंके हाथसे कई जगह चोट लगी थी और उनमेंसे रक्त बहता था, परन्तु प्रथम उन्होंने सम्भाजीके घावोंको पानीसे धोकर उनपर पट्टी बाँधी, रमाके भी शरीरसे रक्त बहता था उसको धुलवाकर साथवाली दूसरी स्त्रियोंसे पट्टी बँधवाई और दोनोंको खानेके लिये कुछ फल और मेवा आदि दिया। इस तरहपर दोनोंकी तबीयत जब शांत हुई तब वीर मालोजीने अपने खाने पीनेका कुछ फिक्र किया और सबलोग वहींपर एक वृक्षकी छायामें लेटरहे।

पाठक गण! "शठात् प्रति शठं कुर्यात्" अर्थात् "जैसेसे वैसा वर्त्ताव करना चाहिये" इस लोकोक्तिका प्रायः सबही आदर करते हैं; परन्तु हमारे वीर मालोजीका "दीनपर दया करना" ही एकमात्र 'मोटो' था। चाहे वह शत्रुही क्यों न हो; परन्तु दीनावस्थाको पहुँचनेपर वहभी उनसे आदर और सहायताही पाता था। जिस स्थानपर ये लोग ठहरे हुए थे उससे थोड़ेही अन्तर पर वे मुसलमान सिपाही भी पड़े थे जो हमारे वीरके द्वारा घायल हुए थे। यद्यपि धूप तेज पड़ती थी और प्याससे वे व्याकुल हो रहे थे; परन्तु वे ऐसे घायल हो गये थे कि उनमेंसे किसीकी भी हिम्मत वहाँसे हटनेकी नहीं होती थी। जब साथके सब लोग खाने पीनेसे निश्चिंत होगये तो मालोजीको उन सिपाहियोंकी भी सुधि आई और वह उनके पास गये। उनकी सूरत देखतेही एकबार तो सब घबड़ा उठे और अपने रहे सहे प्राणोंके जानेका उनको पूरा भय होगया; परन्तु जब मालोजीने अपना वहाँ जाना केवल उन लोगोंकी संभाल लेनेहीके लिये बतलाया तो उनके चित्त शांत हुए और सब लोगोंने आर्त्तस्वरसे पानी और शराब पीनेको माँगा। यद्यपि मालोजीको शराबसे पूरी घृणा थी और वह इसदुष्ट राक्षसीको कभी स्पर्श भी नहीं करते थे; परन्तु घायल मनुष्यकी इच्छा पूर्ण करनेके लिये उन्होंने पासके गाँवमें अपने एक साथीको भेजकर कुछ बोतलें और खानेका कुछ सामान अपने पाससे पैसा देकर मँगवा दिया। अब तो लगे सब लोग बोतलें उड़ाने। मालोजी इस समय एक दूसरे पेड़के नीचे बैठकर इनकी खैर देखने लगे। जब इन लोगोंकी तबियत कुछ शांत हुई तो मालोजीकी इस दयाने उनके हृदयमें

स्थान करलिया। यद्यपि ये मुसलमान लोग बड़े क्रूर और निर्दय थे परन्तु उस समय मुक्तकंठ होकर उनको मालोजीकी प्रशंसा करनीही पड़ी। करनी नहीं पड़ी वरन स्वयं उनके हृदय प्रशंसाके शब्द उगलने लगे। एकने कहा "यारो देखो! हम हिन्दुओंको काफिर कहतेहैं और उनको अपना जाती दुश्मन समझते हैं; मगर इस वक्त तो हिन्दूहीने हमारी जान बचाई"। दूसरेने कहा "बिरादर! तुम्हारा कहना बहुत दुरुस्त है। अगर वह न आता तो खुदा जाने हमारा क्या हाल होता"। इतनेहीमें एक तीसरेने झुंझलाकर कहा "वाह तुमलोग उस सालेकी क्या तारीफ करते हो? उसीने तो हमारी यह हालत की है। क्या उसने हमें जहन्नुमको पहुँचानेमें कुछ कमी रक्खीहै?" इतनेहीमें चौथेने कहा "लाहौलवला कुव्वत! तुमने उसके साथ कैसा सलूक किया है? वाजिब तो यही था कि वह हमको इस जहानसे निकाल देता। मगर उस खानदानी शख्सने हमपर तर्स खाया और हमारी जान बचाई। यह क्या थोड़ा सलूक है?" पांचवा चट बोलउठा "बेशक २ आपका कहना बजा है। हमको जरूरही उसे दुआ देनी व अहसान मानना चाहिये।" तीसरेसे न रहा गया वह फिर बोलउठा "अहसान क्या खाक मानें? हमने उसका क्या नुकसान किया था जिसके लिये उसने हमारी यह हालत कर दी?" चौथेने कहा "खांसाहब! जरा होश सम्भालकर बोलो! तुमने एक बेकुसूर रास्ते चलती लड़कीपर दिल बिगाड़ा क्या यह बुरा काम नहीं है? जरा दिलमें तो ख्याल करो! अगर तुम्हारी बहन या लड़कीके साथ कोई ऐसा करना चाहे तो क्या तुम उसको करने दोगे? शुक्रिया अदा करो उस बहादुर जवानका जिसकी मिहरबानीसे तुम इसवक्त यह गुफ्तगू करने लायक रहे वरना खुदा जाने क्या हुआ होता।"

बस इसी तरहपर मामला बढ़ने लगा और पहेही पहे उनमें तकरार होने लगी। यह देख उनमेंसे एक वृद्ध मनुष्य बोलउठा "यारो कल बड़ा मजा हुआ। मेरा शिर गुम होगया शिर।" इतनेहीमें एकने कहा "क्या खूब! कहीं शिर भी गुम हो जाता है?" बूढ़ेने कहा "हां २! सचमुच कल तो ऐसाही हुआ।" उसने पूछा "फिर कैसे मिला?" बूढ़ेने जवाब दिया "मिला कैसे? 'मेरा शिर खोगया कोई बताओ'! 'मेरा शिर खोगया कोई बताओ'! पुकारता हुआ मैं गांवभरमें दौड़ता फिरा परन्तु कहीं पता न लगा। अखीरमें जब घरमें घुसने लगा तो चौखटकी ऐसी चोट लगी कि शिर पीछा ठिकाने आगया"। "तब तो तुम बड़े बेवकूफ निकले" पहलेने कहा। "बेशक! मैं बेवकूफ न होता तो तुम लोग हँसते कैसे?" बूढ़ेने जवाब दिया। यह सुनकर सब लोग खिलखिलाकर हँस उठे और तकरारका बाजार ठंडा होगया।

प्रकरण १०.

भैंससे लड़ाई।

चैत्रका महीना और शुक्ल पक्ष है; सूर्यदेव अपने घोड़ोंको हाँकते २ आधेसे अधिक मार्ग तैकर चुके हैं, गरमी जोरसे पड़ रही है और हवा भी ऐसी चलती है मानों कहीं पासहीकी किसी जलती हुई भट्टीमेंसे थोड़ी गरमी चुरा लाई हो। पक्षीगण वृक्षोंके ऊपर बैठे हुए अपनी चोंचें खोलकर श्वास लेरहे हैं और अपनी व्यथा दूर होनेकी आशामें सायंकाल होनेकी राह देखरहे हैं। ऐसे समयमें शिंगणापुरसे कुछ दूर मार्गहीमें एक बड़े बरदगके पेड़के नीचे दो तीन गाड़ियां ठहरी हुई हैं और २० । २५ स्त्री पुरुष लेटे हुए हैं। एक १७ । १८ वर्षका युवा भी उनके साथ है। उसकी ओर देखनेसे प्रकट होता है कि, वह बड़ा दयावान् है और वीरता उसके चेहरेसे टपकी पड़ती है। उसके पास एक ओर लट्ठ रक्खा है और पैरपर पैर रखकर वहभी लेटा हुआ है। लेटा तो है; परन्तु औरोंके और उसके लेटनेमें बहुत अन्तर है। सब लोग निद्रावश होकर लेट रहे हैं परन्तु वह लेटे रहनेपर भी सचेत है। कुछभी आहट आतेही वह चौंककर बैठ जाता है और इधर उधर दूर २ तक नजर दौड़ाने लगता है मानों इन सब साथ वालोंकी रक्षाका बीड़ा उसीने उठा रक्खा हो। यद्यपि उसकी सूरतसे भारी थकावट जान पड़ती है और ऐसा भास होता है कि किसी भारी काममें जी तोड़ परिश्रम करने उपरांत उसको थोड़ासा लेटनेका समय मिला है; परन्तु तब भी वह अचेत नहीं है। वह अपने दिलमें कहरहा है "आज बड़ी खुशीका दिन है! आज मैंने अपने कर्त्तव्यका पालन किया है। आजका दिन सफल हुआ। राम राम। बिचारोंने कैसा कष्ट पाया; परन्तु मारनेवालेसे बचानेवाला प्रबल है। जिस समय वह दृश्य याद आता है तो रोमांच हो उठता है, परन्तु खैर अब तो परमात्माने रक्षा की। प्राणी मात्रकी रक्षा करने.........।"

जब वह वीर युवा इसी तरहकी उधेड़ बुनमें लगा हुआ था अकस्मात कुछ आदमियोंके भागने और चिल्लानेकी दूरपर आहट आई। बस तुरन्त उसने अपना लट्ठ उठाया और खड़े होकर देखा तो कुछ मनुष्य दौड़तेसे दिखाई दिये। इसी अवसरमें और भी एक दो आदमियोंकी निद्रा खुलगई। उन्होंने हो हा करके सबको जगादिया। अब तो सब लोग घबड़ाउठे और कहने लगे "हाय २ यह क्या है? एक आपत्तिसे तो अभी छुटकारा पायाही है और दूसरी विपदा फिर आने लगी। अरे भगवान्! हाय राम!! अब कैसे होगा! हे महादेव बाबा! तूही रक्षाकर!!!" इस तरहपर एक ओर पुरुष चिल्लाते थे तो दूसरी ओर स्त्रियां

अलगही पुकार२ कर कहती थीं "खोज जाय इन निपूतोंका! देखो तो अभी एक से तो उबरेही नहीं हैं और फिर दूसरी आफत आगई। और सब मरते हैं; पर इन हत्यारोंको मौत भी नहीं आती। भगवान् जाने इनकी उमर कितनी बड़ी है! न जाने ये हमारे पीछे क्यों लगे हैं। इनका पेट भी नहीं जलता। सौतके जाये मरते भी नहीं हैं। क्या अभी इनका पेट नहीं भरा। हम गरीबोंको सतानेकी भगवान् इनको जरूर सजा देगा। हे महादेव बाबा! अबतो इन पापियोंका मुँह काला कर। बिना काम इनसे धरती माताको क्यों बोझे मारता है।"

स्त्रियां इसी तरहपर जब शत्रुओंको जीतनेके लिये अपने स्त्री मंत्रोंका प्रयोग कररहीं थीं, तब उस वीरने गाड़ियाँ तैयार कराईं, सब लोगोंको धैर्य देकर उनमें सवारकर आगेको रवाना किया और दो चार साथियोंसहित आते हुए शत्रुओंका सामना करनेकी तैयारी की। इतनेहीमें सामनेसे गायें, भेड़ें, रस्सीसे बँधेहुए कई मेंढ़े और लड़ाईके भैंसे तथा साथमें कई आदमी आते दिखाई दिये उन आनेवाले लोगोंमेंसे "पकड़ो२! दौड़ो२!" की चिल्लाहट सुनकर मालोजीके साथ वालोंने निश्चय कर लिया कि अवश्यही वे लोग डाकू या लुटेरे हैं; परन्तु ज्योंही वे लोग पास आये उनको मालूम हुआ कि बात कुछ औरही है। पूछने पर जाना गया कि उनके साथके भैंसोंमेंसे एक भैंसा, जो अतिबली और मोटा ताजा था, रस्सी तोड़कर भाग गया है और उसीको पकड़नेके लिये सब लोग यत्न करनेपरभी सफल नहीं होसकेहैं। बस अब तो मालोजीने अपनी कमर कसी और साथ वालोंकी ओर देखकर कहा " अब देखते क्या हो? तैयार होजाओ।"

वे लोग तो पहलेहीसे तैयार थे मालोजीके ये शब्द सुनतेही लाठियाँ ले लेकर खड़े होगये; परन्तु उनमेंसे एक मनुष्य बड़ा डरपोक था। देखनेमें तो वह पूरा जवान मालूम होता था और शरीर भी उसका गठीला था परन्तु था वह ऐसा कायर कि रात्रिके समय अंधेरेमें घरसे बाहर भी नहीं निकलता था और जरासा चूहोंका आहट सुनतेही घवड़ा उठता था। यद्यपि इस समय उसके विषयमें लिखनेका अवसर नहीं है क्योंकि शत्रुका सामना करना है; परन्तु तबभी उसकी एकबारकी रामकथा सुनाना मैं उचित समझता हूँ। एक दिन वह रात्रिके समय अपनी स्त्रीसहित घरमें सोरहा था, मेह खूबही बरसता था, बाहर जानेकी किसीकी हिम्मत नहीं होती थी, अँधियारीने भी अपना राज्य खूब जमा रक्खा था, मनुष्यकी आंखें अपने हाथोंको भी देखनेमें असमर्थ थीं। ऐसे समयमें अकस्मात् घरमें कुछ चूहे दौड़े। बस फिर क्या था। लगा उसका हृदय धड़कने। प्रथम तो उसके मुँहसे भयके मारे कुछ बोलही न निकला और निकला भी तो "ग–ऽीगं...गा...दी...मा...क...हां–गई? मुझको...बचा" कहकर वह एकदम रोउठा। गंगाकीमा अर्थात् उसकी स्त्री इस समय गाढ़ निद्रामें सो रही थी। जब उससे कुछ उत्तर न मिला तो वह एकदम भागकर घरके बाहर जापहुँचा और

लगा चिल्लाने "मारडाला रे मारडाला! चोर२! दौड़ो२!" उसकी ऐसी चिल्लाहट सुनकर विचारे मोहल्लेवाले उस मूसलधारमेहमें घरसे निकलकर उसके पास पहुँचे और लगे चोरको ढूंढने; परन्तु वहां चोर था कहां कि जो उनकोमिलता। अंतमें बहुत श्रम करने पर भी जब चोरका पता न लगा तो सब लोग अपने २ घर चलेगये, परन्तु इतनेपर भी उसका संदेह दूर न हुआ और वह उसी तरह मेहमें पड़ा रहा परन्तु रातभर घरमें न घुसा।

चाहे जो हो; परन्तु बालू मालोजीका बड़ा कृपापात्र था क्योंकि वह बड़ा ईमानदार और सच्चा था। इसी कारण मालोजी उसे सदा साथ रखते थे। आज भी वह उनके साथहीमें था। जब उस भैंसेको पकड़नेके लिये सब लोग तैयार हुए तब तो उसका कलेजा कांपने और शरीर थरथराने लगा। वह बोला "अजी साहब! यह आप क्या कहते हैं? जान बूझकर अपना प्राण क्यों देते हैं! आप मेरा कहना न मानेंगे तो मैं पटैलिनसे कहदूँगा।"

मालोजीने डांटकर कहा "पटैलिनसे क्या कह देगा? हम क्षत्रिय हैं; वीरता करना हमारा काम है। क्या सब तुझ जैसे होते हैं जो देखनेमें बड़े पहलवान परन्तु काम पड़नेपर स्त्रीसे भी अधिक डरपोक निकल जायँ! चल हट एक ओर। तुझको अपना प्राण प्यारा है तो यहांपर बैठजा! जब हम जाने लगेंगे तो तुझको लेते जायँगे।"

बालूने उत्तर दिया "क्षत्री हो तो तुम जाओ; तुम कुआरे हो मैं तो उस भैंसेके लिये अपना कीमती प्राण नहीं दूँगा। हीरे भी कहीं पत्थरसे फोड़नेके होते हैं? जो भैंसेने मुझको मारडाला तो विचारी गङ्गाकी मा किसके जीवको रोवैगी? फिर उसके लिये मेरा जैसा वीर बालू कहांसे आवैगा?"

इतना कहकर बालू तो भयके मारे एक पेड़पर चढ़गया और मालोजीने अपने दो चार साथियों सहित भैंसेकी ओर कदम बढ़ाया।

अमीर लोग दिल बहलानेके लिये हाथियोंकी लड़ाई कराते हैं, भैंसोंको लड़ाते और मेंढ़ोंको भिड़ाते हैं। ऐसे कामोंके लिये जो जानवर पाले जाते हैं वे बड़े मजबूत और लड़नेवाले होते हैं; उनके खाने पीनेका पूरा प्रबन्ध होता है और वे बड़ीही सावधानीसे रक्खे जाते हैं। भयानक भी वे इतने होतेहैं कि जो अभागा मनुष्य उनके झपाटेमें आ जाता है उसको सीधा यमपुरकाही मार्ग लेना पड़ता है। आज हमारे वीर मालोजीको जिस भैंसेका सामना करना है वह भी उनहींमेंसे है! यद्यपि वह लोहेकी जञ्जीरसे बँधा हुआ था और कई कोड़ी आदमी उसके साथ थे; परन्तु अभाग्यवश वह जञ्जीर तोड़कर भागगया और हजार यत्न करनेपर भी वशमें नहीं आया। वह इधर उधर चारों ओर दौड़ता है और डकरा २ कर अपना पीछा करनेवालोंकी ओर इस तरह पर तेजीसे साथ भागता है कि प्रत्यक्ष यमराजकाहा स्वरूप प्रतीत होता है।

केवल मशीसही नहीं होता वरन् काम भी वैसाही करता है। बिचारे कई निरपराधी मनुष्योंको आज उसने अपने सींग और लात धक्केसे भूमिपर गिरादिया है और एक दोको तो अङ्गहीनही कर दिया है। वह जिधर जाता है उधरही "अररर ! आगया" करके लोग एकपर एक लदापद गिरने और दौड़ने लगते हैं। भैंसा क्या है मानों हाथीका बच्चा है। उसकी ओर देखतेही ऐसा भय लगता है कि कुछ कहा नहीं जाता; परन्तु उसको पकड़नेका यत्न किये विना काम भी नहीं चलता।

यद्यपि मालोजी इस भैंसेको पकड़नेमें न पड़ते तो कोई उनको दवा नहीं सकता था परन्तु उनसे लोगोंका यह कष्ट न देखागया और इसी लिये उन्होंने अपने प्राणको जान बूझकर जलती हुई अग्निमें झोंकनेपर कमर बांधी। यह तो पहलेहीसे पाठक जानतेहैं कि मालोजी बड़े पहलवान और कसरतीजवान हैं। बस उन्होंने वीरशिरोमणि अञ्जनीकुमार रामदूत श्रीहनुमानजीका स्मरण किया और मनही मनमें उनको प्रणामकर अखाड़े अर्थात् मैदानमें पैर रक्खा। मालोजीके साथवाले भी बड़े वीर थे। उन्होंने भी अपने मुखियाके साथ लँगोटा चढ़ाया और हाथमें लंबे २ लट्ठ लेकर समर भूमिमें कूदनेमें आनाकानी न की। अबतो लगे चारोंओरसे वीरोंके लट्ठ चलने और गदागद भैंसेकी पीठपर प्रहार होने। उन लोगोंने इस तरहपर उसको घेर लिया कि वह जिधर जाता उधरही उसकी लट्ठसे खूब खातिर की जाने लगी। इतनेपर भी वह वशमें नहीं आता था; परन्तु कहावत प्रसिद्ध है कि "मारके आगे भूत भागे"। वही दशा इस समय भैंसेकी हुई। मारे प्रहारके उसका सब जोश निकल गया और शरीर जरजरसा होगया। तब तो भैंसेको अपना प्राण बचानेकी चिंता हुई और दुम दबाकर गोबर करता हुआ वह सामनेकी ओर दौड़ा। पीछेसे इन लोगोंने भी उसको इस तरहपर धर दबाया कि विचारे भैंसेको अच्छे बुरेका कुछ सूझपट न बंधा और दौड़ते हुए उसकी गरदन दो पेड़ोंके बीचमें आगई। बस फिर क्या था। मालोजीने लपककर उसके दोनों सींग पकड़ लिये और औरोंने मिलकर उसको खूब हढ़तासे बांधदिया।

प्रकरण ११.

जगपालरावसे भेंट।

जिस समयका यह वर्णन है दक्षिणमें मुसलमान पंचक नामसे पांच स्वतंत्र अड्डे मुसलमानी राज्यके थे। इस समय कई मराठा राजपूत सरदारोंने भी अवसर पाकर दक्षिणमें अपना २ अधिकार जमा लिया था। उनमेंसे एक निंबालकर नामक घराना भी था। यह कुटुंब औरोंसे पुराना

था और ईश्वर कृपासे शक्तिवान् भी था। जब २ मुसलमान पंचकमेंसे किसीको आपसमें लड़नेका अवसर आता अथवा किसी अन्य प्रांतपर धावा मारनेके लिये इस निंबालकर घरानेको निमंत्रण किया जाता तो उसका सरदार अपनी इच्छाके अनुसार किसी दलमें जा मिलता और अपना लाभ उठाकर लौट आता था। यह घराना किसीके परतंत्र नहीं था। कई बार मुसलमान पंचकमेंसे भिन्न २ सुलतानोंने इस घरानेको कुछ उपाधि और वार्षिक द्रव्य देकर अपनेमें मिलालेनेका यत्न भी किया परन्तु इसके सरदारने अपनी स्वतंत्रता बेचकर परतंत्रताके बंधनमें पड़ना स्वीकार नहीं किया।

जिस समय भोंसला वंशमें मालोजी अधिकारी हुए थे निंबालकर घरानेकी लगाम जगपालरावके हाथमें थी। माता पिता इनके विद्यमान थे परन्तु वे वृद्ध हो गये थे इस कारण पिताने अपने रहते हुए ही कामका भार शनैः २ अपने एक मात्र पुत्रको देकर अपना चित्त भगवद्भक्तिमें लीन कर दिया था। जगपालरावके अब तक कोई सन्तान नहीं थी केवल एक १३।१४ वर्षकी बहन थी जिसके विवाहकी इनको बड़ीही चिन्ता रहती थी परन्तु योग्य वर न मिलनेसे लाचार थे। ऊपर पांचवें प्रकरणमें जो दो स्त्री पुरुषका वार्त्तालाप पाठक पढ़ चुके हैं वह इन्हीं जगपालराव और उनकी स्त्रीका है।

जगपालरावकी अवस्था इस समय २३।२४ वर्षकी थी और शरीर भी उनका दृढ़ तथा गठीला था। कसरतका उनको बड़ा शौक था और इसी लिये पहलवानोंका एक दल इनके यहां नौकर था। जबसे हमारे वीर मालोजीका इन्होंने नाम सुना था तबसे उनसे कुश्ती लड़नेकी जगपालरावको बड़ी उत्कंठा थी। शिंगणापुरके मेलेमें पहलवानोंके कई दल जाया करते थे। जगपालरावको पूरा विश्वास था कि मालोजी इस अवसर पर अवश्यही आवेंगे इस लिये उन्होंने भी वहां जानेका दृढ़ विचार किया। मेलेमें जानेसे भीतरी मंशा तो जगपालरावकी मालोजीसे कुश्ती लड़नेहीकी थी परन्तु प्रत्यक्षमें अपनी बहन दीपाके लिये योग्य वर ढूँढनेके मिससे उन्होंने वहां जाना पक्का ठहराया था।

देखनेमें जगपालराव एक साधारण जमीन्दारकी तरह रहते हैं परन्तु दूर दूरके ग्रामों तकमें उनका अच्छा अधिकार और सम्मान है तथा शक्ति भी आज दिन उनकी इतनी है कि आवश्यकता पड़नेपर १००० मनुष्य शास्त्रधारी उनके हुक्मसे एकत्रित होसकते हैं फिर कमी ही क्याहै। बड़े ठाठबाटसे आज जगपालरावकी सवारी मेलेके लिये तैयार हुई है। साथमें पहलवानोंका एक दल है, नौकर चाकरों का एक पूरा जमावड़ा, लड़वैये भैंसोंका एक झुण्ड है और दिलबहलावका पूरा सामान है। यद्यपि जगपालरावकी इच्छा

स्त्रियों को साथ लेजानेकी नहींथी परन्तु उनके आग्रहसे उन्हें अपनी स्त्री और बहन दीपाको भी साथ लेजाना पड़ा। इस तरहपर बड़ी सज धजसे राजसी ठाठके साथ जगपालरावकी सवारी रवाना हुई।

इतना पढ़ने से पाठकों ने यह तो समझही लिया होगा कि ऊपर जिस भैंसेसे हमारे वीर मालोजीकी कुश्ती हुई है वह इन्हीं जगपालरावकी सवारीवाले भैंसोंमेंसे एक था परन्तु मालोजीने यह बात नहीं जानी थी। उन्होंने केवल लोगोंको कष्ट और भयमें देखकरही उससे लड़ाई की थी और अपना जी झोंका था।

जिससमय मालोजीने अपने शत्रुको विजय करके उसके सींग पकड़ लियेथे ठीक उसी समय जगपालरावकी सवारी भी वहां जापहुँची. अपने बड़े २ पहलवानों, नौकर चाकरों और अन्यान्य लोगोंका इस तरह पर भारी जमाव और उनकी घबराई हुई सूरत देखकर वह अपने एक नौकरसे बोला "क्योंरे केशव ? यह क्या गडबड है ? इतने लोग क्यों इकट्ठे होरहे हैं ?"

केशवने उत्तर दिया-"सरकार ! काय सांगावें ? आपल्या शिकारखान्यांतील मवडू नावाचा रेडा सांखळदंड तोडून पळून गेला"

जगपालराव-"हो ! हो ! मग" ?

केशव-"मग काय ? सर्कार ! मीं आणि आपल्या सर्व पहिलवानानीं मिळून फारच प्रयत्न केला परन्तु त्याला कोणीही धरण्यास समर्थ झाला नाहीं"

जगपालराव-"तर मग अजून पर्यंत त्याला पकडलें नाहीं काय" ?

केशव-"सर्कार ! एका पहिलवानानें त्याला धरला परंतु तो पहिलवान जर नसता तर तो हातांत लागणें दुरापास्त झालें असतें।"

जगपालराव-"अशा वीर पहिलवानाला पहाण्याची मला फारच उत्कंठा झाली आहे। तरी त्याला त्वरित माझ्याकडे आणा।"

केशव-"जी सर्कार ! आतांच घेऊन येतों।"

संसारका नियम है कि प्रत्येक मनुष्य अपने कामका बदला चाहता है, प्रत्येक मनुष्य ही बड़े आदमीसे मिलनेकी इच्छा करता है और प्रत्येक मनुष्य ही इनाम और प्रशंसा पानेका अभिलाषी होता है। आजकल अधिकांश मनुष्य ऐसे देखे जाते हैं जो करते तो हैं उपकार पैसे भर परन्तु उसको दिखलाना चाहते हैं सेर भर। समयको देखते हुए होना भी ऐसा ही चाहिये क्योंकि चुपचाप काम करनेवालेको कोई नहीं जानता और हो हल्ला करनेवाला प्रसिद्ध हो जाता है परन्तु सब लोग एकसां नहीं होते। "बड़े बड़ाई कभी न करते छोटे मुखसे कहैं वचन" के अनुसार मालोजीभी अपनी प्रशंसा मारनेवाले नहीं थे। जब उन्होंने देखा कि किसी बड़े आदमीकी सवारी आ रही है तो वे भैंसेको एक वृक्षसे बांधकर वहांसे चलदिये।

इतनेहीमें केशव आ पहुँचा और उसने जगपालरावका आमंत्रण वाह सुनाया। विवश हो मालोजीको वहां जानाही पड़ा। उनका गठीला पहलवानी शरीर और वीरतासे भरा हुआ सुंदर चहरा देखतेही सब लोग मोहित हो गये और अकस्मात् जगपालराव और उसकी स्त्रीके हृदयमें स्वजनके समान, दीपाके हृदयमें पतिके समान और अन्य देखनेवालोंके हृदयमें परम स्नेहीके समान भाव उत्पन्न हो गया। अपने २ मनका स्वाभाविक ऐसा भाव देखकर लोगोंको अति आश्चर्य हुआ और वे इसका कारण विचारने लगे परन्तु कुछ समझमें नहीं आया। अंतमें जगपालरावने हमारे वीरको अपने पास बुला लिया और कहा "ऐ वीर! मैं तुम्हारा साहस और वीरता देखकर बड़ाही प्रसन्न हुआ हूं। नहीं मालूम तुमको देखकर मेरा हृदय इतना क्यों आनंदित होता है। तुमने आज मेरे पहलवानोंको नीचा दिखाया है। तुमने मेरे नौकर चाकरोंको सहायता दी है। साथमें मुझपर भी तुमने उपकार किया है। इसके लिये तुम धन्यवादके पात्र हो।"

मालोजीने जवाब दिया "नहीं सरकार! मैंने ऐसा कियाही क्या है जिसके लिये आप मुझको ऐसा मानते हैं। मैं तो एक साधारण मनुष्य हूं। जो कुछ मैंने किया है वह क्षत्रियधर्मसे अधिक नहीं है।"

जगपालराव—"यह ठीक है परन्तु अपने प्राणको होमकर वीरता करना बड़ेही साहसका काम है"।

मालोजी—"अच्छा तो सरकार! अब मुझे आज्ञा मिलै। मैं जाता हूं। मेरे साथके लोग आगे निकल गये हैं। वे मेरी राह देखते होंगे। साथमें एक दीन लड़का और उसकी बहन है। मेरे विना वे भी घबड़ाते होंगे।"

जगपालराव—"कैसा दीन लड़का और उसकी बहन? वे तुम्हारे साथ कैसे होगये"?

मालोजीने आदिसे अन्ततक सब कथा उन दोनोंकी कह सुनाई। सुनतेही उन लोगोंके हृदयमें दयाके बादल उमड़ आये और नेत्रद्वारा वर्षा होने लगी। जगपालरावने कहा "धन्य है वीर तुमको! तुमने आज वह कार्य किया है जो हम क्षत्रियोंके नामको उज्ज्वल करनेवाला है। यह वह काम है जो क्षत्रियोंकी यशःपताकाको फहरानेका एकही साधन है। इस सुकार्य और परोपकारको सुनकर मेरा हृदय प्रफुल्लित होगयाहै। इसके पारितोषिकमें मैं तुमको सिरोपाव दिये विना कदापि नहीं जाने दूँगा"।

मालोजी—"सरकार! यह आपकी कृपा है। मैंने इसको सिरपर चढ़ाया। मैंने यह काम इनाम पानेके लिये नहीं किया है केवल अपने क्षत्रिय धर्मने मुझसे स्वतः करा लिया है। आपके दर्शन होगये यही बहुत बड़ा लाभ हुआ। अब मुझे जानेकी आज्ञा दीजिये।"

जगपालराव-" नहीं २ यह होनेका नहीं है । मैं तुमको खाली हाथ कभी नहीं जानेदूँगा । ऐ वीर! अपना नाम तो बताओ । मैंभी जानना चाहताहूँ कि जिस कुलमें तुम जैसे रत्नने जन्म लिया वह कौनसा है । "

मालोजी-" सरकार ! मेरा नाम मालोजीराव है और बाबाजीराव भोंसलेका मैं पुत्र हूँ " ।

" मालोजी शब्द कानमें पडतेही सब लोग एक साथ चकितसे होगये और आंख उठाकर उसवीरकी ओर देखने लगे । इससमय औरोंकी जैसी दशा थी सो तो ठीकही थी परन्तु दीपाकी कुछ दशाही विचित्र थी। जबसे उसने मालोजीको देखा था तबहीसे उसके हृदयमें कुछ औरही भाव उत्पन्न होरहा था; अब तो नाम सुननेसे वह भाव और भी गंभीर होगया और उसके अंग २ में वैसाही आनन्द छागया जैसा कि स्त्रीको अपने पतिका नाम सुननेसे होता है । यद्यपि वह लज्जाके मारे नीचा मुँह किये बैठी थी परन्तु आंखें उसकी दौड़ २ कर उन्हींकी ओर जाती थीं मानों वह मालोजीके चेहरेमें किसी छिपी हुई वस्तुको तलाश करती हों।

जगपालराव और उनकी स्त्रीमें जो उसदिन बातें हुई थीं जगपालरावको इस समय स्मरण होआई । उन्होंने मालोजीको अपने साथ सवारीमें बिठल लिया और आगेको कूँच किया।

प्रकरण १२.

भोंसले दलकी विजय।

आज चैत्र शुक्ला १३ सोमवार है । सोमप्रदोषका शुभ अवसर है । सिंगणापुरमें आज मेलेकी पूरी बहार है । कलतक तो मेलेका चढ़ाव था, दर्शनाभिलाषी लोग आरहे थे परन्तु अब आना बन्द हो गया है, जिनको आना था सब आचुके हैं । भीड़के मारे कोहनियां छिली जाती हैं, आगे बढ़नेको जगह नहीं मिलती है, एक कदम आगे रखते हैं तो सामनेका धक्का दो कदम पीछे हटा लजाता है । पैरोंसे पैर और देहसे देह कुचलाजाता है । आवश्यक कामके लिये भी पचास कदम चलनेमें जितना कष्ट और समय लगता है उतना शायद एक मील भर जानेमें भी नहीं होता । मार्गमें दोनों ओर खासी दूकानें लगी हुई हैं । एक ओर हलवाइयोंकी ताजी जलेबी,लड्डू,खुरमे, पेड़े, बरफी, और खसता कचौरियोंकी बहारहै, तो दूसरी ओर अत्तारोंकी दूकानोंपर नारंगी, अनार, बनफशा, गुलाब, केवड़ा आदिके शरबत और अर्क भरी हुई पीले, लाल, सफेद रंगकी बोतलें चित्तको आकर्षित किये लेती हैं । आगे चलनेपर

बजाजोंकी दूकानें नजर आती हैं, जहांपर बढ़िया बढ़िया रेशमी और सूती कपड़े रंग बिरङ्ग लटके हुए हैं। कहीं पर बिसातियोंकी दूकानें शीशे, खिलौने आदिसे भरी हुई हैं। कहींपर तँबोलियोंकी दूकानोंपर मसालेदार पानोंकी बहार है, कहींपर जूही, चमेली, गेंदा, मोगरा, और गुलाब केवड़ेके गुलदस्ते और हारोंकी मनोहर बहार है और कहींपर गंधियोंकी पेटियोंसे नाना प्रकारके इत्रोंकी सुगंधि उड़ रही है।

यात्रियोंमें भी भिन्न २ प्रकारका ठाठ देखनेमें आता है। किसीके सिरपर गोल चक्रीदार पगड़ी, लम्बा अङ्गरखा, गलेसे घोंटूतक लटकता हुआ लम्बा दुपट्टा और पैरोंमें पटपटे जूते हैं, तो किसीके सिरपर तोतेकी नाक जैसी नोकदार पगड़ी शोभा देती है। किसीके सिरपर साफा, लम्बा अचकन चुस्त पाजामा और पैरोंमें हिन्दुस्थानी जूते दिखाई देतेहैं तो किसीके तनपर केवल धोती. कुरता और टोपीहीहै। इतनाही नहीं वरन् बड़ी तोंदवाले मारवाड़ी सेठोंकीभी आज इस मेलेमें कमी नहीं है परन्तु विशेष करके कमर तककी मिरजई घोंटूसे ऊपर तककी धोती और सिर पर ऊंची २ पगड़ियां और पैरोंमें चप्पल जूते वाले घाटी लोगोंका समुदाय अधिक दृष्टिगत होता है। यद्यपि इस समयकी शिक्षाने स्त्रियोंको इतना स्वतंत्र कर दिया है कि वे मेलोंमें और जिसमें भी ऐसे तीर्थ स्थानोंके मेलोंमें गये बिना नहीं रहती हैं परन्तु जिस समयका यह वर्णन है स्त्रियोंमें इस प्रकारकी शिक्षाका नाम भी नहीं था और इसीसे उनको घरसे बाहर निकलना बिलकुल पसंद नहीं था। उस समय स्त्रियां मेलोंमें नहीं जाती थीं और जाती भी थीं तो इनी गिनी वेही स्त्रियां जिनके घरवाले पुरुष वीर और साहसी होते थे।

यों तो मेला आरम्भ होनेहीके दिनसे मन्दिरमें धूमधाम रहती है परन्तु आज प्रदोष और सोमवार दोनों हैं। शैवोंके लिये बड़ेही आनन्द और उत्सवसे व्रत रखनेका दिन है। प्रातःकालहीसे आज मन्दिरकी अधिक सफाई और सजावट होरही है। फूलपानकी पुड़ियां ले लेकर आज यात्रियोंका मन्दिरमें तांता लगा हुआ है। "वं महादेव" २ के शब्दों और घण्टोंके नादसे मन्दिर गूँज रहा है। धार्मिक शैवलोग अपनी २ शक्तिके अनुसार बड़ी प्रीति और भक्तिके साथ यथाविधि कैलासवासी महादेवकी पूजा कररहे हैं, कोई ब्राह्मण अभिषेक कररहे हैं, कहीं एकादशरुद्रीका पाठ होता है और कोई "ॐ नमः शिवाय" २ के पवित्र षडक्षर मन्त्रसे भोले भण्डारीके मस्तकपर बिल्वपत्र चढ़ा रहे हैं। एक ओर करताल और खञ्जरीपर साधुओंके भजन होरहे हैं तो दूसरी ओर देहातियोंके झुण्डके झुण्ड मस्त होकर गाते और नाचते हैं। शङ्ख, सह-नाई, रनसिंगे और नक्कारखानेके शब्द कानोंकी चैलियां उड़ाये डालते हैं और "भज शङ्कर! काटे कोंं न कङ्कर" की गूँज आकाश तकको भेदे डालती है

इस तरहपर आज वड़ाही आनंद होरहा है । सच पूछिये तो मानों साक्षात् कैलास पर्वतही अपनी शोभा और छटा सहित सब सामानको लेकर यहां आगया है ।

इससमयकी यहांकी शोभा और महिमा देखकर सांसारिक मायाजालमें फँसे हुए मनुष्यका भी वहांसे जानेको मन नहीं होता है और विषयासक्त जन भी अपनी विषय वासनाओंको भूलकर यही चाहते हैं कि अंगमें विभूति लगाकर सौंटा लंगोटा धारणकर वहीं पर अपना आसन जमालें और उस आक अहारी मदनारि सदा शंकरकी सेवामें अपनी शेष आयु व्यतीत करें ।

पाठको ! इस आनन्दमय स्थानको छोड़कर इधर उधर भटकते फिरनेकी इच्छा तो मेरी भी नहीं होती परन्तु अपने कर्तव्यवश विवश होकर आगे बढ़ना पड़ता है । अच्छा तो ! आईये मेरे साथ ! अब जरा पहलवानोंकी कुश्ती भी तो देखलीजिये । यह तो मैं ऊपर लिखही चुकाहूँ कि इस मेलेमें पहलवानोंके कई दल आते हैं । देउलगांवका भोंसला दल, निंबालकर दल और इसी तरह पर एक दो चार और भी दल इस मेलेपर एकत्रित हुए हैं । आज सब पहलवानोंके लिये अपने २ मनकी इच्छा पूर्ण करने, परस्पर कुश्ती लड़ने और अपने २ पराक्रमकी परीक्षा देनेका दिन है । महादेवके मन्दिरसे २००।२५० गजके अन्तर पर एक बड़ा अखाड़ा बना हुआ है । अखाड़ेके चारों ओर देखने वालोंकी भारी भीड़ लगी हुई है और बीचमें बड़े २ पहलवान कछनी काछे, सारे शरीरमें पीली मट्टी लगाए घूमते हैं । इधर हमारे वीर मालोजी भी एक दो साथियों सहित अखाड़ेमें डटे हुए हैं और जगपालरावका निंबालकरी दल भी अपनी वीरता दिखानेको प्रस्तुत है । बस अपनी अपनी पसन्दकी जोड़ बना बनाकर कुश्ती होना आरम्भ होगया है । कोई हारता और कोई जीतता है । इस तरह पर कई कुश्तियां हुईं । भोंसले अखाड़ेके वीरोंसे अन्यान्य अखाड़ेवालोंकी लग भग १० कुश्तियां हुईं परन्तु परमात्माकी कृपासे इस अखाड़ेवालेकी एकमें भी हार न हुई । यह देखकर पहलवानोंके छक्के छूट गये और हमारे वीर मालोजीसे कुश्ती करनेका किसीका भी साहस न हुआ । यद्यपि जगपालरावको अपने बलका बड़ा अभिमान था और मालोजीसे कुश्ती लड़नेहीके मुख्य अभिप्रायसे वह इस मेलेमें आये थे परन्तु साक्षात् अंजनी सुत, वायुपूत सुग्रीव सहायक, लंकिनी प्राणघातक, बाल ब्रह्मचारी, मंदराचल धारी, समुद्रको लांघने वाले, लंकाको जलानेवाले पहलवान हनुमानके समान उनका देह देखकर उन्होंने अपना विचार छोड़ दिया । मालोजीके अखाड़ेमें धनाजी राव नामक एक पहलवान था । जब और सब निपट चुके और अपने दिलका

अरमान निकाल चुके तो धर्माजी और अन्यदलके सर्जेराव नामक एक पहलवानकी कुश्ती हुई। इस जोड़में दोनों वीर समान थे। उनमेंसे न एक हारता था न दूसरा। दोनों ओरसे पेंचपर पेंच और काटपर काट लगते थे। कभी एक ऊपर आता था और कभी दूसरा ऊपर होजाता था। कभी धर्माजीके जीतनेकी आशा होती थी और कभी सर्जेरावके। इस तरह एक घंटे तक दोनोंमें कुश्ती चलती रही परन्तु उनमेंसे कोई भी एक दूसरेको चित्त न कर सका। अंतमें दोनों अलग हुए। आजकलके पहलवानोंमें ऐसा देखा जाता है कि ऐसे अवसरपर एक दूसरेको पूरी चोट पहुंचानेका यत्न करता है परन्तु उनमेंसे किसीमें भी यह बात नहीं थी। ज्योंही दोनों जुदे हुए सर्जेरावने धर्माजीके स्वभाव, गुण, चपलता और मल्लविद्यामें कुशल होनेकी प्रशंसा करना आरम्भ किया। उस समयके सर्जेरावके शब्द सुनने और उसका ढंग देखनेसे प्रतीत होता था कि वह किसी अच्छे घरानेका आदमी है और उसके सरलस्वभाव तथा निरभिमान होनेका पूरा उदाहरण मिलता था। सर्जेराव देखनेमें भी बड़ा सुन्दर और कांतिवान जान पड़ता था और उसकी सूरत बड़ी मनमोहनी थी।

जब सब लोग कुश्ती करचुके और मालोजी योंही रहगये, उनसे भिड़ने वाला कोई न मिला तो उन्होंने जगपालराव, धर्माजी और सर्जेरावसे कुश्ती करना ठहराया और चारों मित्रभावसे आपसमें लड़ने लगे। इससमय उनकी शोभा देखने लायक थी। सब लोग देखनेवाले ताली बजा २ कर हंसते और तारीफ करतेथे।

पहलवानोंकी कुश्ती देखने जगपालरावकी स्त्री और दीपा भी आई थी। एक ऊंचेसे स्थानपर बैठकर ये मल्लोंकी कुश्ती देखती थीं। उनके पास रमाभी बैठीथी। इन चारोंकी कुश्ती देख २ कर ये तीनों स्त्रियां भी आपसमें हंसती और दिल्लगी करती थीं। जगपालरावकी स्त्री अपने पति को देख २ कर प्रसन्न होती और उसकी चतुराई कीप्रशंसा करतीथी और उधर दीपा मालोजीको और रमा सर्जेराव को देख २ कर मनही मनमें प्रसन्न होतीथी। यद्यपि प्रगट रूपसे ये दोनों ही अपने मनकी बात कह नहीं सकती थी परन्तु उनके मुख, आंख और बातों के ढंग से मनकाभाव प्रकट हुआ जाताथा। इन तीनोंका ध्यान तीनोंमें लगा हुआ था, तीनोंही तीनोंको बड़ी बारीकी और प्रेमके साथ देख रही थीं और तीनोंको एक दूसरीके चित्तका हाल भली भांति विदित हो गयाथा।

जब सायंकाल होगया तो सब लोग अपने २ डेरोंको चल दिये, कुश्ती बंद होगई और मालोजी को सब लोगोंके प्रशंसा करनेसे मल्लयुद्धमें उत्तीर्ण होनेका जबानी सार्टीफिकिट मिलगया।

प्रकरण १३.

सगाई ।

मालोजीकी वीरता अबतक तो सब लोग कानोंहीसे सुनते थे परन्तु अब भैंसेको पकड़ने, रमा और संभाजीके प्राण दुष्ट मुसलमानोंके हाथसे बचाने और कुश्तीकी सफाईको देखनेसे सबको उनके गुणोंका पूरा विश्वास होगया। निंबाल कर नायक जगपालरावके साथ जितने मनुष्य थे सब आपसमें यही कहते थे कि वर तो दीपाहीके योग्य है और जगपालरावकी स्त्रीके भी यही बात गलें उतर गई थी। सबतरहसे बात पक्की होगई थी कि दीपाका संबन्ध मालोजीसेहीं कर देना चाहिये। जगपालराव भी इसमें सहमत थे परन्तु रोक केवल इतनीही थी कि मालोजीके पास द्रव्य नहीं था और वह निंबालकर नायककी टक्कर सहनेमें असमर्थ थे. वास्तवमें बात भी ठीक थी. क्योंकि कहा है कि:-

श्लोक—यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः स पंडितः स श्रुतिमान् गुणज्ञः ।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ते ॥

अर्थात् जिसके पास धनहै वही मनुष्य कुलीन है, वही पंडित है, वही बहुश्रुत है, वही गुणवान् है; वही वक्ता है और वही दर्शनीय है। इसतरह पर द्रव्यही में सब गुण हैं परन्तु मालोजी की वीरता, डौल डौलकी सुन्दरता और स्वभावकी सरलताने सब लोगोंके हृदयमें ऐसा घर करलिया था कि उसके आगे दूसरी बात चलही नहीं सकतीथी. इतना होनेपरभी जगपालराव इसके विरोधी थे.

अवसर पाकर जगपालरावकी स्त्री अपने पतिके पास गई और बोली "प्राण नाथ! महादेवने कैसी कृपा की है! हमारा यहां आना सुफल होगया. अब बाईजीकी सगाई मालोजीसे करदेना चाहिये. ऐसा वर दूसरा नहीं मिलैगा"

जगपालरावने उत्तर दिया "बात तो ठीक है. सब तरहसे जोड़ी अच्छी मिलगई है परन्तु एक बड़ी कठिनता यह आन पड़ी है कि मालोजी हमारे घरके लायक नहीं हैं. वह हमारी टक्कर नहीं सह सकते. ऐसे गरीब घरमें लड़की देना उचित नहीं है."

स्त्रीने कहा "स्वामी! आपका कहना ठीक है. वर तो अवश्यही गरीब है और हमारी समानता नहीं कर सकता परन्तु वर तो मोतीकासा दाना है। उसको देखकर आंखैं ठंडी होती हैं. लड़की वरको देना है घरको नहीं. वर अच्छा और सुपात्र होगा तो घर भी हो जायगा. वर और घर दोनों एकसां मिलते नहीं हैं. इस पर भी एक यह बात है कि आजकल घरको तो लूटने

वाले बहुत हैं। कोई सुखी होकर नहीं रह सकता परन्तु जो वीर है वह सुखसे रह सकता है. इस लिये मेरी तो यही प्रार्थना है कि इस अवसरको हाथसे नहीं जाने देना चाहिये."

जगपालरावने उत्तर दिया "तुम्हारी सलाह सब तरहसे उचित है परन्तु ...."

स्त्रीने बीचमेंही बात काटकर कहा "और यह भी तो देखिये! अब बाईजी १३।१४ वर्षकी हो गई हैं. अधिक दिन तक अब उनको घरमें रखना ठीक नहीं है. आप जानते हैं समय कैसा खराब है। ऐसेमें सुस्ती करना अच्छा नहीं है! जो कहीं विचाराविचारमें यह वर हाथसे निकल गया तो फिर कठिनाई पड़ेगी"

जगपालरावने उत्तर दिया "अच्छा तो घर चलकर विचार करेंगे"

स्त्रीने हाथ जोड़कर कहा "नाथ! मुझको आपसे अधिक हठ तो नहीं करना चाहिये परन्तु आप जानते हैं कि मनुष्यकी खबर पास रहनेवालों-हीको पड़ती है। आप पुरुष ठहरे इस लिये इस विषयमें अधिक नहीं जान सकते परन्तु मुझको आठ पहर चौंसठ घड़ी बाईजीके पास रहना पड़ता है। अब वह पूरी स्त्री बनगई हैं इसीसे मैं इतना आग्रह करती हूं। अब देर करना ठीक नहीं है। कहावत प्रसिद्ध है कि "काल करै सो आजकर, आज करै सो अब। औसर बीतो जात है, फेर करैगो कब।"

यजमानसेवी लक्ष्मण भट्ट भी मालोजीके विवाहकी चिंतामें ही था। यह अवसर देखकर वह भी निंबालकर नायकके पास जानेको तैयार हुआ और ठीक जिस समय जगपालराव और उसकी स्त्री परस्परमें ये बातें कर रहे थे वहां जा पहुंचा। भट्टजीको देखतेही जगपालराव खड़ा होगया और प्रणाम करके बोला "महाराज! आज तो बहुत दिनोंमें दर्शन दिया?"

भट्टजीने आशीर्वाद देने उपरांत उत्तर दिया "यजमान! क्या करूं? आप जानते हैं ब्राह्मणोंकी वृत्तिही इधर उधर फिरनेकी है। सरकारकी सेवामें आनेका विचार तो बहुत दिनसे था परन्तु कई आवश्यक कार्योंसे आना न बनसका।"

इतनेहीमें उधरसे दीपा भी आन पहुँची और बोली "महाराज! आप तो कभी दर्शनही नहीं देते? शायद ब्याह करानेमें लगे होंगे? आजकल तो चारों ओर बड़ी धूमधाम है। जिधर देखो उधरही दूलह और दुलहिन दिखाई देती हैं और चारों ओर गाने बजानेकी आवाज आती है। शायदही कोई अभागा मनुष्य इस साल कुँआरा रहैगा नहीं तो सबही ब्याह जायँगे। महा-राज भट्टजी! क्या नई खबर लाए?।"

भट्टजीने उत्तर दिया "बाईसाहब! आपहीकी सगाईकी खबर लायाहूँ।"

सगाईका नाम सुनतेही दीपा लज्जाके मारे शिर नीचा कर वहांसे खसक गई । लक्ष्मण भट्ट तो इस कामके लिये आयाही था । सहजहीमें उसको इस विषयकी छेड़ छाड़ करनेका अवसर मिल गया । जगपाल-रावकी ओर मुँह करके उसने कहा " अन्नदाता ! बाईसाहबके विवाहका क्या विचार किया ? ।"

जगपालरावने उत्तर दिया " भट्टजी ! क्या कहूँ बड़ा विचार पड़रहा है; कोई योग्य वर नजर नहीं आता । वर अच्छा मिलता है तो घर नहीं और वर मिलता है तो घर नहीं । आप चारों ओर घूमते रहते हैं । कोई अच्छा घर और वर आपकी दृष्टिमें हो तो बताइये ।"

" मेरी दृष्टिमें तो बाबजीरावका बड़ा पुत्र मालोजी अच्छा है ।" भट्टजीने उत्तर दिया । "उसकी वीरता और पराक्रम तो आप देखही चुके हैं फिर मेरे कहनेकी क्या आवश्यकता है. मैं तो जानता हूँ उसके बराबर आपको दूसरा वर नहीं मिलेगा. "

जगपालरावने कहा " आपका कहना ठीक है. वास्तवमें वह है तो वीर और पराक्रमी परन्तु घर जरा बराबर नहीं है इसीका विचार है क्योंकि आज-कल पैसाही मुख्य वस्तु है. "

भट्टजीने उत्तर दिया " अन्नदाता ! बात तो ठीक है ! धन होना आव-श्यक है परन्तु वरके योग्य सब गुण भी तो होना चाहिये. देखिये:-

श्लोक-विद्याशौर्यधनाश्रयो गुणनिधिः ख्यातो युवा सुंदरः ।
स्वाचारः सुकुलोद्भवो मधुरवाग्दाता दयासागरः ॥
भोगी भूरिकुटुम्बवान् स्थिरमतिः पापाविहीनो बली ।
जामाता परिवर्णितः कविवरैरेवंविधः सत्तमः ॥

अर्थात् जो विद्यावान हो, शूरहो, धनवान हो, गुणवान हो, प्रख्यात हो, युवा हो, सुंदर हो, सदाचारी हो, अच्छे कुलमें उत्पन्न हुआ हो, मधुर भाषी हो, दाता हो, दयावान हो, भोगी हो, बड़े कुटुम्बका हो, स्थिरमति हो, पाप रहित हो, बली हो, उसीको जामाता अर्थात् दामाद बनाना चाहिये. इस श्लोकके सब गुण उसमें मिलते हैं केवल धन अधिक नहीं है तो क्या हुआ. "

जगपालरावने कहा " भट्टजी ! आपका कहना मैंने माना परन्तु 'टका बिन टकटकायते' यह भी तो कहावत किसीने समझकरही बनाई होगी.

लक्ष्मण भट्टने कहा " सुनिये यजमान ! आपका कहना ठीक है परन्तु धनसे भी विद्या आवश्यक है । देखिये:-

दोहा-धनतें विद्याधन बड़ो, रहत पास सबकाल ।
देइ जितो बाढ़ै तितो, चोर न लेइ नृपाल ॥

और विद्याके साथ विवेक भी होना चाहिये । देखिये:-

दोहा–विद्या बिना विवेकके, बहु उद्यम बिनु अर्थ।
धर्म बिना वैराग्यके, मनुज बुद्धि बिनु व्यर्थ॥ ”

यहां पर मुझको एक धनवान मूर्ख ब्राह्मणकी कथा स्मरण आगई है:–

“ काशीपुरीमें एक धनदास नामक धनवान ब्राह्मण रहता था उसने अपने इकलौते पुत्र लक्ष्मीदासको पढ़ानेका और गुणवान बनानेका बहुतही यत्न किया परन्तु सफलता न हुई, जब वह उसको झुड़कता या मारता तो उसकी स्त्री कहती वाहजी ! तुम मेरे लड़केको क्यों मारते हो ? पढ़ना तो गरीब आदमीके लिये है मेरा लड़का ऐसा धनवाला है कि बहुतसे पढ़े लिखे उसकी तलुआ चाटेंगे। तात्पर्य यह कि बिचारे धनदासका कुछ वश न चला और लक्ष्मीदास मूर्खही रहगया। एक दिन धनदासने अपने लड़केको खाली बैठा देखकर कहा ‘ सांसारिक व्यवहारके मैं तुझे दश नियम बताता हूँ, इनको याद रखकर यदि तू काम करैगा तो बड़ा लाभ होगा’ सुन (१) उद्योगः पुरुष लक्षणं अर्थात् उद्योग करनाही पुरुषका लक्षण है। (२) भार्या रूपवती शत्रुः। अर्थात् रूपवती भार्या शत्रु है। (३) शत्रोश्च हननं कुर्यात् अर्थात् शत्रुको मारनाही चाहिये। (४) स्त्रीवधः सर्व घातकः अर्थात् स्त्रीको मारना महापाप है। (५) नासिका मुख मण्डनं, अर्थात् मुखकी शोभा नाक है। (६) पञ्चभिः सह गन्तव्यं, अर्थात पञ्चोंके साथ जाना चाहिये। (७) इष्टैश्च सह भुज्यतां, अर्थात् इष्ट मित्रोंके साथ भोजन करना। (८) सतां सप्तपदे मैत्री, अर्थात् सत्पुरुषोंके साथ सात कदम चलनेसेही मित्रता हो जाती है। (९) रिक्तपाणिर्नपश्येत राजानं देवतां गुरुम्, अर्थात राजा देवता और गुरुसे खाली हाथ न मिलना चाहिये और (१०) यथा राजा तथा प्रजाः। अर्थात् जैसा राजा वैसाही प्रजा। लक्ष्मीदासने इन दशों बातोंको कागजपर लिखकर अपने पास रख लिया और अब उनके अनुसार काम करना आरम्भ किया। कुदाली हाथमें लेकर वह अपने आंगनमें पहुँचा और लगा खोदने। पिताने पूछा “ क्या करता है ?” लक्ष्मीदासने कहा “ उद्योग ” खैर उससमय तो उसको डाट डपटकर रोक दिया; परन्तु प्रत्येक काममें वह इसीतरह करता था। उसकी स्त्री बड़ी सुन्दर थी, जब वह उसके घर आई तो लक्ष्मीदासने विचारा कि “ भार्या रूपवती शत्रुः ” इस वाक्यके अनुसार यह शत्रु है इस लिये “ शत्रोश्च हननं कुर्यात् ” इस वाक्यके अनुसार इसको मारना चाहिये परन्तु साथहीमें “ स्त्रीवधः सर्वघातकः ” इस वाक्यके अनुसार स्त्रीको मारनेका बड़ा पाप है इस लिये क्या करना चाहिये इतनेहीमें उसको फिर “ नासिका मुखमण्डनम् ” यह वाक्य याद आगया। इस लिये तुरन्त उसने अपनी स्त्रीकी नाक काट डाली। अब तो घरमें बड़ी गड़बड़ मचगई और चारों ओरसे चिल्लाहट पड़गई। इसपर क्रुद्ध होकर धनदासने सारे कपड़े उतार लिये

और उसे घरसे निकाल दिया। इस तरह घरसे निकाले जानेपर लक्ष्मीदासके पास केवल एक धोती और वह परचा जिसपर पिताके लिखाए हुए दसवाक्य लिखे थे रह गया. ज्योंही वह घरसे निकला और उसने उस परचेकी ओर दृष्टि की तो उसके छठे वाक्य " पश्चभिः सह गन्तव्यम् " पर उसकी नजर पड़ी। दैवयोगसे उसीसमय एक मुरदेको लिये हुए पांच मनुष्य जा रहेथे उन्हींके साथ वहभी होगया। जब वह स्मशानमें पहुँचा तो उसको भूखलगी, परन्तु अब खावे क्या ! ईश्वर कृपासे उसकी कमरमें एक पैसा निकल आया उसीके वह चने खरीद लाया और खानेको तैयार हुआ, परन्तु इतनेहीमें उसने फिर उस परचेकी ओर देखा तो उसके सातवें वाक्य " इष्टैश्च सह भुज्यतां " पर उसकी दृष्टि पड़ी। बस उसीके अनुसार कुछ चने लेकर वह उन मुरदा लानेवाले पांचों मनुष्योंके पास गया और कहने लगा " लो मित्रो जरा खा तो लें " यह सुन उन लोगोंको बड़ा क्रोध आया और वे डपटकर बोले " तू भी बड़ा मूर्ख है। क्या यह समय खानेका है ? यह तो रोनेका समय है यहांपर खानेका क्या काम ? चल हट यहांसे हम तुझसे कब मित्रता करने गये थे सो हमको मित्र बनाता है ? लक्ष्मीदासने उत्तर दिया " मेरे बापने मुझको सिखलाया है कि " सतां सप्तपदे मैत्री " अर्थात् सत्पुरुषोंके साथ सात कदम चलनेसेही मित्रता होजाती है फिर तुम तो मेरे साथ इतनी दूरतक चले हो तब कैसे मित्र नहीं होसकते ? शास्त्र तो तुम पढ़े नहीं हो और मुझको मूर्ख बताते हो " लक्ष्मीदास वहांसे आगे बढ़ा और राजाके दरबारमें जानेके विचारसे ड्योढ़ीपर गया; वहां पर ब्राह्मण जानकर उसको किसीने न रोका और वह दरबारमें पहुँचा। वहां पहुँचतेही उसने धोती खोलकर हाथमें लेली और नङ्गे होकर राजाको आशीर्वाद दिया। उसकी ऐसी बेअदबीसे क्रुद्ध होकर राजाने कहा " क्योंरे मूर्ख नङ्गा होगया ? " लक्ष्मीदासने भी कहा " क्योंरे मूर्ख, नङ्गा होगया ? " अब तो राजाको बड़ीही हँसी आई और वह खिल खिलाकर हँसपड़ा; राजाको हँसते देखकर लक्ष्मीदास भी खूब हँसपड़ा। अन्तमें राजाने दो मनुष्योंको आज्ञा देकर उसके दोनों हाथ पकड़वा लिये और मारनेकी धमकी दी तब उसके होश ठिकाने आये और वह बोला " पृथ्वीनाथ ! मुझको क्यों पिटाते हो ? " राजाने कहा " तू यहां नङ्गा होकर क्यों आया ? " उसने उत्तर दिया " मेरे बापने मुझसे कहा है कि 'रिक्तपाणिर्न पश्येत राजानं देवतां गुरुम् " परन्तु मेरे पास हाथमें लेनेको कुछ था नहीं तब क्या करता ?' राजाने पूछा " अच्छा तो तू मेरी नकल क्यों करता था ? " उसने उत्तर दिया "साहब ! मेरे बापने सिखाया है कि " यथा राजा तथा प्रजाः " इसीसे आप हँसे तो मैं भी हँस दिया " इतनेपरसे राजाने समझ लिया कि यह कोई मूर्ख है और पिताके सिखलाए हुए उपदेशोंका ठीक अर्थ

नहीं समझता है इससे उसे छोड़ दिया। वहांसे चलकर लक्ष्मीदास अपने पिताके पास आया और आंखें चढ़ाकर बोला "बाहजी! तुमने तो कहा था कि इन नियमोंके अनुसार चलनेसे बड़ा लाभ होगा; परन्तु वहां तो लाभके बदले मुझको बड़ी हानि सहनी पड़ी"।

इतना कहकर उसने अपनी सारी रामकथा कह सुनाई, सुनकर सब लोग हँसीके मारे लोट पोट होगये और उसकी मूर्खताकी निन्दा करने लगे। "इस लिये मेरी समझमें तो आप बाईजीकी सगाई मालोजीसे कर दीजिये। घर गरीब है तो कुछ चिन्ता नहीं परन्तु वर सर्वोत्तम है ऐसे धनी निरे मूर्खसे तो गरीब बुद्धिमानही अच्छा है।

अबतक तो जगपालराव बड़ा कड़ा पड़ा हुआ था और किसी तरह बात उसके गले नहीं उतरती थी; परन्तु लक्ष्मणभट्टका कहना ऐसे ढङ्गका निकला कि वह तुरन्तही उसके कलेजेमें बैठगया और भट्टजीका मनोरथ सिद्ध होगया। उसी समय जगपालरावने मालोजीको बुलाया और नियमानुसार सगाईका सब दस्तूर कर दिया।

यह खबर सुनकर मालोजीकी माताको बड़ी प्रसन्नता हुई और उसके साथवाले सब लोगोंको भी बड़ा हर्ष हुआ। उस समय वहां पर ऐसा कोई मनुष्य नहीं था जिसको इस हर्ष सम्वादसे आनन्द न हुआ हो; परन्तु प्रत्येक मनुष्यका हर्ष भिन्न भिन्न प्रकारका था। दीपा और मालोजीको अच्छी जोड़ी मिलनेका हर्ष था, जगपालरावको अपने शिरका बोझा उतरनेका हर्ष था, लक्ष्मण भट्टको अपने यजमानका घर मँडने और अपनेको यश मिलनेका हर्ष था, जगपालरावकी स्त्रीको दीपाका दुःख दूर होनेका हर्ष था, निम्बालकर नायकके साथवाले लोगोंको विवाहमें अच्छे अच्छे पदार्थ खानेको मिलनेका हर्ष था, रमाको अपने धर्मभाईके विवाहमें नेगचार मिलनेका हर्ष था और मालोजीके साथवाले लोगोंको अपने इष्ट मित्र मालोजीके विवाहित होनेका हर्ष था। इस तरह पर हर्ष तो सबहीको था; परन्तु बुढ़िया पटेलिनका हर्ष कुछ औरही प्रकारका था। वास्तवमें जैसा हर्ष उसको था और किसीको नहीं था। लक्ष्मण भट्टके मुँहसे सगाईकी खबर सुनतेही पटेलिन 'हैं! मेरा मालू चोपगा होगया ?' कहकर एकसाथ हर्ष विह्वल होगई और उसकी आंखोंसे प्रेमाश्रु बह निकले।

पटेलिनने सगाई तो स्वीकार करली परन्तु अब यह प्रश्न उठा कि इतना खर्चा कहांसे आवेगा। वास्तवमें बात भी सच्ची थी क्योंकि एक साधारण जमीन्दारकी क्या मूँदी कि एक छोटेसे राजाकी भी बराबरी कर सके? परन्तु उसी समय पुण्डे नायकने ५०००) रुपये तककी रकम उधार देना स्वीकार

कर लिया और इस तरहसे काम बनगया । उसी समय दोनोंकी जन्मपत्रियां मिला मिलाकर वैशाख शुक्ला २ रविवारको लग्न स्थिर होगया और सब तरह बात पक्की होगई ।

इस तरह पर जगपालराव अपनी बहन और स्त्री सहित अपने स्थानको रवाना हुआ और मालोजी अपनी माता और भाई आदिके साथ रमा और सम्भाजीको लेकर देवलगांवकी ओर चले ।

प्रकरण १४.

विवाह और स्त्रीसुख ।

आज वैशाख शुक्ला द्वितीया रविवार है दीपाके लग्नका शुभ दिन है, निम्बालकर नायकके यहां विवाहकी धूमधाम होरही है, महल अभ्रक मिश्रित चूनेसे पुताए गये हैं जिससे प्रातःकालके सूर्यकी बाल किरणें उनपर पड़कर महलके ऊपरी भागको ऐसा चमकाती हैं कि वह चांदीका बना मालूम होता है, बीच बीचमें रङ्ग बिरङ्गे छज्जे दिखाई देते हैं; दासियां बढ़िया बढ़िया वस्त्रोंसे सुसज्जित होकर मङ्गलगान कररही हैं, दरवाजोंके ऊपर नक्कारोंपर चोबों(डण्डों) के पड़ाके पड़ रहे हैं, साथ साथमें शहनाई अलगही बधाइयोंकी तानें उड़ा रही हैं, महलोंके आंगनमें एक बढ़िया मण्डप बनाया गया है जिसमें रङ्ग बिरङ्गे चँदवे और परदोंकी बहार आंखोंको खींचे लेती है और बड़े बड़े झाड़ फानूश तथा हांडी गोले अपना अपना नखरा जुदाही बता रहे हैं । मण्डपके चारों ओर हरे हरे पत्तों और रङ्ग बिरङ्गे पुष्पोंसे लदे हुए झाड़ोंके गमले इस सुन्दरताके साथ सजाए गये हैं कि वह मण्डपही एक सुन्दर बाग बनगया है । चारों कोने पर चार ठण्डे पानीके फव्वारे छूट रहे हैं जिनसे पानीके कणोंको और पुष्पोंसे सुगन्धिको चुराकर वैशाख मासका अति उष्ण पवन "पराए धन बोहरा" बना हुआ लोगोंके चित्तको प्रसन्न और शान्त करके ऐसा यश लूट रहा है मानों एक महाकञ्जूस मनुष्य पृथ्वीमें गड़ा हुआ पराया धन प्राप्तकर 'औरोंके घर लक्ष्मीनारायण' करने अथवा शत्रुका माल उड़ानेमें अपनी उदारता दिखला रहा हो और अपने पाससे एक फूटी कौड़ी भी खर्च किये विना नाम पालेना यत्न कर रहा हो ।

नगरमें भी आज बड़ा आनन्द फैला हुआ है । सब नर नारी फूले अङ्ग नहीं समाते हैं और अच्छे अच्छे वस्त्र आभूषण पहनकर इस तरहपर इधर उधर फिर रहे हैं मानों आज उनकेही घरमें विवाह है । मकान सफेद कलईसे पुते हुए हैं, आंगन हरे गोबरसे लिपे हुए हैं और छतोंपर लाल ध्वजाएँ फहरा

रही हैं जिससे ऐसा प्रतीत होता है मानों निर्जीव मकान भी श्वेत अङ्गरखा और लाल पगड़ी बांधकर हरे मखमली जूते पहने हरे हरे पत्तों और पुष्पोंकी वन्दनवार रूपी गलेमें हीरे पन्ने और मोतियोंकी माला धारण कर विवाहकी खुशीमें जीवधारी मनुष्य बन गये हैं। बाजारोंकी भी यही दशा है। बजाजोंने सुन्दर सुन्दर रेशमी तथा रङ्ग बिरङ्गे वस्त्र निकाल निकाल कर दूकानोंके आगे लटका दिये हैं, हलवाइयोंने अपने बरतनोंको खूब मलकर भांति भांतिकी मिठाइयोंसे भर दिये हैं। तम्बोलियोंने चूने और कत्थेके पानोंको स्वच्छ करके इलायची, लौंग तथा सुपारी आदि तैयार कर रक्खी है। रङ्गरेजोंने दुरङ्गे और चौरङ्गे वस्त्र तैयार करके दूकानोंमें रख छोड़े हैं। सर्राफोंने सोने और चांदीके उज्ज्वल आभूषण सजा रक्खेहैं तथा प्रत्येक दूकानदारने अपनी अपनी दूकानको खूब ठाठ बाठसे सुशोभित कर रक्खा है। जिधर नजर पहुँचती है उधरही सफेद, लाल, पीला, और हरा रङ्ग दिखाई देता है; परन्तु बिचारे काले रङ्गको आज देशनिकाला होगया है और तो क्या काले रङ्गकी अफीमतक बिकना आज बन्दहै। इस तरह पर हाट, बाट, बाग, बगीचे, सड़क, बाजार, गली, कूँचे, टोल, मोहल्ले, घर, आंगन, नर, नारी, बाल, वृद्ध सबही सुशोभित और आनन्दित होरहे हैं। आनन्द तो होरहा है परन्तु साथमें भय भी लगा है। योंही यवनोंका सदा भय रहता है जिसमें भी ऐसे अवसरपर तो लुटेरे मुसलमान अपना स्वभाव बताये बिना कभी रहतेही नहीं हैं। इसी कारण प्रत्येक मनुष्यका दिल भीतरसे धड़कता जाता है कि कहीं ऐसा न हो कि लुटेरे आकर लूट मार करने लगैं। निम्बालकर नायकने इसी भयको दूर करनेके लिये नगरके चारों ओर ५०० सिपाहियोंका घेरा लगवा दिया है।

इधर मालोजीकी बरात भी धूमधामसे आ रही है। गाड़ियोंमें भरेहुए स्त्री पुरुष चले आ रहे हैं, साथमें घोड़ोंकीभी कमी नहीं है, बरातियोंमें किसीके लम्बा अङ्गरखा और सिरपर पगड़ी है, किसीके पायजामा और कुरता है और किसीके शिरपर साफा बँधा हुआ है, किसीके हाथमें तलवार है तो किसीके पास बन्दूक है, किसीने हाथमें भाला लिया है तो किसीके हाथमें तीर और कन्धेपर तरकश लगा है, किसीकी कमरमें कटार लगा है तो किसीके हाथमें केवल लट्ठही मौजूद है, कोई घोड़ेपर सवार है, कोई गाड़ीमें स्थित है तो कोई पैदलही चलरहा है, कोई साधारण बनियाई ठाठमें है तो कोई तीसमारखां बने हुए हैं, कोई बातें करते हैं तो कोई हँसते हैं, कोई अलगोजा और झांझ मृदङ्ग बजाते हैं तो कोई गातेही हैं। इस तरहपर सब बराती लोग झूमते झामते, हँसते हँसाते, खेलते कूदते औरमौज करते हुए चले आ रहे हैं, तब बरातीके लँगोटिये मित्र मालोजीको हँसी करते आते हैं।

इस तरहपर बरात सायङ्कालके समय वहां पहुँची तो नियमके अनुसार अगुवानी कीगई और बरात नगरमें घुसी। इस समय बाजार और दूकानोंपर मनुष्योंकी इतनी भीड़ थी कि, यदि थाली फेंकी जाय तो अधरही रह जाय। उधर दूकान और मकानोंकी छतपर झुण्डके झुण्ड स्त्रियोंके रङ्ग विरङ्गे वस्त्रोंसे सुशोभित और मङ्गलगान करतेहुए जमे थे और वर राजाको देखनेके लिये आतुर होरहे थे, क्रम क्रमसे चलते हुए ज्योंही बरात बीच बाजारके पहुँची तो वरको देखकर लोग बड़े प्रसन्न हुए और कहने लगे "वाह वाह क्या कहना है? जोड़ी तो अच्छी मिली है। आजतक मालोजीकी जैसी प्रशंसा सुनी जाती थी वैसेही सूरत भी पाई गई।" इसी तरह चारों ओरसे प्रशंसा पातेहुए मालोजीकी बरात महलोंके पास पहुँची तो द्वारपर टामन, टोमन, जादू टोना तथा आर्त्ती उतारनेकी स्त्रियोंवाली रीति कीगई और वरराजा मण्डपमें पहुँचे। शास्त्रकी आज्ञाके अनुसार गणपति पूजन आदि शुभ क्रियाएँ होने लगीं। जब सब काम होचुके तो मङ्गलोच्चारकी पारी आई। एक पण्डितने यह आशीर्वचन पढ़ाः—

गङ्गा गोमति गोपतिर्गणपतिः गोविन्दगोवर्द्धनो,
गीता गोमय गोरजो गिरिसुता गङ्गाधरो गौतमः।
गायत्री गरुड़ो गदाधर गया गम्भीरगोदावरी,
गन्धर्वो गृहगोपगोकुलगणः कुर्यात् सदा मङ्गलम् ॥ १ ॥

तो दूसरे एक शास्त्री युवाने यह पढ़ाः—

मोटें दोंद कटीं फणीन्द्र वरवा भाळीं शशी शोभतो,
हस्तीं अङ्कुश लड्डु पद्म परशू दन्तीं हिरा झळकतो।
पांई पैंजण घागरी रुणझुणी प्रेमें वरा नाचतो,
ऐसा देव गणेश तो वधुवरां कुर्यात् सदा मङ्गलम्।

तुरन्तही हमारे रामभट्ट मसखरे बोल उठेः—

लाओ भांग बनाय धोय जलसों, पीसो भली भांतिसों;
डारो मिर्च बदाम केशर बहू, गोली करो ध्यानसों।
गङ्गाजल भरिपात्र शक्कर सहित, छानो बड़े ज्ञानसों;
पीकर ताहि सुमस्त रहो तुम सदा, कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥ २ ॥

इतनेहीमें एक स्त्रीसे न रहा गया; वह भी बोल उठीः—

ल्यावे भांग बहू नशी विषभरी, सेके रुडा पानमां।
धोई स्वच्छ करै जरा सुकाविने, घोटे घणी वारमां।
नाखे मिर्च बदाम एलचि सदा, पीधे सहू सायमां।
एवो प्राणपती अल्पोज सुजने, कुर्यात सदा मङ्गलम् ॥ ३ ॥

इस गुजराती कविताको सुनकर सबलोग खूबही हंसे और सारे मंडपमें कहकहा मचगया. लग्नकाल आनेपर दीपा और मालोजीका हस्त मिलाप हुआ और सब शास्त्रोक्त विधि होचुकनेपर वर वधूको अन्तःपुरमें पहुँचाया गया. अब तो लगी सब स्त्रियां हंसी दिल्लगी करने. एकने पूछा " आठ पहर चौसठ घड़ी, त्रिया रहे पुरुषपर चढ़ी " १ दूसरीने पूछा—

त्रिया एक पलंग पर सूतै, अपने खसमके सिर पर मूतै ॥
मूतत खसम बहुत सुखपावै, पंडित होय सो अर्थ बतावै ॥ १ ॥

तीसरीने पूछा—

दोहा—नसैं दिखाई देतहैं, इक तिरिया बलहीन ॥
चट आई पट पड़गई, पीय गोदमें लीन ॥ २ ॥

चौथी बोली—

दोहा—नारीमें नारी बसै, नारीमें नर द्वीप ॥
ता नर बिच नारी बसै, बिरला बूझै सीप ॥

इतनेहीमें पांचवीं पूंछ उठी—

आठ मास मैकेमें रहूं, लागत कातिक मैं पिय चहूँ ॥
जब मैं हंसों मोर पिय रोवै, रोय २ मेरो मुख धोवै ॥

यद्यपि मालोजी इन बातों को पसन्द नहीं करते थे परन्तु उनके पसन्द न करनेसे होताही क्या था पुरुष कैसाही चतुर क्यों न हो परन्तु ऐसे समयमें स्त्रियोंको उत्तर न देनेसे मूर्ख कहलाता है । मालोजी प्रथम तो चुप रहे परन्तु जब चारों ओरसे स्त्रियोंके प्रश्न और पहेलियां होने लगीं तो मूर्ख कहलानेके भयसे अन्तमें उनको भी बोलनाही पड़ा । उन्होंने प्रथम तो क्रमसे पांचों पहेलियोंका उत्तर " तुलसी " "शिवजीके ऊपरकी तिपाई" "चटाई" "नथुनी" और " पैरकी बिवाई " कह दिया और फिर एक पहेली पूछी—

लम्बिक लोला हरियर टोपी, गली २ में ठेला है ।
गोद पसारिके भीतर राखा, यह भी एक पहेला है ।

तब तो सब स्त्रियां चकरा गईं और लगीं खूब हँसने परन्तु कोई भी न जान सकीं कि इसका अर्थ बैंगन है । थोड़ी देरतक इसी तरहपर आनन्द होता रहा । अन्तमें मालोजी वहांसे विदा होकर अपने स्थानपर आये और एक दो दिन वहां रहने उपरान्त बरात विदा होकर अपने गांवको गई । इस तरह पर मालोजी दीपा सहित अपने घरमें रहने लगे ।

दीपाके थोड़ेसे गुण तो पाठक पांचवें प्रकरणमें सुनही चुके हैं परन्तु उसकी अवस्थाके साथ २ बढ़ते हुए गुणोंको और भी एकबार सुनाये बिना मुझसे रहा नहीं जाता । विवाहके समय दीपा खासी चौदह वर्षकी तो होही चुकी थी बस घरमें आतेही उसने शनैः २ सब काम सँभाल लिया । यहां तक

कि वृद्ध पटैलिनको अब घरकी ओरकी कुछ भी चिन्ता न रही । दीपा स्वभावकी बड़ी सरल और मिलनसार थी । वह अपनी सासको मातासे भी बढ़कर समझती थी । इस कारण बूढ़ी पटैलिनको कुछ भी कष्ट नहीं होता था । पतिको वह साक्षात् ईश्वरकाही स्वरूप मानती थी, इस लिये जिस तरह ईश्वरकी सेवा कीजाती है वैसेही वह पतिकी सेवा करती थी । वह पतिके सुखमें सुखी, पतिके दुःखमें दुःखी, पतिके सन्तोषमें सन्तुष्ट और उद्वेगमें उद्विग्न रहती थी । मालोजी भी ऐसी गुणवती भार्याको पाकर अपनेको धन्य और भाग्यवान समझते थे । कभी स्त्रीपर बिना प्रयोजन रुष्ट नहीं होते थे । वह आगेसे आगे उसकी इच्छाओंको पूरी करनेको स्वयं तैयार रहते थे और कभी उसका मन मैला नहीं होने देते थे । देखनेमें दोनोंके शरीर अलग थे परन्तु मन दोनोंके ऐसे मिले हुए थे कि "दो तन एक प्राण"। यद्यपि दीपा धन और वैभववाले पिताकी पुत्री थी और पिताके घरमें उसको बिलकुल भी काम नहीं करना पड़ता था परन्तु पतिके घरमें आकर वह सारा काम अपनेही हाथसे करती थी । प्रातःकाल पांच बजे उठकर रात्रिके दशबजे तक वह १७ घण्टे बराबर काममें लगी रहती थी । कभी एक मिनट भी उसको खाली बैठनेका अवकाश नहीं मिलता था ।

इतनेपर भी वह कभी घबड़ाती नहीं थी और न कभी झुंझलाती उकताती थी. पड़ोसकी जो स्त्रियां और लड़कियां उसके पास आती थीं उनको भी वह ऐसीही शिक्षा दिया करती थी. सुभाषितमें लिखा है किः—

श्लोक—कार्येषु मंत्री करणेषु दासी, भोज्येषु माता शयनेषु रंभा ।
धर्मानुकूला क्षमया धरित्री, भार्या च षाड्गुण्यवतीह दुर्लभा ॥

अर्थात् सलाह देनेमें मन्त्री, काममें दासी, भोजन करानेमें माता, सोनेमें रंभा, धर्ममें अनुकूल और क्षमामें पृथ्वीके समान इन छः गुणोंसे युक्त स्त्री मिलना बड़ा दुर्लभ है, ईश्वरकी कृपासे हमारे मालोजीको ऐसीही गुणवती स्त्री मिली थी. मनुस्मृतिमें लिखा है किः—

श्लोक—संतुष्टो भार्यया भर्त्ता, भर्त्रा भार्या तथैव च ।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं, कल्याणं तत्र वै ध्रुवम् ॥

अर्थात् जिस कुलमें स्त्रीसे पुरुष और पुरुषसे स्त्री संतुष्ट रहती है उसी कुलमें सदा कल्याण निवास करता है. इसके अनुसार मालोजीके घरमें भी अब दिन प्रति दिन वृद्धि होना आरंभ होगया था.

दीपा उस घरमें ऐसे शुभचरण लेकर गई थी कि थोड़ेही दिनमें सब बातें अच्छी होगई, उसके जानेसे एक वर्ष पश्चात् विट्ठूजीका भी विवाह सहजमें होगया कुछ अधिक खटपट न करनी पड़ी. सजैराव महाडिकका नाम तो पाठक पहले बारहवें प्रकरणमें सुनही चुके हैं उसीके साथ मालोजीके

खर्चसे रमाका विवाह होगया, और लक्ष्मण भट्टका भी विवाह मालोजीनेही करादिया. इस समय मालोजीकी कृपासे रमाका भाई सम्भाजी निंवालकर नायकके सवारोंके एक दलका नायक होगया तथा सर्जेरावदौलतावादके सूबेदारके यहां नौकर होगया.

विट्ठूजीकी स्त्री भी बड़ीही नम्र और सुशील थी. दोनों देवरानी जिठानियोंमें बड़ाही स्नेह था और दोनों परस्पर सगी बहनोंकी तरह रहती थीं. आजकल विशेष करके देखा जाता है कि देवरानी जिठानीमें खूबही जूते चलाकरते हैं और एकको दूसरीका मुंह तक नहीं सुहाता परन्तु इन दोनोंमें इससे बिलकुल विपरीत बात थी कोई भी नयावस्त्र या नई वस्तु खाने पीनेकी घरमें आती तो दीपा पहले विट्ठूजीकी स्त्रीको देती और तब बचता तो अपने काममें लेती थी. विट्ठूजीकी स्त्री भी कोई काम जिठानीसे पूछे बिना नहीं करती और खाने पीने आदिका सामान चाहे खड़ही जाता परन्तु अपने हाथसे लेकर कभी नहीं खाती थी. उनका ऐसा स्नेह देख देखकर पड़ौसकी स्त्रियोंको बड़ाही आश्चर्य होता था. एक दिन उनकी परीक्षा करनेके लिये एक स्त्रीने दीपाके पास जाकर कहा "बहूजी ! तुमतो विट्ठूकी स्त्रीको अपनी छोटी बहनकी तरह समझती और उसका इतना प्यार करती हो परन्तु वह आज तुम्हारे लिये कहती थी कि 'जिठानी मुझको खानेको भी नहीं देती और कहती है कि मेरे पतिकी कमाईको दोनों खाए डालते हैं.' देखो तो कैसी नादान है ?" उसको आशा थी कि दीपा अवश्यही अपनी देवरानीकी निन्दा करैगी परन्तु वहां तो उलटा फल निकला. उसने कहा "मुझको विश्वास नहीं है कि उसने ऐसा कहा हो क्योंकि मैं उसको अच्छी तरह जानती हूं यह बड़ीही भली और सुशील है और कभी मेरे सामने जवाब नहीं देती. तुमको शायद किसीने बहका दिया होगा" इसतरह पर जब यहां दाल न गली तो वह विट्ठूजी की स्त्रीके पासगई और इधर उधरकी मीठी २ बातें करने उपरांत बोली "देख री ! आज तो तेरी जिठानी कहती थी कि 'विट्ठूकी बहू बड़ी ही नालायक है सदा मुझसे लड़ा करती है न काम करती है न काज दिन भर रानीकी तरह बैठी रहती है और मेरे घरको खाये डालती है मुझको तो यह सुनकर बड़ाही दुःख हुआ क्या घर उसकाही है तेरा नहीं है जो वह तुझसे ऐसा कहती है" उसको इस समय पूरी आशाथी कि आज इनके घरमें अवश्यही खटपट होगी परन्तु वहां तो उसके कहनेका फल चिकने घड़ेपर पानी ठहरानेका यत्न करनेके समान होगया उसने भौंचढ़ाकर उत्तर दिया" माजी ! तुम बूढी हो इस लिये तुमसे क्या कहूं परन्तु आगेसे ऐसी बातें मेरे आगे नकरना. क्या तुम हमारे आपसमें सिर फुड़ाना चाहती हो ? वह तो मुझको अपनी बहनकी तरह मानती है और कभी मुझको

खिलाए बिना नहीं खाती तुम यह चाल कहांसे पैदा करलाई? लोग कहते हैं कि 'फूल हों तो हार बनते हैं' परन्तु तुम बिनाही फूल हार बनाए डालती हो। तुमको इस तरहपर झूठी बातें कहकर लड़ाई नहीं कराना चाहिये" दोनोंके ऐसे सूखे उत्तर पानेसे उस स्त्रीको अपने मनमें बड़ी लज्जा आई और उसको निश्चय होगया कि, इन दोनों का स्नेह और प्रेम वास्तवमें अभेद्य है उसका भेदन नहीं होसकता.

वृद्धा पटैलिनने जिस आशासे पतिके मर जानेपर अपने चार और छः वर्षके दोनों पुत्रोंका पालन करनेमें कष्ट उठाए थे आज परमात्माकी कृपासे उसकी वह आशा पूर्ण होगई। जिस पौधेको पटैलिनने बड़े प्रेमके साथ सींचा था आज उसकी ठण्ढी छायामें बैठने और मीठे फल खानेका उसको अवसर मिलगया। जब परमात्माकी कृपा होती है तब " राईसे पर्वत " होनेमें देरी नहीं लगती है। आज उस कृपालु परमेश्वरकी दयासे पटैलिनके दोनों पुत्र जवान हैं, दोनों होशियार और कमाऊ हैं, दोनोंही परस्पर भ्रातृस्नेही और मातृसेवी हैं, दोनोंके घरमें सुन्दर, सुशील और गुणवती स्त्रियां हैं, स्त्रियां भी सासकी सेवामें सदा लीन रहनेवाली हैं और घरमें सब तरह मनुष्य तथा पैसे आदिसे आनन्द है। बूढ़ी पटैलिनको पौत्र खिलानेकी बड़ी इच्छा थी सो भी भगवानने विठूजीको पुत्र देकर पूरी करदी है। इस तरहपर आज पटैलिन सबतरह सुखी है। अब वह भी अपना मन शनैः २ घरसेंसे निकालकर भगवद्भक्तिमें लगाती जाती है और कभी पण्ढरीनाथके दर्शन और कभी तुलजापुर, कभी शिङ्गणापुर, कभी गाणगापुर और कभी अन्य तीर्थ क्षेत्रोंकी यात्रा करनेमें अपना समय व्यतीत करती है और घरका काज दोनों बधुओंको देकर घरेलू झगड़ोंसे अपना बिलकुल सम्बन्ध छोड़ चुकी है। दोनों भाई भी राम लक्ष्मणकी भांति बड़े प्रेम और भ्रातृस्नेहके साथ रहते हैं और सब तरहसे आनन्द है। महात्मा तुलसीदासजीका वाक्य सत्य है कि " जहां सुमति तहँ सम्पति नाना " सुमति होनेसेही सम्पत्ति रहती है।

प्रकरण—१६.

वेरुलगांवको गमन—शरण आयेकी लाज।
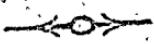
संसारका नियम है कि सदा समय एकसा नहीं रहता. जो कल था सो आज नहीं है, और आज है सो कल नहीं रहेगा, जो जन्मता है सो मरता है और चढ़ता है सो गिरता है. जो कल फकीर था और रोटीके टुकड़ेके लिये तरसता था आज छप्पन भोग आरोगता है और जो आज अपनेको राजा

मानता है समयके फेरसे कल उसकी कोई खबर भी नहीं पूंछता प्रयोजन यह कि काल चक्रके साथ प्रत्येक वस्तु बदलती रहती है और अच्छीसे बुरी और बुरीसे अच्छी दशायें फिरा करती है. यदि विचारसे देखा जाय तो यह नियम है भी अच्छा क्योंकि जो ऐसा न होता तो कोई भी अपने पैदा करने वाले जगदीश्वर भगवानको याद न करता, कोई किसीकी परवाह न करता, और कोई किसीको मानता नहीं. जो बदली न होती तो अमीर उमराव यह भी न जानते कि दुःख क्या वस्तु होती है और इसीसे दीनों पर अत्याचार करनेमें उनको किंचित् भी विचार न आता दूसरी ओर बिचारे गरीब लोग यह भी न जान सकते कि सुख क्या वस्तु है और न उनको यह खबर पड़ती कि अमीरी क्या है. जो धनवान हैं, लक्ष्मीके लाल हैं और शक्तिवान हैं, सदा उत्तमोत्तम पदार्थ खानेवाले हैं और सुखसे रहने वाले हैं वे नहीं जान सकते कि ज्वारकी सूखी रोटीमें क्या स्वाद है और जो बिचारे सदा सूखी ज्वारकी रोटी खाने वाले हैं और वह भी पेट भरके नहीं मिलती उनको यह खबर नहीं पड़ती कि ज्वारके सिवाय संसारमें ईश्वरने कोई अन्य वस्तु भी बनाई है या नहीं इसी आपत्तिको दूर करनेके लिये उस सर्वांतर्यामी जगदीश्वरने इस संसारको परिवर्तनशील बनाकर अपने सुन्यायका नमूना दिखा दिया है ठीक है 'सब दिन होत न एक समान.'

यहभी एक नियम है कि जब मनुष्य खाने पीनेसे सुखी होता है और हाथ सरकता होता है तो जहांतक बनता है अपने इष्टमित्र और सगे सम्बन्धियोंकोही बनाता है और अंगरेजीकी कहावत "Charity begins at home" अर्थात् "अन्धा बांटै रेवड़ी, अपने अपनेहीको देत" के अनुसार ऐसा करना उचित भी है क्योंकि ऐसा करनेसे यही आशा रक्खी जाती है कि समय पड़नेपर वेही लोग सहायता देंगे परन्तु कईबार इसका विपरीत फल निकलता है. खेतके चारोंओर जो बाड़ लगाई जाती है वह गाय बैल आदि बाहरी जीवोंसे उसकी रक्षा करनेके लिये परन्तु जब वह बाड़ही स्वयं रक्षकके बदले भक्षक बनकर खेतको खाने लगे तब बचाव कैसे होसकता है. बाहरी शत्रुको रोकनेके लिये तो मनुष्य समर्थ होसकता है परन्तु घरके शत्रुसे कुछ वश नहीं चल सकता. यही दशा हमारे मालोजीकी हुई. जिन लोगोंकी और जिन नातेदारोंकी मालोजीने वृद्धि की थी वेही अब उनके शत्रु बनगये. मालोजी बड़े सरल और नम्र पुरुष थे. वह नहीं समझते थे कि मैं जिनको आम समझकर पोषण करता हूं वेही मेरे लिये किसी दिन बबूरके कांटे होजायँगे. संसार पसारीकी दूकान है. इसमें अमृत भी है और विष भी, पृथ्वीपर भलेमनुष्य हैं, बुरे हैं, बुद्धिमान् हैं, मूर्ख हैं, उदार हैं, कृपण हैं, सज्जन हैं, दुर्जन हैं, दयावान हैं, निर्दयी हैं, परोपकारी हैं, स्वार्थी हैं, क्रोधी हैं, शांत हैं और परायेका

अच्छा देखकर खुश होनेवाले हैं वैसेही ऐसे मनुष्योंकी भी कमी नहीं है जो औरोंका अच्छा देखकर जलमरते हैं और तो क्या परन्तु ऐसे ऐसे मनुष्य पाये जातेहैं जो औरोंके सगुन बिगाड़नेको अपना नाकतक कटवानेमें नहीं हिचकते.

मालोजीने अपने जिन भाई बन्धुओंके साथ नेकी की थी और जिनको इनहीके कारणसे सुख मिलता था वे भी अब मालोजीके शत्रु बन गये मालोजीकी वृद्धि, मालोजीकी वीरता, मालोजीकी कीर्त्ति और मालोजीका यश उनकी आंखोंमें खटकने लगा वे लोग इनसे इतना द्वेष करने लगे कि बात२ में उनको कष्ट पहुँचाने और नीचा दिखानेका यत्न होने लगा भाई बन्धुओंकी यह दशा देख कर मालोजीके चित्तको बड़ा कष्ट हुआ और इसकी सफाई करनेके लिये उन्होंने बहुत कुछ यत्न किया परन्तु वहां तो 'मर्ज बढ़ता गया, ज्यों ज्यों दवा की' वाली कहावत चरितार्थ होने लगी ज्यों ज्यों ये नम्रता पकड़ने लगे त्यों त्यों ही वे लोग कठोर पड़ते गये तबतो मालोजीने वह गांव छोड़नेका विचार किया विचार तो किया परन्तु वह गांव उनकी जन्मभूमि थी वहांपर उनका उदय हुआ था। वहांपर वे इतने बड़े हुए थे, वहांकी भूमि वहांके वृक्ष वहांकी वस्ती और वहांके घर झोपड़ोंसे वे इतने हिलमिल गये थे और उनपर इतना स्नेह होगया था कि उसको छोड़ना मालोजीके लिये अपने माता पिताको छोड़नेके समान दुःखप्रद जान पड़ता था. इस लिये कई दिनों तक उन्होंने सब लात व मुक्के सहते रहनेपर भी देवलगांवको न छोड़ा और जैसे बना वैसे वहीं पर गुजर किया परन्तु जब वहांका निवास बिलकुलही असह्य और कष्टसाध्य हो पड़ा और एक एक मिनट रहना भारी होगया तो लाचार होकर उन्हें उस गांवको छोड़नेका विचार पक्का करना पड़ा किसीने कहा है कि:–

दोहा–औगुण नीके दिननमें, गुण होइ लागत गात।
जब मलीन दिन होतहैं, गुण औगुण है जात॥

इसीके अनुसार मालोजीके किए हुए गुण भी उनके लिये अवगुण हो गये और वेही उनकी जन्म भूमि छुड़वानेके मुख्य कारण बने परन्तु ईश्वर जो करता है सो अच्छेहीके लिये.

चलनेका दिन आया, सब सामान गाड़ियोंमें भरागया और मालोजी सकुटुम्ब सपरिवार वहांसे वेरुळगांवकी ओर रवाना हुए. अरबस्थान भारत वर्षसे पश्चिममें है और वही ऊंटोंकी जन्म भूमि मानी जाती है. इसी परसे कहावत प्रसिद्ध है कि ' अंत समयमें भी ऊंट पश्चिमको मुँह करके मरता है ' अर्थात् इससे उसका मातृभूमिका स्नेह प्रकट होता है. जब अवाक जीवोंमें भी मातृ भूमि पर इतना स्नेह होता है तब हम मनुष्योंमें स्नेह होतो विशेषता क्या है चलते समय भी मालोजीको अपना गांव छोड़नेका अति दुःख था, इसीसे

जबतक देवलगांव दीखता रहा तवतक उनकी आंखें लौट लौटकर पीछे-हीकी ओर जाती रहीं.

आजकल सरकारकी कृपा और सेठसाहूकारोंकी उदारतासे एक स्थानसे दूसरेको जानेमें कष्ट नहीं होता क्योंकि मार्गमें खासी पक्की सड़क और मील लगे हुए हैं और स्थान २ में धर्मशालाएँ, सरायें और जलाशय बने हुए हैं, जिनमें प्रत्येक मनुष्य सुख पूर्वक टिक सकता है परन्तु जिस समयकी यह कथा है उस समय यह बात नहीं थी. सड़क, धर्मशाला और सराय तो कहां रही परन्तु उस समय मार्गमें चोर और डाकुओंका भय होने उपरांत यवन सिपाहियोंका भी बड़ाही जोर था. वे धन दौलत तो लूटतेही थे परन्तु स्त्रियोंकी लज्जा भङ्ग करनेमें भी वे अपना पुरुषार्थ समझते थे. इसके मारे उस समय दश पांच कोसकी यात्रा करना भी महा कठिन काम था. इसपर भी तुर्रा यह कि हमारे मालोजीको यह यात्रा गरमीकी ऋतुमें करनी पड़ी थी इसलिये दिन भर तो उनको गरमीके मारे विश्राम करना पड़ता था और रात्रिमें यात्रा होती थी. यह और भी भय और कष्टका काम था।

ईश्वरकी कृपासे तीन मंझिल सकुशल होगईं; मार्गमें किसी प्रकारका खटका न हुआ चौथे दिन रात्रिके तीन बजेके समय मालोजी अपने सब मनुष्यों सहित एक स्थानपर ठहरे हुए थे. केवल दो मनुष्य पहरा देते थे बाकी सब सो रहे थे. इतनेहीमें एक मरहठा रक्तसे सना हुआ दौड़ा आया और पहरेवालोंसे बड़ी नम्रताके साथ अपनेको कहीं छिपा रखनेके लिये प्रार्थना करने लगा। उसका कहना पूरा भी नहीं होने पाया था कि पीछेसे तीन चार मुसलमान सिपाही हाथमें नङ्गी तलवार लिये 'कहां गया साला काफिर ? पकड़ो २!!' करते हुए वहींपर जा पहुँचे. इनकी चिल्लाहट सुनकर सब लोग चौंक पड़े. मालोजी पड़े २ इन सब बातोंको पहलेही सुन चुके थे. वह एकदम उठे और उस नवागत मनुष्यको गाड़ीकी आड़में छिपाकर सिपाहियोंके पास पहुँचे. उनको देखतेही मुसलमानोंने बड़ी तेजीसे कहा "कहां है काफिर हैबत ? उसको हमारे सिपुर्द करो !"

मालोजीने उत्तर दिया "कौन हैबत ?"

मुसलमानोंने कहा "कौन हैबत ? वह काफिर जो हमारे आगे भागा हुआ आया है."

मालोजी—"यहां कोई काफिर नहीं है. हम सब लोग परदेशी हैं साहब ! कहीं और जगह देखिये. यहां हैबत नहीं है."

सिपाही—"नहीं कैसे है ? अभी हमारे आगे तो आयाही है. इधरही गया है. कहीं छिप रहा होगा. या तो उसे हमारे सिपुर्द करो वरना हम तुमको मारेंगे."

मालोजी—हम नहीं जानते तुम्हारा हैबत कहां है परन्तु याद रक्खो ! वह तुमको नहीं मिलैगा."

सिपाही—"नहीं कैसे मिलेगा ? वह हमारा खूनी है. हम उसको जरूर पकडेंगे ! अगर तुम दरमियानसें पडोगे तो खता खाओगे. बेहतर है कि उसको हमारे सिपुर्द कर दो वरना तुमको भी अपनी जानसे हाथ धोना पडेगा."

मालोजी—"बस सुन लिया आपका कहना. अधिक मत बको । हम तुमारा आदमी तुमको कभी न देंगे और जो अधिक बढ़ोगे तो तुमको भी समझेंगे."

सिपाही—"चल २ क्या समझेगा ? अव्वल तो हमारे मुलजिमको छिपा दिया है और फिर बंदर घुड़की दिखलाता है ! जानता नहीं हम सिपाई बच्चे हैं. अभी तेरी सफाई कर डालेंगे."

मालोजी—"मेरी सफाई कर डालोगे ? तुम नहीं जानते हो ? मेरा नाम मालोजी है ! अपनी भलाई चाहते हो तो यहांसे हट जाओ । और अपना रास्ता नापो नहीं तो अच्छा नहीं होगा. नाहक प्राण क्यों खोते हो."

इधर तो इसी तरह बदाबदी होरही थी इतनेहीमें पासवाले ग्राममें "पकड़ो २ ! वह जाती है !! मतजाने दो !!! धांवा हो धांवा कोणी तरी या गरीब दीन गाईला या मेल्या मांगांच्या हातून सोडवा हो !! धरो!!!" सबूरश! मी जातों !! त्या दुष्टाला अतां धरतों आदि । मुसलमान और मरहठे स्त्री पुरुषों के शब्द सुनाई पड़े अब तो सबलोगोंने समझ लिया कि, अवश्यही किसी राक्षस मुसलमान सिपाहीके हाथमें दीन अबला स्त्री जापडी है तुरंतही एक लगभग २५ वर्षकी अवस्थावाली स्त्री हांपती २ आकर मालोजीके पैरोंमें गिरगई और कुछ कहनेलगी परंतु उसका कहना ऐसा धीरे और विह्वलताके साथ था कि कुछभी समझमें नहीं आया. इसपरसे मालोजीने स्पष्टरूपपर जान लिया कि जिस स्त्रीको छुडानेके लिये गांवमें हल्ला और पुकार मची है यह वही स्त्रीहै उन्होंने तुरंत उसको गाड़ियोंकी ओटमें करके धर्माजीसे उसकी रक्षा करनेकी आज्ञा दी और आप हाथमें नंगी तलवार लेकर आगे जा खड़े हुए । तीनचार मुसलमान तो पहले खड़ेही थे इस अबला स्त्रीके पीछेभी ३।४ ही सिपाही और आ पहुँचे अब वे चतुर्भुज बनगये उन्होंने चढ़ाही गुलगपाड़ा और हल्लागुल्ला मचाना जारी किया. कोई कहताथा दौलतको लाओ, कोई कहता था 'चिड़िया कहां उड़ गई' ? कोई कहता था "सालेइसीको पकड़लो" कोई कहता था 'यह बड़ा काफिर है इसको सजा देना चाहिये' और कोई कहता था 'हां हां ठीक है ! इसी नालायकको पकड़लो इस तरहपर वे खूबही चिल्लाये और बकने लगे तब स्त्री पुरुष घबड़ा उठे और लगे उनको शांत करनेका उपाय विचारने प्रथमतो मालोजीने, बड़ेही नम्र शब्दोंमें उनको समझाने और शांत करनेका यत्न किया. परन्तु जब उन्होंने देखा कि 'चमारके

देवकी जूतोंसे पूजा किये बिना काम नहीं चलैगा तो उनको भी 'शठं प्रति शठं कुर्यात अर्थात, जैसेसे तैसाही बनना पड़ा सिंहरूप धारण करके उन्होंने ललकार कर कहा "बस बस बहुत हुई ! वृथा क्यों बकते हो ? इस तरह पर चिल्लाकर क्या तुम हमको डराना चाहते हो ? स्यारोंके चिल्लानेसे सिंह नहीं डरते हैं. दोनों मेंसे तुमको एक भी नहीं मिलैगा अब तुमको उचित है कि यहांसे लौट जाओ"

इतना सुनतेही सिपाही बड़े बिगड़े और बोले "हां हां लौट जायँगे ! जमीनके परदेपर बहादुर तो खुदाने सिर्फ तुझकोही बनाया है ! हमारे मुजरि-मोंको छिपाकर अब बातें बनाता है ! इसीको कहते हैं "चोरी और सिनाजोरी" अभी कुछ नहीं बिगड़ा है. हमारे मुजरिमोंको हमारे सिपुर्द कर दे वरना हम अभी तेरा सिर धड़से जुदा किये देते हैं"

मालोजीने कहा "आपकी वीरता तो इसीमें प्रकट होगई कि तीन तीन चार चार आदमी मिलकर भी एक स्त्रीको न पकड़ सके 'थोथा चना और बाजे घना' वाली बात तुम लोग पूरी कर रहे हो, मालूम होता है कि तुम्हारा काल तुमको घेर लाया है. अभी कुछ बिगड़ा नहीं है. जरा होशमें आजाओ तो प्राण बच जायँगे नहीं तो कुत्तेकी मौत मरोगे।"

मालोजीके ये शब्द सिपाहियोंके हृदयमें तीरकी तरह लगे वे बोले "साले काफिर ! हमको कुत्ता कहता है ! गुस्सा तो ऐसा आता है कि इसी वक्त तेरी जबान काटलें मगर तेरी शकल पर रहम आता है. फिजूल बकनेसे क्या फायदा है. चल ! हमारे मुजरिमोंको लाता है कि नहीं ?"

मालोजीने घुड़क कर उत्तर दिया "कह तो दिया तुमसे एकबार ! हट जाओ यहांसे ! किसीका प्राण लेनेसे ईश्वर नाराज होता है. इसीसे मैं तुमको इतनी देरसे समझा रहा हूं. जो तुमको अपने प्राण बचानाहै, जो तुमको अपनी स्त्री और पुत्रोंसे प्यार है, जो तुमको अपने घर बारका मोह है और जो तुमको अपने कुटुम्ब कबीलेका सुख भोगना है तो मेरी आंखोंके आगेसे हट जाओ। अपना मुंह काला कर जाओ बस कह दिया ! इसी समय यहांसे चले जाओ नहीं तो मारे जाओगे।"

मालोजीके वीरता युक्त शब्द सुन सुनकर सिपाहियोंके पैर कांपते और कलेजा धड़कता था. तथा आगे बढ़नेका साहस नहीं होता था. परन्तु उसको अँधेरेमें अकेला समझकरही उनको कुछ कुछ हिम्मत आ जाती थी. इस समय सब सिपाहियोंने अपने अपने सारे शरीरकी हिम्मतको एकत्रित करके 'मारलो साले पाजीको' कहकर ज्योंही आगे पैर रक्खा कि मालोजीने भी 'तुलजाभाईकी जय' बोली और दो कदम आगे बढ़कर एक तलवार ऐसी मारी कि उन आठ मूर्त्तियोंमेंसे एक तो 'या अल्लाह ! मार लिया' कहकर भूमिपर गिर पड़ा और शेष सिपाहियोंके भी पैर

कांप उठे. पैर तो उनके कांप उठे परन्तु अपने एक साथीको पृथ्वीपर पड़ा देखकर उनके चित्तको बड़ाही दुःख और क्रोध हुआ. वे लगे लाठियां और तलवारें चलाने परन्तु मालोजी इस तरहपर अपने पहलवानी पटेके हाथ मारते थे कि शत्रुकी तो उनपर कुछ चोट नहीं पहुँचती थी और वह अपना काम बनातेही जाते थे. लग भग आधे घंटे तक इसी तरह झमाझमी चलती रही परन्तु परिणाम कुछ भी न निकला तब तो दीपाको बड़ा जोश आया. यद्यपि वह सासके आगे कभी पतिसे बात नहीं करती थी और न कभी पतिके विषयमें कुछ कहती थी परन्तु इस समय तो अकेले मालोजीको ६।७ सिपाहियोंसे इतनी देर तक भिड़े रहनेको सहन न कर सकी. यों तो मालोजीके साथ उनके छोटे भाई विट्टूजी भी थे और धर्मा, रामा आदि दो चार और भी मनुष्य थे परन्तु उनको उन्होंने स्त्रियों, गाड़ियों और उन दोनों नवागत गरीबोंकी रक्षा करनेमें नियुक्त कर दिया था. इसलिये वे लोग अपना अपना स्थान छोड़कर आ नहीं सकते थे. यह दशा देखकर दीपासे न रहा गया और वह सासके मना करने पर भी पतिकी सहायताको दौड़ी. उसको आते देख मालोजीने दूरसेही कहा "हैं हैं इधर मत आ! यहां तेरा काम नहीं है" अबतो दीपाको वहींपर ठिठक जाना पड़ा उसने उत्तर दिया. "मेरा तो काम यहां आनेका नहीं है परन्तु क्या आपका अकेले इतने सिपाहियोंसे लड़नेका काम है? मेरेभी तो दो, चार हाथ देखिये!"

मालोजीने कुछ तेजीसे कहा "नहीं रे! इधर आनेकी कुछ आवश्यकता नहीं है? इनके लिये तो मैं अकेलाही बहुत हूँ इतनेसे आदमी मेरा कर क्या सकते हैं? एकतो होही चुका और यह दूसरा भी जाता है" इतना कहकर ज्योंही उन्होंने अपना हाथ फेंका कि उनमेंसे एक और भी गिराही मिला.

उधरसे दीपा और मालोजीके ये शब्द सुन कर धर्माजी, विट्ठूजी आदिको भी मालोजीकी सहायताके लिये उनके पास जानेकी बहुतही इच्छा होतीथी. और वे ऐसे डरपोंक तथा स्वार्थी भी नहीं थे कि खड़े खड़े मालोजीको लड़ाईमें फंसे और आपत्तिमें घिरे देखा करें और सहायता न करैं परन्तु इसके दो कारण थे, एकतो उनको पूरा विश्वास था कि वह इन सिपाहियोंकी खबर लेनेमें अकेलेही समर्थ हैं और दूसरे उनको इस बातका भय था कि कहीं ऐसा न हो कि जैसे रामचन्द्रजी अपने भाई लक्ष्मणजीको सीताजीकी रक्षाके लिये छोड़कर हिरनरूप मारीच राक्षसको मारने गये और पीछेसे सीताके आग्रह और दबावमें पड़कर लक्ष्मण भी रामचन्द्रकी सहायता करने चले गये जिससे अवसर पाकर रावण सीताको हर ले गया वैसेही कहीं हम मालोजीकी आज्ञाका उल्लंघनकर अपना स्थान छोड़ दें और उनको सहायता करने जायँ औरपीछेसे कोई छिपे हुए मुसलमान सिपाही आकर स्त्रियां और बच्चे आदिको ले जायँ.

इसलिये वे तो अपने स्थानसे न हटे परन्तु गाड़ी वालोंमेंसे कोई गाड़ीका डंडा, कोई बैल हांकनेकी तुतारी, कोई कुल्हाड़ी और कोई रस्सा लेकर जा पहुंचा और सब लोग लगे धड़ाधड़ खड़ाखड़ पीटने और गचागच टोंचने विचारे बचे बचाए सिपाही खूबही घायल हुए और अंतमें रस्सीसे बांधकर डाल दिये गये. इस तरहपर।

दोहा-मक्खी बैठी शहदपर, लिये पंख लपटाय।
हाथ मलै अरु शिर धुनै, लालच बुरी बलाय॥

वाली दशा होगई. अपने दोनों मुजरिमोंको छुड़ानेकी इच्छासे आये हुए सिपाही स्वयं मुजरिम बनगये.

अब तक तो अमावास्याकी अँधेरी रातने पृथ्वीको काली चादर ओढ़ा रक्खी थी जिसके मारे आंखें होते हुए भी मनुष्य अँधोंकी तरह दृष्टि रहित हो रहे थे और बढ़िया कृस्टल अर्थात् बिल्लौरी चश्मे चढ़ानेपर भी आँखें अपना काम नहीं दे सकती थीं परन्तु इस झपा झपी और काटमारमें रात्रिका भी अन्त आगया और सूर्यके प्रकाशने अँधेरेको कालेपानी भेजकर अपना राज्य जमाना आरम्भ किया. प्रातःकाल होते २ मालोजी अपने सब मनुष्यों और गाड़ियों आदिको लेकर उस पासवाले गांवमें पहुँचे तो उनको मालूम हुआ कि जो रातको भागकर उनके पास गई थी वह उस गांवके लक्ष्मीनारायणके मन्दिरके पुजारी रामभाऊकी स्त्री सीता थी. पुजारी जातका ब्राह्मण था और उसके सदाचरण तथा सरल स्वभावके कारण इधर उधरके कई गांववाले उसे पूज्य मानते और उसकी सेवा करते थे. मन्दिरमें लगभग दो तीन हजारका माल टाल था और पुजारीकी स्त्री भी खूबसूरत थी. इन्हीं दोनों कारणोंसे मुसलमान सिपाहियोंकी उनपर बहुत दिनोंसे डाढ़ लगी थी. अवसर पाकर आज उन्होंने उसे पूरा किया. मन्दिरका धन तो मुसलमानोंके हाथ पड़ही गया था परन्तु उन दुष्टोंने मूर्त्तिपर भी आघात पहुँचानेमें कसर नहीं की थी. इस झगड़ेमें पुजारी रामभाऊ तो घायल होकर मन्दिरमें मूर्च्छित पड़गया और स्त्री सीताने भागकर मालोजीकी शरण ली. मुसलमान सिपाहियोंने मालोजीसे जिस हैबतको मांगा था वह भी एक मराठा सरदार था परन्तु दुष्ट यवनोंके द्वारा अपना घरबार नष्ट होने और लड़के लड़कियोंसे बिछुड़ जानेपर भागकर पुजारी रामभाऊहीके घरमें रहता था और मन्दिर, पुजारी तथा उसकी स्त्रीकी रक्षा करनेमें यवन सिपाहियोंके हाथसे घायल होकर मालोजीके चरणोंमें गया था. हैबतराव इतना घायल होगया था कि मालोजीके पास पहुँच तो गया परन्तु जातेही मूर्च्छित होकर गिर पड़ा और कई दिनोंतक खटिया सेवन करता रहा

जब अच्छी तरह प्रकाश होगया और सब वस्तुओंने अँधेरी रात्रिकी काली चादरको उतार दिया तो उन बँधे हुए सिपाहियोंमेंसे एकको मालोजीने पहचान लिया और कहा "क्यों कालेखां ! अभी तुम्हारे दिलका अरमान नहीं निकला ? एकवार तो पहले पिटही चुके हो और अपने कियेका फल भोगही चुके हो फिर भी अपनी चाल नहीं छोड़ते ?"

सब साथियोंके साथ इस समय काना कालेखां भी रस्सेसे खूब बँधा हुआ था, उसके लाठी, तलवार आदि सब शस्त्र छिन चुके थे और सब तरह परवश होरहा था उसने अपने दिलमें विचारा कि जो कुछ भी चीं चपड़ की तो अभी खूब गत बनाई जायगी इस लिये अपना काम बनानेकी इच्छासे उसने नम्रतासे उत्तर दिया "साहब ! आपने तो मुझको जान बकशी है क्या मैं ऐसा नालायक और कमीना हूं कि फिर आपके आगे आता मगर क्या करूं ये लोग मुझको खींच लाये. महरबान मन ! मेरा कुसूर मुआफ कीजिये खुदा आपका भला करेगा"।

उसके मुंहसे ऐसे झूँठे शब्द सुनतेही साथवाले सब सिपाही बोल उठे "लाहोल वला कुव्वत ! इतनी झूंठ क्यों बोलते हो ? हम तुमको लाये हैं या तुमने हमको आफतमें फँसाया है ? तुमही तो कहा करते थे कि 'हम एक परीजादको लेने गये थे. वहांपर एक मालोजी नामका नालायक शख्स दालभातमें मूसलचंदकी तरह बीचमेंही कूदपड़ा और हमारी शिकारको हमारे हाथमेंसे निकाल ले गया. उसने मेरे साथ ऐसा किया है कि ताजिंदगी मैं उसको भूलूंगा नहीं उस साले काफिरको जबतक मैं मार नहीं डालूंगा तब तक मेरे जीको तसल्ली न होगी' जो हम पहले जानलेते कि यही मालोजी हैं तो भूल कर भी उस रांडके पीछे न पड़ते"

इतनेहीमें कालेखांने कहा "तोबा तोबा तोबा ! तुम लोग भी बड़ेही झूंठ बोलनेवाले हो मैंने तुमसे कब कहा था कि मैं मालोजीको जानसे मारडालूंगा तबही मेरे दिलको तसल्ली होगी ? इन्होंने तो मेरे साथ बड़ा सलूक किया है इंशा अल्लाताला इनकी उम्र दराजहो"

अबतो मालोजीसे न रहागया. वे बोल उठे "खां साहब ! आप नाहक क्यों कहनेकी तकलीफ करते हैं ? मैं सब जानता हूं. तुमने नहीं कहा तो इन लोगोंने मेरा नाम कैसे जान लिया ? मैं अच्छी तरह जानता हूं कि तुम जैसे मनुष्य दयाके पात्र नहीं होते हैं. नीतिमें लिखा है कि:—

श्लोक—क्वचिद्दन्ताळको मूर्खः, क्वचिद्दानवती सती ।
क्वचित् काणो भवेत् साधुः, खल्वाटो निर्धनः क्वचित् ॥

यह ईश्वरीय नियम है कि दंतू अर्थात् निकले हुए दांत वालोंमें मूर्ख, गाने वाली स्त्रियोंमें सती, काणोंमें साधु और खल्वाटवालोंमें अर्थात् जिनके सिरमें बाल नहीं उनमें निर्धन बहुतही कम निकलते हैं कानूनकी दफाओंमें चाहे फेर बदल हो जाय परन्तु परमेश्वरके बनाये हुए नियमोंमें तिलभर भी अंतर नहीं पड़ सकता तुम्हारे कामोंको देखते हुए तो तुमको कड़ी सजाही देना चाहिये परन्तु हम क्षत्रियोंका यह कर्त्तव्य नहीं है कि, जैसेके साथ वैसा वर्त्ताव करें। खैर आज मैं सबके साथ तुमको भी छोड़ता हूँ परन्तु याद रखना आगेसे फिर ऐसा कभी मत करना. सर्कार दुबारा अपराध करनेवालेको दुगना दण्ड देती है परन्तु मैं तुमको छोड़ता हूँ. आशा है कि अब भी तुम अपने दोषोंको सुधार लोगे और आगेसे कभी निरपराध जीवको दुःख न दोगे. यदि फिर तुम मेरे अड्डेमें आओगे तो याद रखना बिना दण्ड भोगे न छूटने पाओगे."

इस तरह पर दोषी–द्विगुण दोषी–कालेखांको खूब समझा बुझा और उपदेश करके मालोजीने छोड़ दिया और उन दोनों हैबतराव और सीताबाई के 'शरण आएकी लाज' रखली. यद्यपि विट्ठूजी, धर्माजी और रामाजी आदिको मालोजीका कालेखांको छोड़ देना पसंद न आया क्योंकि वह पहले भी एकबार इसी तरहपर बिना दण्ड पाए छूट गया था और 'नीच निचाई ना तजै, करलो कोटि उपाय' के अनुसार फिर भी अपनी आदतको नहीं छोड़ता था परन्तु मालोजीने उनको यह कहकर समझा दिया कि चन्दनका वृक्ष जैसे अपने काटनेवाले कुल्हाड़ेको भी सुगन्धित कर देता है वैसेही मनुष्यको अपने शत्रुपर दयाही करना चाहिये.

इन सब झगड़ोंसे निपटकर मालोजीने मूर्च्छित पड़े हुए हैबतराव और पुजारी रामभाऊके घावोंपर मरहम पट्टी की, मन्दिरमें दूसरी बार मूर्त्ति स्थापनकी और ग्रामभरको एक दिन भोजन कराया. एक सप्ताह तक वहीं रह-कर उन्होंने दोनों घायलोंका ठीक २ उपाय कराया और अपने पाससे द्रव्य लगाकर सब काम कर दिया. अन्तमें जब दोनोंको आराम हो चुका तो वह वहांसे चल दिये और अपने यश तथा कीर्त्तिको वहीं छोड़ गये. इस तरहपर मार्गका श्रम उठाते हुए मालोजी सकुशल कई दिनोंमें वेरुल पहुँचे।

प्रकरण १६.
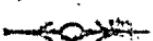
हैबतरावका कुटुम्ब मिलन।

आषाढ़के कृष्णपक्षकी आज द्वादशी है, रात्रिका समय है. चारों ओर घोर अन्धकार फैला हुआ है. जिधर दृष्टि जाती है उधरही सिवाय कालेरंगके कुछ भी दिखाई नहीं देता. यद्यपि इस समय सूर्य भगवानको अस्त हुए बहुत

काल नहीं बीता है परन्तु तब भी अन्धकार ऐसा हो रहा है मानो रात्रिके बारह बज गये हों. सिरके ऊपर नीले आकाशकी आड़में बड़े २ काले भयानक बादल आते जाते हैं. और बिजलियां भी चमाचम चमक रही हैं. ऐसे समयमें एक सवार भीमथड़ी प्रांतकी ओरसे आ रहा है और एक विकट जङ्गलमें होकर अपना मार्ग काट रहा है. सवार अपने घोड़ेको एड़ मार २ कर इस शीघ्रतासे चला रहा है मानो उसके विवाहका मुहूर्त टला जाता हो. वह कभी आगेकी ओर देखता है और कभी आकाशकी ओर उसकी दृष्टि जाती है. राजाकी सवारीके आगे जैसे मशालें चलती हैं और नक्कारे बजते चलते हैं वैसेही आकाशमें भी इंद्रराजकी सवारीके आगे बिजली चमकती और बादलोंकी गर्जना होती आती है. इसीको देख २ कर वह सवार अपने मनमें घबड़ाता और घोड़ेको दौड़ाता जा रहा है. वह विचारता है कि वर्षा आरम्भ होनेसे पूर्व यदि मैं अगले ग्राममें पहुँच जाऊँ तो अच्छा है परन्तु यह उसके हाथमें नहीं है. उसका घोड़ा भी विचारा बिजलियोंकी चमक और बादलोंके गड़गड़ाहटसे डरकर तथा सवारके चाबुक और एड़ोंसे दुःखित होकर अपना और अपने सवारका शरीर और कपड़े लत्तोंको भीगनेसे बचानेके लिये अपनी शक्तिभर दौड़ रहाहै परन्तु इंद्रराजकी सवारीके आगे उसका कुछ वश नहीं चलता. उस विचारेकी क्या शक्ति है कि वह इंद्रके पवन तुल्य वेगवाले घोड़ोंसे आगे निकल सके. उन दोनों प्राणियोंका उद्योग वृथा गया और सों सों सों करता हुआ बरसाल आही गया. एक साथ ऐसी मोटी मोटी बूँदें गिरने लगीं मानो आकाशसे गोलियां बरसती हों अब तो घोड़े और सवार दोनोंकी पीठें खूबही सीधी होने लगी. आगे बढ़नेकी किसीमें शक्ति न रही अन्तमें विवश होकर सवाररामको एक वृक्षके नीचे शरण लेनी पड़ी। वह वृक्ष भी बड़का इतना बड़ा था जिसके नीचे कई सौ मनुष्य ठहर सकते थे. वृक्ष ऐसा वृद्ध था कि उसकी डारियां अपना भार सहन न कर सकनेके कारण झुक झुककर पृथ्वीसे जा लगी थी और इस तरहपर इसके नीचे कई कोठरियां सी बन गईं थीं. हमारा वर्षासे पिटा हुआ सवार भी उन्हीं कोठरियोंमेंसे एकमें जा घुसा और घोड़ेको बाहर बांधकर पानी ठहरनेकी राह देखने लगा. मनही मनमें वह तो यह विचारता था कि वर्षा कम हो तो मैं अपने स्थानपर पहुंचूं परन्तु वहां तो इसकी इच्छाके विपरीत कारखाई होती थी. वह ज्यों २ वर्षा कम होनेकी प्रार्थना करता था त्यों २ ही अधिक अधिक पानी गिरता जाता था. थोड़ी सी देरमें चारों ओर पानीही पानी होगया. जो भूमि ऊष्णकालकी प्रचंड गरमीको सहते सहते बिलकुल सूखकर उदाससी जान पड़ती थी वह इतनेहीसे समयमें जलपूर्ण होकर प्रसन्नमुख हो गई और पानी कलकल शब्दसे बहने लगा. वृक्षके पत्ते जो इतने दिनसे नीचा मुंह किये लटक

रहे थे वर्षाका पानी पीकर जोशमें आगये और चार महीनेसे अपने मुखपर जमी हुई धूलको धो धोकर अपना रूप दिखाने लगे. इस तरह पर चारों ओर आनन्द होगया. ज्यों ज्यों पानी पड़ता जाता था त्योंही त्यों प्राणी मात्र प्रसन्न होते जातेथे, किसान लोग अपनी खेती अच्छी होनेकी आशासे प्रफुल्लित होते थे, बोहरे अपनी बाकी वसूल होनेकी आशासे प्रसन्न होते थे, अमीर उमराव हरियाईमें सैर करनेकी आशासे खुश होते थे, गरीब अन्न सस्ता होनेकी आशासे महंगा बेचनेवाले बनियोंपर तालियां बजा २ कर हंसते थे, जवान लोग सुख शय्याका आनन्द भोगनेकी इच्छासे फूले अंग नहीं समाते थे। बालक अपने गेंद खेलने और स्कूलके लड़के अपने क्रिकेटके मैदानमें बिना कौड़ी पैसा खर्च किये हरी हरी दूब लगजानेकी खुशीमें कूदते थे, और तो क्या परन्तु गूंगे गाय भैंस बैल आदि जीव भी हरी हरी घास खानेकी आशामें रांभते और हर्ष प्रकट करते थे. इस तरह पर इस वर्षासे चारों ओरही प्रसन्नता और आनन्द छागया था. इस कृपाके लिये प्रत्येक मनुष्य परमात्माकी दयालुताकी प्रशंसा करता और उसको धन्यवाद देता था परन्तु वड़के पत्तों और डालियोंमें छिपा हुआ हमारा सवार ठंढके मारे कांपता हुआ परमेश्वरको गालियां दे रहा था. इसी लिये कहा है कि 'भटा एकको पित करै, करै एकको बात' वर्षाका होना और सो भी आषाढ़के महीनेमें सब तरहसे उत्तम और प्राणिमात्रको प्रसन्न करनेवाला है परन्तु उस विचारे सवारकी ऐसी दशा खराब होगई थी कि उधर तो उसका आवश्यकीय कार्य अटक गया और इधर शरदीके मारे उसका सारा देह अटक गया. जो वस्त्र देहकी रक्षा और शरदीसे बचानेके लिये पहने गये थे वे भी उस समय वर्षासे भीगकर ऐसे तर हो गये थे कि मित्र होने पर भी शत्रुका काम करते थे और रक्षक होकर भी भक्षक बन गये थे.

रात्रिभर पानी इसी तरह जोरशोरसे पड़ता रहा परन्तु पांच बजनेके समय प्रचंड हवा चलना आरम्भ हुआ और बादल भी कुछ २ हटने लगे. इस समय हमारे सवार रामके चित्तको कुछ संतोष हुआ और वह अपने मनमें कहने लगा "चलो अच्छा हुआ. पवनने बादलोंको हटा दिया. ईश्वरकी कृपासे अब शीघ्रही प्रकाश हो जायगा तब मैं भी अपना रास्ता लूँगा." वह इस समय यह नहीं जानता था कि जिस हवाको मैं अच्छा समझता हूँ वही मेरे लिये दुःखदायी होगी। एक समय एक बारहसिंगा झीलके किनारे खड़ा हुआ पानी पी रहा था. पीते २ वह अपने सींगोंकी पानीमें छाया देखकर कहने लगा "देखो ! ईश्वरने मेरे सींग कैसे सुन्दर बनाये हैं कि जिनको देखतेही चित्त प्रसन्न हो जाता है परन्तु पैर लकड़ीसे बनाकर देहकी शोभा बिगाड़ डाली. यदि पैर भी अच्छे होते तो मैं सर्वांग सुन्दर बन जाता." वह तो इस

तरहपर पश्चात्ताप करही रहा था कि दैवयोगसे उसी समय उसको एक व्याधेने आ दबाया. अब तो वह दौड़ा और चौकड़ियां भरता हुआ इतना दूर जा पहुँचा कि व्याधा पीछेही रह गया परन्तु उसके सींग एक पेड़में इस तरह पर उलझ गये कि बिचारा वहांसे न छूट सका. इतनेहीमें पीछेसे आकर व्याधेने तीरमारा तब मरते समय उसने कहा ' देखो मैंने कैसी भूल की ? जिन पैरोंकी मैं निंदा की थी उन्होंने तो मुझको इतने दूर ला पहुँचाया कि मैं अच्छी तरह अपनी रक्षा कर सकता था परन्तु जिन सींगोंकी मैंने प्रशंसा की थी उन्होंने मुझको फंसाकर व्याधे के हाथमें डाला " यही दशा उस सवार की हुई हवा ऐसे जोरसे चलने लगी कि सारे पेड़ हिल हिल कर भूमिसे लगने लगे उसके मारे कई पेड़ तो जड़से उखड़ गये और कितनेहीकी डालियां टूट गई जिस बड़के वृक्षके नीचे वह सवार ठहरा हुआ था उसकी एक बहुत भारी डारी टूट गई और भररर करती हुई ठीक उसी सवारके पास जाकर गिरी जिससे उस बिचारेका एक हाथ टूट गया ।

वृक्षके गिरने और सवारके चिल्लानेकी आवाज तो रात्रीहीको पासवाले गांवके लोगोंने सुनली थी परन्तु उस अँधेरेमें घरसे निकलनेका साहस किसका होता है ? उस समय तो कोई भी न आया परन्तु जब प्रातःकाल हुआ चारोंओर प्रकाश फैल गया, चंडूल पक्षी आकाशमें उड़ने लगा, अन्यान्य पक्षिगण भी अपने अपने घोंसलोंको छोड़कर बाहर आने लगे, मुरगे बांग देने लगे, अरुणोदय होगया और वर्षासे तृप्त भूमिमेंसे निकलती हुई सोंधी सोंधी गंधसे सुगन्धित पूर्व दिशाने दिग्विजयको जानेके लिये प्रकट होते हुए सूर्यको प्रेम पूर्वक आलिंगन देनेके लिये केशरिया साड़ी धारण की तो एक अधेड़ वयका मराठा घरसे निकला और गांव बाहर आकर उस गिरे हुए वृक्षके पास जानेका विचार करने लगा परन्तु चारों ओर दृष्टि डालने पर भी उसको उसका पता न लगा. इधर उस सवारका स्वामीभक्त घोड़ा भी प्रकाश होतेही अपने रस्सेको दांतोंसे काटकर स्वामीका उस विपत्तिसे छुटकारा करानेके उद्योगमें गांवकी ओर चला और उस मनुष्यको गांवके बाहर खड़ा देखकर उसके पास जा खड़ा हुआ. जीन सामानसे कसे हुए घोड़ेको इस तरहपर बिलकुल अपने पास खड़ा देखकर उस मनुष्यको आश्चर्य हुआ और उसने उसकी पीठ पर हाथ धरा. अब तो घोड़ा बिलकुल उसके पास चला गया और बराबार उसकी ओर तथा उस गिरे हुए पेड़की ओर इस तरह देखने लगा कि उसकी आंखोंसे गिरते हुए आँसू और उसके मलिन मुखकी ऐसी दशा देखकर उस मनुष्यको कुछ संदेह हुआ. उसने घोड़ेसे कहा "क्या तू मुझको बुलाने आया है?" जिस तरह पर मनुष्य उत्तर देता है वैसेही उस गूंगे पशुने भी उस मनुष्यकी ओर देखकर हिनहिनानेकासा कुछ शब्द किया

और उसके पैरोंको सूंघना आरम्भ किया मानों उसके पैर पकड़ता हो. अब तो वह मनुष्य उसपर बैठ गया और घोड़ा उसको उसी स्थानपर लेजाकर खड़ा होगया जिस जगह वह सवार घायल पड़ा था. वहां जाकर भी वह बारंबार उस टूटी हुई डालीकी ओर मुँह करके हिनहिनाने लगा जिसमें वह मनुष्य पड़ा था. इसपरसे उस मनुष्यने सब बात समझली और उस झाड़ीमेंसे उस सवारको निकालनेका विचार किया. विचार तो उसने किया परन्तु वहांपर इतने पानपत्ते, झाड़ियां और डालियां चारों ओर उलझी और फँसी हुई थी कि उनमेंसे निकालना एक मनुष्यके लिये तो क्या वरन ५ । ७ के लिये भी कठिन था. ईश्वर कृपासे उसी समय कई पोहे चरानेवाले ग्वाल वहांपर जा निकले उनकी सहायतासे उस पुरुषने घायल सवारको बाहर करनेका यत्न किया और बड़ी कठिनाईसे वह झाड़ोंको काटनेमें समर्थ हुआ ज्योंही इन्होंने उस पुरुषको बाहर निकाला कि इधरसे दो सवार आते दिखाई दिये. उनमें एक पुरुष और एक स्त्री थी. दोनोंही घोड़ोंको दौड़ाते हुए जा रहे थे उस पेढ़के पास आतेही कई मनुष्योंको एकत्रित देखकर उनमेंसे पुरुष अपने घोड़ेपरसे उतरा और उन लोगोंके पास गया वहां जाकर वह क्या देखता है कि वह घायल पुरुष उसका परिचितसा जान पड़ता है. अबतो उसने उस स्त्रीको घोड़ेपरसे उतरनेकी आज्ञादी. वह भी वहां आई तो उसको देखकर विस्मित सी होगयी इस समय वहांपर जितने मनुष्य थे उनमेंसे तीन ऐसे थे जिनके प्रत्यक्षमें अपरिचित दीखनेपर भी आंखें उनकी उस घायल मनुष्यकी सूरत देखनेमें लगी थी और जिनके चेहरेपर स्वतः चिंता छागई थी. अपने २ मनकी यह दशा देखकर उन तीनोंको बड़ाही आश्चर्य होता था और वे इसका कारण ढूंढनेमें लगे थे परन्तु कुछ बुद्धि काम नहीं देती थी उन तीनमेंसे भी उस ग्राममेंसे आये हुए अघोर मराठेका जी तो उस घायलमें बहुतही लगा था। यद्यपि वह उसको इस समय पहचानता नहीं था परन्तु उसका अंतःकरण इस बातको प्रकट किये देता था कि उससे किसी प्रकारका घनिष्ठ सम्बन्ध अवश्य है. इसी तरहके विचारोंमें वह पड़ा हुआ था इतनेहीमें उधर उस घायल सवार और उन घोड़ोंपर आए हुए पुरुष और स्त्रीके बीचमें बातें होने लगीं. घायलने कहा "कौन ? सर्जेराव" ! उत्तर मिला "हां ! तुम कौन ? शंभू" ? इतनेमें वह स्त्री भी बोल उठी "कौन भैया ? तुम्हारी यह दशा ? जिसके उत्तरमें शंभूने कहा "बहन रमा ! तू कहां इन तीनोंके ऐसे शब्द सुनतेही उस अघोर मराठेका हृदय भर आया और आंखोंमें पानी भर कर उसने कहा "बेटी रमा ! बेटा शंभू यह तेरी दशा कैसे हुई" ?

अब तो चाचा भतीजा, भाई बहन, और चाचा भतीजी आपसमें मिल मिलकर खूबही रोने लगे. सर्जेराव इस अधीर पुरुष हैबतरावको नहीं पहचानता था और न वह इसे जानता था क्योंकि इन्होंने कभी एक दूसरेको नहीं देखा था परन्तु अब तो सर्जेरावने भी जान लिया कि यह रमाका चाचा है और हैबतरावको मालूम होगया कि यह मेरा दामाद है।

हैबतरावके कुछ संतान तो थी नहीं केवल एक स्त्री थी परन्तु घर इसका अच्छा गिना जाता था, वह भाईके लड़के लड़कियोंहीको अपना समझता था और उनका पुत्रवत् पालन पोषण करता था इसलिये लड़के लड़कियां भी उसे पिताके समान गिनते और चाचाके बदलेमें उसेही पिता कहा करते थे जिस समय शंभु तथा रमाके पिता भालेरावके घरपर यवनोंने धावामारा तो हैबतराव कहीं दूसरे ग्राम गया था, घरमें नहीं था, भालेरावका घर तथा मनुष्य नष्ट होनेके साथही हैबतरावकी स्त्रीको भी दुष्टोंने मारडाला और घरको लूट लिया था. उसी दिनसे शंभु तथा रमाको हैबतरावके जीवित होनेकी तथा हैबतरावको शंभु और रमाके जीवित होनेकी खबर नहीं मिली थी. वे परस्पर एक दूसरेको मरा हुआ मान चुके थे. ईश्वरकी कृपासे आज हैबतरावका सारा कुटुम्ब एकही स्थानमें आ मिला. क्यों न हो! उस सर्व शक्तिमान जगदीश्वर अखिल ब्रह्माण्ड नायक जगदाधार परमेश्वरके सब पास है. वह जो चाहता है सो क्षणभरमें कर डालता है. वह राईको मेरू कर देता है और मेरूको राई बना देता है. कहावत प्रसिद्ध है कि "खाली भरे, भरा ढुरकावै, ढुरकेको भी फेर भरावै" सो यथार्थ है, जो उसकी इच्छा होती है सोही होता है. इस समय उन तीनों जनोंके आनन्दका पार न था और तीनोंही फूले अङ्ग नहीं समाते थे. वास्तवमें बात भी ऐसीही थी. जो परस्पर एक दूसरेको मरा हुआ मान चुके थे और स्वप्नमें भी मिलनेकी आशा नहीं रखते थे वेही तीनों जब जीते जागते मिल गये तब उनके हर्षका कहनाही क्या.

शम्भूके घावपर सबने मिलकर पट्टी बांधी. ग्रामसे डोली मँगवाई गई और उसमें शम्भूको रखकर हैबतराव तो अपने ग्रामकी ओर लिवा ले चला और रमा तथा सर्जेराव भी अपने स्थानको जानेपर तैयार हुए. ठीक उसी समयमें एक सवारने आकर एक लिफाफा सर्जेरावके हाथमें दिया जिसके ऊपर लालरंगके कागजका टुकड़ा चिपका होनेसे जान पड़ता था कि वह अति जरूरी है लिफाफा खोलकर पढ़तेही सर्जेरावके चेहरेपर कुछ उदासी छागई परन्तु उसको दबाकर उसने उत्तर दिया "अच्छा तुम जाओ सरदार साहबसे हमारा सलाम कहना. हमभी आज्ञाके अनुसार आजही अपने कामपर जाते हैं" इतना कहकर उन्होंने सवारको तो लौटाया और दोनोंने घरका रास्ता लिया।

प्रकरण १७.

दम्पतिवाक्यविलास।

वर्षा ऋतुके दिन हैं. संध्याका समय है, सूर्य भगवान् अस्ताचलको जा रहे हैं, इसी कारण पूर्व दिशाका सारा सौभाग्य पश्चिम दिशाको प्राप्त हो गया है, पूर्वमें शनैः २ अँधेरा अपना राज्य जमाता जाता है, पश्चिममें शोभा होती जाती है मानो वह यह बात कह रहा है कि, सदा समय एकसा नहीं रहता इस लिये जो कुछ सुकार्य और दान पुण्य करना हो सो 'गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्' अर्थात् 'यह समझकर कि मृत्युने मेरे केश पकड़ रक्खे हैं धर्म कर डालना चाहिये.' इस नीतिके वचनानुसार तुरंतही कर डालो. पूर्वदिशा तो अब भयानकसी जान पड़ती है और पश्चिममें आनन्द होरहा है, सूर्यास्त समयकी लाली बादलोंमें छाई हुई है, शीतलमन्द, सुगंधित वायु चल रहा है, पक्षीगण अपने २ घोंसलोंकी ओर जा रहे हैं, और गायें भी अपने २ घरोंकी ओर दौड़ती जा रहीं हैं, मानो देखने वालोंको उपदेश करती हैं कि दिनभर अर्थात् उमरभर खूब खेलने कूदने उपरांत अब रात्रि अर्थात् मृत्युका समय बिलकुल निकट आगया है इस लिये अपने अस्ली घर और पालन करनेवाले ईश्वरके पास दौड़कर जानेका यत्न करो, जो अँधेरे अर्थात् अज्ञानसे मार्ग दीखना बंद हो जायगा और मार्गमें चोर अर्थात् काल बलि आ घेरेगा तो कहींके कहीं चले जाओगे, अपने अस्ली घर नहीं पहुँच पाओगे. समयका रंग देख देख कर शांति और आनन्द आदि मनोवृत्तियोंमें स्वाभाविक उत्तेजना आती जाती है, हृदयस्थित मनोविकार स्वयं नष्ट होता जाता है, और प्रत्येक वस्तुकी बनावट, प्रत्येक पदार्थकी सूरत और हर एक चीजका रंग ढंग, गुण, स्वभाव तथा प्रकृतिको देखकर चित्त उसके बनाने वालेकी ओर खिंचता जाताहै जिससे मालूम होताहै कि हमारे ऋषिमुनियोंने जो यह संध्या और प्रभातका मनोहर समय ईश्वर भजनमें लगानेके लिये नियत किया है सो बहुतही ठीक है, क्योंकि चित्तको एकाग्र करनेके लिये यह बहुतही उत्तम समय है.

इस समय जैसी शोभा आकाशकी है स्थान भी वैसाही मनोहर बना है; एक लम्बा चौड़ा चौकोना बाग लगा हुआ है, चारों ओर जिसके दीवार पक्की खिंची हुई है, अन्दर इमलीके पेड़ बराबर अन्तरपर चारों ओर लगे हैं, उनके आगे आम, आमके आगे जामुन, जामुनके आगे अमरूद, अमरूदके आगे नींबू और नींबूके आगे केलाके वृक्ष इस सुन्दरता और सफाईसे कतार बंद लगे हैं मानों थियटरकी नकल कीगई हो, अन्दर घुसनेपर चारों ओरकी

क्यारियोंमें गुलाब, केवड़ा, बेला, चमेली, आदि सुगन्धित पुष्पोंकी झाड़ियां लगी हुई हैं. इन सबके बीचमें एक छोटासा हौज पानीसे लबालब भरा है जिसके ऊपर जाली पड़ी हुई है और अंदर लाल, पीली आदि रंग रंगकी मछलियां तैर रही हैं. हौज तक आनेके लिये चारों दिशाओंसे चार मार्ग बने हुए हैं जिनपर दोनों ओर गमले रक्खे हुए हैं हौजकी चारों दिशाओंमें चार बढ़िया संगमरमरके चबूतरे बने हुए हैं जिनपर खुशीसे बैठकर लोग बातें कर सकते हैं.

उन्हींमेंसे एक चबूतरेपर एक बाला स्त्री निंबुआई रंगकी अँगिया और श्याम रंगकी साड़ी पहने हुए बैठी है. उसके मुखकी सुन्दरता और गौरताको देखकर आंखें चकित होती हैं. अधिक क्या कहें परन्तु काली साड़ीमें उसका मुँह ऐसा मालूम होता है मानों अभी हालही काले २ बादलोंको फाड़ कर पूर्ण चन्द्र उदय हुआ है. स्त्रीके मुखकी शोभामें किसी कविने कहा है कि-

कवित्त-शोभा तीनों लोककी अकेली तू सकेलि लाई, गाई कवि वेदन अठारहों पुरानन में। रामके निहोरे मति जाव धूप सीतहूमें, मेरो कह्यो मान नहिं परैगो शोर जहानमें॥ कहैं कविकालीदास होयगे उत्पात घने, तेरो मुख देखे छवि रहैगो न भानमें। सारथी समेत सूर्य मूर्च्छित परैगो भूमि, खाली रथ भटकत फिरैगो आस्मानमें ॥

सोही सब लक्षण इस स्त्रीके मुखमें पाये जाते हैं. इसने अपने आंचलमें तो ले रक्खे हैं भांति भांतिके रंगबिरंगे सुगन्धित पुष्प और हार बनानेमें ऐसी आंखें गाड़ रक्खी हैं कि उसको अपने देहकी भी पूरी सुधि नहीं है. सायंकालका मंद पवन भी इस समय मौजमें आ रहा है और शनैः २ अपने वेगसे इस स्त्रीके सिरपरसे साड़ीको हटाता जाता है. यहां तक कि वह उसको हटाते हटाते कमर तक ले आया है, सारे धड़को आगे और पीछेसे उघाड़ चुका है और अब सिरके काले काले चिकने और रेशम जैसे नरम बालोंको भी उड़ाने लगा है. जिस तरहपर वायुके वेगसे पतले पतले बादल बारम्बार चन्द्रमाको ढांक लेते और फिर खोल देते हैं वैसेही बालोंसे इस स्त्रीका मुख कभी ढक जाता है और कभी खुल जाता है परन्तु इतनेपर भी उसने अपना काम नहीं छोड़ा है वह हार बनाती जाती है और बड़े सुरीले स्वरसे आनन्द पूर्वक "बरखा आई सखी अब मनको भायो कारे होरी" गाती जाती है. यद्यपि सायंकालका समय हमारे ऋषि महर्षियोंने भगवद्भजनके लिये नियत किया है और होना भी ऐसा ही चाहिये परन्तु इस समय इस स्थानका दृश्य देखनेसे चित्त कदापि उस ओर नहीं लग सकता है. इतनाही नहीं वरन् और मनोविकार उत्पन्न होता है. कैसाही त्यागी और विरक्त मनुष्य क्यों न हो परन्तु इस समय जो भूल

कर भी इस बागमें आजाय और एकबार चारोंओर घूम फिर कर इस हौजके पास पहुँच जाय तो थोड़ी देरके लिये वह भी अवश्यही मुग्ध होकर अपने विचारको बदलनेका यत्न करने लगै। यत्न न करने लगै परन्तु स्वयं उसकी मनोवृत्तिही बदल जाय तो आश्चर्य नहीं है.

ऐसे समयमें एक युवा पुरुष वहां आ खड़ा हुआ और बोला " क्यों यह क्या होरहा है ? "

अब तक तो वह अपने काममें ऐसी मग्न हो रही थी कि उसको किसी बातकी सुधिही नहीं थी परन्तु न जाने इन शब्दोंमें ऐसा क्या प्रभाव भरा हुआ था कि इनको सुनतेही वह एकदम खड़ी होगई और बोली " प्राणनाथ ! हार बना रही हूं "

पुरुषने पूछा–"किसके लिये " ?

स्त्री–" आपके लिये ! और किसके लिये ? मुझको औरसे काम भी क्या है " !

पुरुष–'मेरे लिये ? आज क्या है ? "

स्त्री–है क्या ? वर्षा ऋतुहै और जिसमें भी आषाढ़का महीना है. खूब ठंडक हो चुकी है. '

पुरुष–"ठंडक हो चुकी है तो क्या करैं ? "

स्त्रीने हँसकर कहा "आपकी इच्छा हो सो कीजिये."

पुरुष–" हमारी तो कुछ भी इच्छा नहीं है तुम कहोना ! क्या चाहती हो. "

स्त्री–' क्या आप नहीं जानते हैं ? अच्छा मैं ही बता दूंगी. '

पुरुष–' तो कब बताओगे ' ?

स्त्री–' तो क्या अब इतनी जल्दी पड़ गई ' ?

पुरुष–' जल्दी नहीं तो ! अब जी अकुलाता है. '

स्त्रीने हँसकर उत्तर दिया–' थोड़ी देरमें भेटदूंगी. '

पुरुष–' प्यारी तेरी तो बात कुछ समझमें नहीं आती. बतातो दे है क्या ? '

स्त्रीने फिर हँसकर कहा 'कोई नई चीज तो है नहीं जिसके लिये आप इतने आतुर हो रहे हैं, वही पुरानी चीज है सो भी अभी थोड़ी देरमें बताए देती हूँ'

पुरुष–'तुम तो और भी मुझको चक्करमें डालती हो. सच तो कहो क्या है और कब बताओगी.'

स्त्री–'क्या ऐसेही बताई जाती है ? '

पुरुष–'ऐसे नहीं तब कैसे ? '

स्त्री–'बड़ी मेहनत करनेसे देखनेको मिलैगी–'

पुरुष-" अच्छा तुम कहोगी सो सब कुछ मेहनत हम कर लेंगे परन्तु अब तो बताओ क्या बात है. "

इतना सुनतेही स्त्री मुसकरा कर नीची गरदन कर ली और कहा "अभी तो सायंकालका समय है, रातको मेरे पास आना तो बताऊंगी. "

अब तो पुरुषने उसका भाव समझ लिया और हँसकर कहा 'बस ! इसकेही लिये इतनी देरसे मुझको हैरान करती थी ? खैर देखा जायगा परन्तु तुमने इतनी मेहनत इसके लिये क्यों की ? क्या कोई दूसरा काम नहीं था ?"

स्त्रीने उत्तर दिया-"मैंने मेहनत आपके लिये की है. सो इसका बदला आजही मैं आपसे लेलूँगी. "

पुरुष-'अच्छा लेलेना, मैं कब इनकार करता हूं परन्तु तुमको अपने वस्त्रकी भी सुधि है ? यह क्या दशा कर रक्खी है. ? "

"दशा क्या कर रक्खी है ? इस बागमें आपके और मेरे सिवाय कोई तीसरा मनुष्य तो आपकी आज्ञाके विना आही नहीं सकता है फिर डर क्या है. इसके सिवाय यह ऋतुही ऐसा है. मैं क्या करूँ, ज्यों २ समय पास आता जाता है त्यों २ वस्त्र पहलेहीसे दूर होते जाते हैं. " इतना कहकर स्त्रीने अपने दहने हाथसे वह हार उस पुरुषको पहनाया और बायाँ हाथ उसके गलेमें डालकर वह स्वयं हार बन गई.

थोड़ी देरतक कुछ प्रेम संभाषण होने उपरांत स्त्रीने पूछा "प्राणनाथ ! यह तो बताओ ! आज सबेरे आपने उस बडके पेड़के नीचे उस सवारसे कहा था कि 'सरदार साहबसे हमारी सलाम कहना. हम भी आज्ञाके अनुसार आजही अपने कामपर जाते हैं' सो बात क्या थी. वह सवार कौन था ? "

पुरुषने उत्तर दिया "काम जरूरीके लिये मालिकने मुझको जल्द बुलाया है सो कल जाना पड़ेगा. "

स्त्रीने उत्तर दिया "नहीं २ ऐसा कभी नहीं हो सकता. मैं आपको इस समय कैसे जाने दूंगी. देखिये तो:-

कवित्त-आढ़ आढ़ करत असाढ़ आयो चहूं ओर, कारे पीरे बादर देखात वेस
भार है। हरी हरी भूमि पर इंद्रवधू फैल रही, जहां तहां मोर शोर
करत अपार है ॥ जुगनू चमक हिय आनंद बढ़त चारु, तापै मेघराज
करै वृष्टि निराधार है। ऐसे समयकोड पिय प्यारे ! परदेश जात ?
आनँद अनूप वेस बरषा बहार है ॥

पुरुषने उत्तर दिया 'प्यारी तुम्हारा कहना ठीक है परन्तु क्या करें, गये विना काम भी तो नहीं चल सकता. जिसका नमक खायँ उसका काम भी तो करनाही चाहिये. ऐसा न करनेसे इस लोकमें मालिक अप्रसन्न होता है संसारमें निंदा होती है और परलोकमें ईश्वर रुष्ट होता है. जाना तो अवश्यही है. तुम मुझको मत रोको."

इतना सुनतेही उसके हाथ पैर ठंडे होगये और रोनेके मारे खिसकियां भरते २ उसने कहाः-

कवित्त-छांड़े मोहि काहेको जात हो विदेश कंथ काके मैं कंठ लागि अधरामृत चाखिहों। पावस ऋतु फेरो कियो गगनमें अंधेरो आय निज सुख सँदेशो कहो काखोंमैं भाखिहों॥ कोधि कोधि मेघ जब गरजि हैं चारों ओर सूरति छवि देखनको जियमें अभिलाषि हों। करिहैं बेचैन मोर कोकिला पुकारि वैन हाय प्राण प्यारे! प्राण कैसे तब राखिहों॥

पुरुषने उत्तर दिया "प्यारी! मैं सब जानता हूँ परन्तु उपाय क्या? तुमही बताओ अभी न जानेमें कितनी हानि होगी. गये विना कामही नहीं चल सकता. प्रथम तो हम पराधीन हैं, जो आज न गये और मालिकने छुड़ा दिये तो फिर दूसरी जगह ढूंढ़नी पड़ैगी। दूसरे यह कि शायद हमारे न जानेपर मालिकको हानि उठानी पड़ी तब भी हमारेही सिरपर कलंक रहेगा और लोगोंकी दृष्टिमें बेईमान ठहरेंगे. इससे इस समय तो मुझे जानेसे मत रोको. परमेश्वरकी कृपासे जलदही लौट आऊंगा. तुम स्वयं बुद्धिमती और चतुर हो. तुमसे कहनेकी कुछ आवश्यकता नहीं है, परन्तु तब भी मेरी एक शिक्षा है उसको मानना:-

कवित्त-तुमतो सयानी शरमानी हो चतुर नारि अपने पतिव्रतमें कलंक ना लगाइयो। रहियो भलीभांति ध्यान धरियो प्रभु ईश्वरको करिकै शृङ्गार नैन बाणना चलाइयो॥ यह है बुरो यामें होतहै अकाज काम अपनो मन रोकि कवौं बाहर मत जाइयो। बदन उघारि मुख बोलियो न काहू सों घरके किवार दिन डूबते लगाइयो॥

स्त्रीने जैसे तैसे अपने मनको समझाया और रोना रोककर कहा.

कवित्त-जात हो विदेश वेगि भेजियो संदेश मोहि छोड़िकै भरोस नैन अन्तना लगाइयो। रहियो अशोच ध्यान धरियो नरायणको परधन परदारा पर चित्तना चलाइयो॥ चलियो न कुरीति पर चाकरीकी यही रीति छोड़ि शूर संग कूर कायर ना कहाइयो। करिकै सिवकाई औ मालिकै रिझाय पुनि मांगिकै रजाय घरै तुर्त चले आइयो॥"

इस तरहपर परस्पर उपदेश करके दोनों सो रहे. स्त्री तो बारम्बार परमात्मासे यही प्रार्थना करती थी किः-

दोहा-सजन सकारे जायँगे, नैन मरेंगे रोय।
बिधना ऐसी रैनकर, भोर कभू नहिं होय॥

परन्तु उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं हुई और प्रातःकाल होगया. जब पुरुष घोड़ा कसके जाने लगा तो.

सवैया–जात सभै जब उत्तम आशिप, देन लगे गुरु लोग विशेषन।
कोठिके भौन झरोखन बैठिकै, लगी सई झांकन चाहके लेखन॥
सूखे उसासनते अधरा, अंसुआनते भीग्यो उरोज असेखन।
चंचलके सब चाऊ वधू निज, प्राणपतीको लगी वह देखन॥
इस तरहपर हमारे सजैराव और रमा दोनों विछुड गये।

प्रकरण–१८.

दरबार मालोजी।

वेरूल पहुँचकर मालोजीने अपना वही काश्तकारी और पटैलोईका धन्धा आरम्भ किया, वहीं अपना घर बना लिया और सकुटुम्ब सब साथवाले मनुष्यों सहित उसीको अपना निवासस्थान नियत कर लिया। किसीने कहा है:–

कवित्त–रूठै क्यों न राजा वाको कछु नाहिं काजा एक, होवे महाराजा और कौनको सराहिये। रूठै क्यों न भाई वाको कछु ना पराई एक, तूही है सहाई और कौन पास जाइये॥ रूठै क्यों न शत्रु मित्र आठों याम एक रस, रावरेके चरणोंमें नेहको निबाहिये। जगत है झूँठा एक तूही है अनूठा सब, चूसैंगे अँगूठा एक तू न रूठा चाहिये॥

सो वास्तवमें सत्य है, जब परमेश्वर सानुकूल होता है तो किसीके करनेसे बाल भी बांका नहीं होता। जब भाग्य उदय होता है तो लोगोंकी बुराईका भी फल अच्छाही होता है। मैं पहले कह आया हूँ कि 'परमेश्वर जो करता है सो सब भलेहीके लिये' बस वही बात मालोजीसे हुई। जबतक वह देवलगांवमें रहे तो केवल दिहाती किसान बने रहे उस समय कोई भी नहीं जानता था कि एक दिन यह खरा राजपूत अपने पूर्वपदको पावैगा, परन्तु भाई बन्धुओंका द्वेष उनके लिये अच्छा निकला और वेरूलका निवास भाग्योदयका मूल पाया होगया। मालोजीने देवलगांव क्या छोड़ा उसी दिनसे अपने किसानी जीवनको तिलांजली दे दी और २।३ पीढ़ियोंसे छूटे हुए अपने राजपूती धन्धेको हाथमें ले लिया। देवलगांव छोड़नेका दिन उनके लिये भाग्योदयका प्रथम दिन निकला और उसी दिनसे वह शनैः २ बढ़ने लगे।

थोड़ेही समयमें उन्होंने वहांपर थोड़ीसी खेतीकी जमीन मोल करली और वह सुखसे रहने लगे रहने तो वह लगे सुखसे परन्तु जिस सुखको और लोग सुख समझते हैं उसको वह सुख नहीं समझते थे। यद्यपि खाने पीनेका उनको सब तरहपर यहां भी सुखही मिल गया था परन्तु वह उससे संतुष्ट न थे वास्तवमें बात भी ठीक थी क्योंकि जब तक मनुष्यको अपना पैत्रिक कर्म

नहीं प्राप्त होता है तब तक उसके चित्तको संतोष नहीं मिलता है। मालोजी सूर्यवंशीय क्षत्रिय और सो भी प्रसिद्ध हठीले मेवाड़ घरानेमें उत्पन्न हुए थे. फिर उनको जमींदार बनकर रहना कैसे पसन्द होसकता है ? अवस्था बढ़नेके साथ साथही देश जाति और कुलका अभिमान भी उनमें बढ़ताही गया। और इसीका यह फल निकला कि अब उनके मनमें अपनी गई हुई कीर्तिको प्राप्त करनेके लिये फिर अपनी शमशेर चमकानेकी तरंगें उठने लगीं. तरंगे तो उठने लगीं परन्तु बिना साधन काम नहीं चल सकता और साधन मिलना कुछ सहज नहीं था इसीसे उनको विचार करनेमें और उपाय सोचनेमें कई दिन लगगये । नीतिमें लिखा है कि:-

श्लोक-उद्यमः खलुकर्त्तव्यः फलं मार्जारवद्भवेत् ।
जन्म प्रभृति गौर्नास्ति पयः पिबति नित्यशः ॥

अर्थात् बिल्ली न गाय रखती है न भैंस, न उसके घर है न द्वार । परन्तु केवल उद्योगहीसे वह नित्य तथा दूध पीती है, दही खाती है और मक्खन चखती है. तात्पर्य यह कि संसारमें उद्योगही एकसार वस्तु है और उद्योगहीसे प्रत्येक काम पार पड़ सकता है. इसी उद्योगमें मालोजी भी तनमनसे लगेथे.

जिस समय मालोजी वेरुळ गांवमें रहने गये थे उस समय निजामशाहकी ओरसे दौलताबादमें लखूजी जादवराव देशमुख १२००० सवारोंके सेनापति थे. मालोजी उन्हींके पास पहुँचे. इनका नाम जादवराव बहुत दिनोंसे सुनते आते थे. उनकी सूरत देखकर वह और भी मोहित होगये और उन्होंने मालोजीको तुरंत अपने पास ५ होन * मासिकमें नौकर रख लिया. यद्यपि इस समय मालोजीको दरबानीका काम मिला था परन्तु इससे उनके हाथमें हँसिया छूटकर तलवार आई थी. इसलिये उन्होंने 'अंगुली पकड़ते पहोंचा हाथ आने,' की आशामें उक्त तुच्छपदको भी स्वीकार कर लिया । और अपना काम बहादुरी और ईमानदारीसे सुखपूर्वक करना आरम्भ किया. शनैः २ इनका काम बढ़ने लगा. बैठनेको घोड़ा मिल गया और मालिकका इन पर विश्वास भी पूर्ण जमगया. यहां तक कि थोड़ेही समयमें लखूजी जादवरावके आग्रहसे इनको अपने वेरुळगांवकी नौकरी और देवळगांवकी पटेलाई जमीनका पैसा वसूल करने तथा प्रबन्ध करनेका अधिकार आबाजी गोविंद नामक एक होशियार और विश्वासपात्र ब्राह्मणको देना पड़ा और दोनों भाई सिंदखेड़में जाकर रहने लगे.

जिस समयका यह वृत्तांत है भारत वर्षमें आजकलकी तरह एक मालिक के हाथमें प्रबन्धकी लगाम नहीं थी. उस समय 'जमीन और जोरू जोरकी' हो रही थी. जिसके पास सेना होती और बल होता वही राजा बन जाता

* होन दक्षिणका पुराना सिक्का था. एक होन ३॥) के बराबर होता था,

था और जिसके हाथ जो भूमि पड़ जाती थी वही उसको अपना राज्य समझ लेता था. इस तरह पर अनेक छोटे २ सुबेदार लोग स्वतंत्र नव्वाब बने बैठते थे, दक्षिणमें भी इसी प्रकार कई मालिक बन बैठे थे. जिस समय मालोजी लखूजी जादवरावके यहां नौकर रहे अहमदनगर और बीजापुरमें परस्पर झगड़ा चला करता था. इसीमें मालोजी भी समय २ पर अपने मालिककी ओरसे जाया करते और विजय प्राप्त करते रहते थे. इससे मालिककी उनपर दिन प्रति दिन मरजी बढ़ती गई और शनैः २ पद भी बढ़ता गया. यहां तक कि आवश्यकता पड़ने पर लखूजी जादवराव सौ २ दो २ सौ सवार उनके सिपुर्द कर देते थे और प्रत्येक लड़ाई झगड़ेके समय उनहीको आगे कर दिया करते थे, मालोजी भी अपने स्वामिकी सेवा करनेमें अपने तन मनसे तैयार रहते थे और प्राण तकको होम देनेमें कभी पीछे नहीं हटते थे. जबसे मालोजी उनके पास नौकर हुए तबसे लखूजी जादवरावको अपने काम काजकी अधिक खट पट और सोच विचार नहीं करना पड़ता था. सब काम मालोजीही करते थे और इसीसे वह पूर्ण विश्वास पात्र बन गये थे. समय २ पर तलवार, वस्त्र, आभूषण तथा नकद रुपये भी उनको इनाममें मिला करते थे. लखूजी जादव राव स्वभावके बड़े वहमी थे इसलिये इतना होनेपर भी उनको मालोजीकी ओरसे संदेह रहता था और मौका पड़ने पर वह गुप्तरीतिसे उनके आचरणों की जांच किया करते थे परन्तु 'सांचको आंच क्या' जो शुद्ध चित्तसे काम करता है उसकी चाहे जितनी परीक्षा की जाय परन्तु कभी छिद्र नहीं पाए जा सकते.

सर्व शक्तिमान् परमात्माकी पूर्ण कृपासे अब मालोजीको सब सुख प्राप्त होगया था। घरमें स्त्री सुपात्र और आज्ञापालक थी, बाहुबल भाई भी मौजूद था। खाने पीनेका सब तरह ठाठ बाठ था और अधिकार भी अच्छीतरह मिल गया था। नीतिके इस वाक्य श्लोक—"प्रथमं देहनैरोग्यं द्वितीयं गृहसम्पदः। तृतीयं राजसम्मानः चतुर्थं पण्डितः सुतः।" के तीन पदोंका सुख मालोजीको प्राप्त था. परन्तु चौथा उनके पास नहीं था इसीका उनके चित्तको दुःख था। संसारमें पुत्ररत्न सबसे बढ़कर गिना जाता है और उससे सुख भी है इसमें सन्देह नहीं परन्तु वह सुख तबही मिलता है जब पुत्र सुपात्र हो। यदि कुपात्र मिलगया तो सुखसे हजार गुना दुःख होजाता है। यों तो पुत्रसे माता पिताकी सेवा और वृद्धावस्थामें पोषण होता है तथा कुलकी वृद्धिभी पुत्रसेही होती है परन्तु कुपात्र पुत्रसे कुल रसातलको भी चला जाता है। यदि वास्तवमें देखा जाय तो पुत्रसे लाभके बदले हानि और दुःखही अधिक मिलता है। सुभाषितमें लिखा है कि:—

श्लोक—पुत्रः स्यादिति दुःखितः सति सुते, तस्यामये दुःखितः
तद्दुःखादिकसाध्ने तदनये, तन्मूर्खतादुःखितः ॥
लासश्चेत् सुगुणोऽथ तन्मृतिभयं, तस्मिन्मृते दुःखितः
पुत्रव्याजमुपागतो रिपुरयं, मा कस्य चिज्जायताम् ॥

अर्थात् पुत्र न होनेका दुःख होता है, होनेपर रोगी होनेका दुःख होता और फिर इलाज करानेका दुःख होता है, तदुपरान्त यदि वह मूर्ख हुआ तो और भी उसके लिये दुःख होजाता है, यदि पण्डित भी हुआ तो मरनेका भय रूपी दुःख सदा सवार रहता है और जो वह मरगया तो फिर कहनाही क्या है, जन्मभरके लिये महा दुःख होजाता है। इस तरहपर सन्तानसे अधिकांश दुःखही मिलता है। इस लिये कविने कहा है कि पुत्ररूपी शत्रुका तो न होनाही अच्छा है।

इतनेपर भी पुत्रलालसा संसारको पागल बनाए डालती है। प्रत्येक मनुष्य पुत्र प्राप्त करनेके लिये यथासम्भव यत्न करता है और पुत्र न होनेसे अपना दुर्भाग्य समझता है। सालोजी इन सब बातोंको भली भांति जानते थे। इस लिये उनके चित्तको इसका अधिक दुःख नहीं था. वह अपनी स्त्री दीपा- बाईको समय २ पर पुत्रसे होनेवाले दुःखोंको सुनाया और समझाया करते थे और कविके इस वाक्य-

दोहा—पुत्र सदा दुख देत यों, बिना प्राप्ति दुख एक ।
गर्भ समय दुख जन्म दुख, मरे तो दुःख अनेक ॥

का प्रमाण दिया करते थे. परन्तु स्त्रियोंको बांझ रहनेका बड़ा दुःख होता है। इस लिये उनके कहनेपर भी उसको सन्तोष नहीं होता था। प्रत्यक्षमें तो पतिके आगे वह कुछ नहीं बोलती थी. परन्तु मनही मनमें उसको बड़ा दुःख था। इसी चिन्तामें उसका सारा शरीर ऐसा सूख गया था कि उसकी ओर देखनेसे भय होता था। वह इस कामनाके लिये प्रदोष, सोमवार, चौथ, एका- दशी, पूर्णिमा आदि अनेक व्रत करती और यथा सम्भव ब्राह्मण भोजन भी कराया करती थी। पति पत्नी दोनोंको खिंगणापुरके महादेवका बड़ा इष्ट था और वे समय २ पर दर्शनोंके लिये वहां जाया भी करते थे। साधु महात्माओं में इनको बड़ी भक्ति थी और तो क्या परन्तु मुसलमान फकीर तक इनके द्वारसे बिना सत्कार पाए नहीं जाते थे।

सालोजीको जन्महीसे खिंगणापुरके महादेवका इष्ट था. परन्तु पुत्र कामनाके लिये अब तो पति पत्नि दोनोंको और भी अधिक भक्ति होगई थी. सब तो पाठक पहले जानही चुके हैं कि चैत्र मासमें खिंगणापुरमें एक भारी मेला लगता था परन्तु उस समय वहां पानीका बड़ा कष्ट था. महादेव तो

विशाल है पर्वतके ऊपर और पानी लेजाया पडताथा नीचे की नदीसे इसमें यात्रियोंको बड़ाही कष्ट होताथा। इस कष्टको मिटाने और अपना नाम अमर करनेके लिये मालोजीने पर्वतके ऊपर पक्का तालाब बनानेका विचार किया. यद्यपि इस समय उनके पास इतना पैसा नहीं था कि जिससे उनका विचार पूरा पड़ जाय परन्तु इस कार्यके लिये उन्होंने अपनी जमीन गिरवी रखदी और शेषोजी नायक पंडेसे रुपये उधार लेकर काम आरंभ करनेका विचार किया. तालाबका काम आरम्भ करने पूर्व मालोजीने शिंगणापुर साथ ले जानेके लिये अपने संबंधियोंको याद किया और संभाजी, खजेंराव, आदिके पास आदमी भेजे परन्तु उत्तर यही आया कि संभाजी निंबालकर नायक जगपालरावके यहांसे कई मास हुए किसी कामके लिये भेजे गये थे सो लौटे नहीं, खजेंरावकी भी यही दशा हुई, रमाका कहीं पता नहीं है और हैबतराव तथा रामभाऊ और सीताकी भी कुछ खबर नहीं कि कहां हैं. यह बात सुनकर भोंसले नायक मालोजीको बड़ा दुःख हुआ जिसमें भी संभाजी, रमा और खजेंरावके लिये तो उनको बहुतही दुःख हुआ क्योंकि दोनों भाई बहनोंको उन्होंने दुष्ट यवनोंके हाथसे छुड़ाकर अपने सगे भाई बहनकी तरह रक्खा था और रमाके पति होनेके कारण खजेंरावको भी वह बहनोईके समान गिनते थे. प्रथम तो उन्होंने स्वयं ही उनको ढूंढने जानेका विचार किया परन्तु उनको नोकरीसे इतना अवकाश और छुट्टी न मिल सकी इस लिये आवजी गोविन्दको तो उन्होंने शिंगणापुर तालावके प्रबंधके लिये भेजा. रामजीको साधुका वेष बनाकर संभाजी खजेंराव तथा रमाकी खोजमें रवाना किया और दो चार होशियार मनुष्योंको एक स्थानसे दूसरेके खबर पहुँचानेके लिये डांकिया नियत किया। इस समय यदि लक्ष्मण भट्ट होता तो मालोजीको अधिक चिंता और खटपट न करनी पड़ती वह इस काममें बड़ा चतुर था और इस तरह पर जाता आता तथा अपना काम निकाल लेताथा कि किसीको भी नतो उसपर कुछ सन्देह होता था और न कोई उसको कभी पहचानही सकता था आज कल सैकड़ों रुपयेके खर्चसे जो डिटेक्टिव अर्थात् गुप्त पुलिस द्वारा सरकारका काम निकलता है वह गुप्त भेद निकालनेका वह काम करता था कई पीढ़ियोंसे उदयपुर छूटजानेपर भी अभी लक्ष्मण भट्टका मन मेवाड़में ही लगा था और इसी लिये समय समय पर वहांकी खबर निकालने वह उदैपुर आया करता था. इस समय पर भी वह मेवाड़हीमें विचरण कर रहा था. इस बातका मालोजीके चित्तको पूरा दुःख और शोक था।

प्रकरण १९.

विपदामें हैवतराव।

आश्विनका महीना है, वर्षा खूब होचुकी है, जिधर दृष्टि जाती है उधर ही हरा भरा दिखाई देता है, बाग बगीचे, वन उपवनके प्रत्येक वृक्षको योवन आ रहा है, लाल, पीले, सफेद, गुलाबी, नीले आदि रंगोंके फूल ऐसे शोभा देते हैं मानों रत्नगर्भा पृथ्वीने अपने पेटमेंसे हीरे, पन्ने, पुखराज, मोती आदि निकालकर माला धारणकर रक्खी हो. सुन्दर नवयौवना सद्यःप्रसूता स्त्री अपने नवोत्पन्न बालकको गोदमें लेकर जिस समय बड़ी सजधजके साथ जलाशयका पूजन करनेको जाती है उस समय वह जैसी शोभायमान लगती है वैसीही अपने नवोत्पन्न अन्नको गोदमें लिये भूमि शोभा दे रही है. आज आश्विन शुक्ला देव्यष्टमीका दिन है और कलही विजयादशमीका उत्सव होने वाला है. घर घरमें नवरात्रिका अंतिम हवन होरहा है, क्षत्रिय अपने अपने शस्त्रोंको स्वच्छ और साफ कर रहे हैं, कोई तलवारको मलता है तो कोई बंदूकको घिसता है, कोई कटारको पोंछता है तो कोई छुरीको पैनी कर रहा है, कोई अपने घोड़ोंको नहला रहा है तो कोई अपने श्वेत अश्वकी पीठ पर मेंहदी लगा रहा है, कोई उसकी अयाल गूंथरहा है तो कोई उसके सुमोंको ठीक कर रहाहै, कोई जीनको साफ करता है, कहीं दुमची और मोहरेकी सफाई होती है, कोई रकाबको ठीक करता है तो कोई लगामकी दुरुस्ती करता है, कोई बारूद गोलीको सँभाल रहा है तो कोई बंदूककी टोपियां गिन रहा है, कोई अपना कमर पट्टा ठीक कर रहा है तो दूसरी ओर म्यान और ढालकी सफाई होती है. इस तरहपर क्षत्रियमात्रमें दशहेरकी खुशीका सामान हो रहा है

ऐसे समयमें भीमा नदीके किनारेपर एक पचीस वर्षके लगभग अवस्थावाली ब्राह्मणस्त्री ४।५ वर्षके बालकको लिये बैठी है. कलही वर्षा इतने जोरसे होगई थी कि भीमाकार भीमा अपने किनारेको पूर कर बड़े जोर शोरसे जा रही है. उसमें पड़ते हुए भ्रमरोंको देखनेसे चित्त घबराता है और ऊंची ऊंची लहरों और फेनके मारे उसकी सूरत बिलकुलही समुद्रके समान बन गई है. योंतो इन दिनोंमें यह नदी कई स्थानोंपर पायाप हो जाती है परन्तु आज उस बातका स्वप्नमें भी विचार नहीं हो सकता. ऐसे समयमें पानीके कीड़े कीरोंका भी साहस नहीं होता कि नाव डाल दें। उस विचारी स्त्रीकी सूरत देखनेसे मालूम होता है कि वह बहुत दूरसे चली आई है और इसीसे उसके चेहरेपर पसीना आरहा है. तथा सारा शरीर मार्गश्रमसे थकित

होरहा है. लड़का भूखके मारे रोता है परन्तु खानेको एक टुकड़ा भी नहीं है और न मिलनेकी कुछ आशाही है भूखके मारे पेट तो उस स्त्रीका भी पाताळमें बैठ गया है और बैठताही जाता है परन्तु जब उसके बालक पुत्रहीके खानेका ठिकाना नहीं है तब उसके लिये तो आशाही कहांसे ? प्रातःकालसे वह यहांपर बैठी हुई है परन्तु दस बजजाने तक भी कोई उतरनेकी सूरत नहीं दीखती अब तक तो बाल सूर्यकी किरनें अच्छी लगती थीं परन्तु ज्यों ज्यों वह पूर्णावस्थाको प्राप्त होते जातेहैं त्योंही त्यों उनका बल और पराक्रम भी बढ़ता जाता है. शनैः २ उनका तेज असह्य होरहा है जिसमें भी वह ४।५ वर्षका बालक तो उसको बिलकुलही सहन नहीं कर सकता न आगे कहीं ग्राम दिखाई देता है न पीछे कहीं बस्तीका पता है. जिधर देखो उधर जङ्गल, बेहड़, तथा पानीके सिवाय कुछ भी नहीं दीख पड़ता. ऐसे स्थानमें प्रथमही बिचारीका मन भयभीत होरहा है. जिसमें भी ज्यों २ सूर्य भगवान ऊंचे चढ़ते जाते हैं और दिन ढलता जाता है त्यों २ ही और भी भय बढ़ता जाता है. इतने पर भी क्षुधासे पीड़ित और गरमीसे दुःखी बालक रो रोकर प्राण देता और खानेको मांगता है. यह दुःख माताले नहीं सहाजाता कोई भी माता पुत्रको इस तरहपर रोते और चिल्लाते नहीं सुन सकती परन्तु यह आफतकी मारी हुई चुपचाप सुन रही है. दुःख तो उसके भी चित्तको बहुत होरहा है. वह भी चिल्ला २ कर रोतीहै और सिर पीटतीहै परन्तु तुरतही उसको अपने बालकके घबरा उठनेके भयसे रोना रोकना पड़ता है और जैसे तैसे थोड़ी देरके लिये शांत होना पड़ता है। इस तरह वह कभी रोती पीटती है. कभी बालकको गोदमें लेकर धैर्य देती और शीघ्रही किसीकी सहायताले नदी उतर जानेपर रोटी मिलनेकी आशा दिलाती है और कभी उसका मन बहलानेके लिये कुछ गाती और मेंढक, चिड़िया, आदिकी कहानियां कहती है परन्तु इससे कुछ भी फल नहीं निकलता क्योंकि कहावत प्रसिद्ध है कि ' भूखा तो धाये पतीजे. ' भीमपत्नि द्रौपदीकी जिस तरह पर सभामें दुःशासन द्वारा लज्जा भङ्ग करनेमें कसर नहीं रही थी वैसेही भीमा नदीके किनारेपर बैठी हुई इस बिचारी स्त्रीकी लज्जा बिगाड़नेमें दुःशासनी यवनोंने कमी नहीं रक्खी थी परन्तु उनसे छूट छाटकर बड़ी कठिनाईके साथ वह यहांतक पहुँच सकी थी. अनेक विपत्तियोंसे दुःखी होकर अब तो उस स्त्रीने आत्मघात करने का पक्का विचार करलिया था और एक दो बार नदीमें पैर भिला दिया था परन्तु ईश्वरने मोह बुरा बनाया है. वही उसको पीछा खेंच लाता था. जब २ वह आत्मघात करनेका विचार करती थी । तबही उस उस ४।५ वर्षके अबोध बालकका मोह उसके चित्तमें आजाता था और इसीसे अनेक विपत्तियां सहने परभी उस बच्चेके समझ जानेतक वह अपना जीवित रहना आवश्यक समझती

थी. इस समय भी वह दुःखमें विह्वल होकर एकवार तो भीमा नदीमें गिरने लगी परन्तु ज्योंही उसने पानीमें पैर दिया कि फिर वही मोह उत्पन्न हुआ और उसको निकाललाया, तब उसने किनारे पर बैठकर यह भजन गायाः—

लावनी रंगत बशी करन—बिन काज आज महाराज लाज गई मेरी । दुख हरो द्वारिका नाथ शरन मैं तेरी ॥ तुम दीननकी सुधिलेत देवकीनन्दन । महिमा अनंत भगवंत भक्तभय भञ्जन । तुम किया सिया दुखदूर शंभु धनु खण्डन । हे तारण मदन गोपाल मुनिजन मन रञ्जन । करुणानिधान भगवान करी क्यों देरी । दुख हरो द्वारिकानाथ शरन मैं तेरी ॥१॥ तुम सुनि गजेंद्रकी टेर विघ्न अघ नाशी । ग्रह मारि छुडाई बंदि काटि पग फांसी । मैं जपों तुम्हारा नाम द्वारिका वासी । अब काहे राज समाज करावत हांसी । अब कृपा करो यदुनाथ जानि चितचेरी । दुख हरो० ॥ २ ॥ तुम पति राखी प्रहलाद हलिदुख टारो । भय खंभ फारि नरसिंह असुर संहारो । ब्रज खेलत केशी आदि बकासुर मारो । मथुरा मुष्टिक चाणूर कंसमद गारो । तुम मात पिताको आनि कटाई बेरी । दुख हरो० ॥ ३ ॥ कै भक्तन हित अवतार कन्हाई तुमने । यमलार्जुनको जड योनि छुटाई तुमने । जल बरसत प्रभुता अगम दिखाई तुमने । नखपर गिरिधरि ब्रज लियो बचाई तुमने । प्रभु अब बिलम्ब क्यों करी हमारी बेरी । दुखहरो० ॥ ४ ॥

किसीने कहा है कि—

दोहा—दुखमें सुमिरन सब करे, सुखमें करै न कोय ।
जो सुखमें सुमिरन करे, दुख काहेको होय ॥

सो वास्तवमें सचहै. आपदा पडनेही पर मनुष्य परमात्माका भजन करता है. जो मनुष्यपर दुःख न पडे तो वह परमेश्वरको कभी याद भी न करे. इसका स्मरण करानेवाला तो दुःखही है. जब दुःख पडता है तबही मनुष्यकी बुद्धि ठिकाने आती है. बुद्धि ठिकाने आती है तब भजन भी बनता है और जब सच्चे मनसे परमेश्वरका स्मरण होता है तो फल भी शीघ्रही मिलता है. सौ सौ वर्षों तक तपस्या करनेसे भी सुनवाई नहीं होती परन्तु किसी २ बार भगवानके कानमें ऐसी शीघ्र भनक पहुंच जाती है कि कदाचित् तार भी न पहुँचै. चाहे अनुमानसे हो अथवा प्रमाणसे परन्तु एक अङ्गरेज विद्वानने लिखा है कि Light takes eight minutes to come from our sun, अर्थात् प्रकाशको सूर्यसे पृथ्वीपर आनेमें आठ मिनट लगते हैं. जब प्रकाश-कोही इतना समय लगता है तब इस हिसाबसे पृथ्वीपरसे बैकुंठ तक पहुँच-नेमें तो आवाजको न जाने कितने घंटे लगना चाहिये परन्तु जब सच्चे मनसे प्रार्थना कीजाती है तो उस आवाजको पहुँचनेमें कुछ भी समय नहीं लगता । उस दुखिया स्त्रीकी जिह्वासे ज्योंही ' प्रभु अब विलम्ब क्योंकरी हमारी बेरी '

घाला अंतिम पद निकला कि उसी क्षण भीमा नदीके उसपार एक मनुष्य दिखाई दिया और वह भी नावमें बैठकर इस पार आता हुआ. अब तो उसकी चित्तको कुछ धैर्य हुआ और वह भी ज्यों २ नाव किनारेकी ओर आती गई त्यों त्योंही बढ़ता गया. इस समय नदीका वेग कुछ कम होगया था और नावके खेने वाले होशियार थे इससे नावको किनारे लगनेमें अधिक देर न लगी ज्योंही नाव किनारे लगी और दोनोंकी आंखें मिलीं कि उस नवागत मनुष्यने पूछा;-

"तुम यहां कैसे पहुँची"

स्त्रीने उत्तर दिया "क्या कहूं! एकबार मुझको मालोजीने मुसलमानोंके हाथसे बचाया था सो तो तुम जानतेही हो परन्तु पीछे उन दुष्टोंने कईबार मेरा पीछा किया. यहां तक नौबत पहुँची कि एकबार तो उन्होंने हमको पकड़ही लिये मैं तुमसे क्या कहूँ उन्होंने मेरा धर्म बिगाड़नेमें कुछ भी कसर नहीं रक्खी परन्तु भगवानकी कृपा ऐसी हुई कि वे रातको सो गये और मैं इधर भाग आई आज कई दिनसे छिपते २ और चलते चलते मैं थक गयी और कठिनाईके साथ यहां पहुचने पाई हूं परन्तु इस लड़केके बापकी न जाने क्या दशा हुई होगी ईश्वरने तुमको हम दोनोंके प्राण बचानेहीके लिये भेजा है मैं तुम्हारा जन्मभर उपकार नहीं भूलूंगी अब मुझको अपने साथ ले चलो परन्तु यह तो बताओ कि तुम इससमय बहती नदीमें पड़कर कहां जाते हो"

पुरुषने उत्तर दिया—"तुम्हारी सहायता करनेमें मैं एक बार तो मुसलमानोंके हाथसे खूब पिटही चुका हूं उस समय जो वीर मालोजी हमारी रक्षा न करते तबतो उसी दिन काम तमाम था परन्तु उस समय तो बच गये जो उसी समय मैं मर गया होता तो अच्छा था क्योंकि इतना दुःख न उठाना पड़ता. मैं समझ चुका था कि मेरा भतीजा और भतीजी जिनको मैं अपने पुत्र पुत्रीकी तरह गिनता हूं दोनों मर गये परन्तु वे जीवित निकले और अनायास उनसे भेंट भी होगयी उसीका यह फल आज मैं भोग रहाहूं लड़केको तो कोई चुपकेसे पकड़ ले गया दामाद आषाढ़ वदी १२ को अपने मालिकके पास जानेको घरसे निकला था तबसे उसका पता नहीं है और पहिला पता न लगनेसे लड़की मेरे पास आ गयी है. उसको बच्चा होने वाला है. इसी आफतमें जान फसी है. अबतुम घबराओ मत यहांसे पासही एक बुढ़िया रहतीहै उसको मैं लड़कीकी सोवड़के लिये बुलाने जाताहूं, तुम यहीं बैठरहना मैं अभी लौटता हूं। तब दोनोंको साथ ले चलूंगा।"

इसके उपरान्त दोनों अलग २ हुए घण्टे भरमें जब वह लौटा तो मा बेटा दोनोंको साथ लेता गया और इस तरह पर हैबतराव, रमा तथा सीताबाई अपने पुत्र सहित एक झोपड़ीमें रहने लगे।

यहां बनमें भी हैबतरावके साथ 'घरकी दाधी बनगई और वहूँ पर लागी आग' वाली कहावत जा चरितार्थ हुई. जिन मुसलमान सिपाहियोंके भयसे हैबतरावने घर छोड़ा था वेही शत्रु यहां भी आनलगे पहले उनकी डाढ़ धन और स्त्री दोनों पर थी जिनमेंसे धन तो वे पहलेही ले चुके थे और स्त्री पर अभी उनकी नजर लगी हुई थी. रमा देखनेमें यद्यपि इस समय अधिक सुन्दर नहीं थी क्योंकि गर्भावस्थामें बहुधा स्त्रियां भद्दी होजाती हैं परन्तु व्यभिचारी लोगोंका सिद्धांत है कि दिल लगा गधैयासे तो परी क्या माल है. वही दशा उन यवनोंकी भी थी. जिस दिनसे रमा वहांपर आई उसी दिनसे दुष्ट यवनों की दृष्टि उस पर पड़ी और इस विषयकी खटपट होने लगी. स्त्री गर्भवती होनेकी दशामें बहुत निर्बल और कोमल हो जाती हैं, उस समय सहजहीमें उसके चित्तपर धक्का पहुँच जाता है और उससे शरीर ऐसा हो जाता है कि जन्म भर सुधरना कठिन पड़ता है. इसी विचारसे यवन लोग भी अपने उद्योगमें ढीले हो रहे थे. वे अच्छी तरह जानते थे कि रमा सहजमें वश होनेवाली नहीं है और कुछ सताए जाने पर उसके आत्मघात करलेनेका भी उनको पूरा भय था. इसीलिये बच्चा होजाने तक वे चुप्पीसाधे बैठे रहे परन्तु गुप्तरीति पर तो उनकी चालें इस समय भी चलही रही थीं. हैबतरावने अपना झोंपड़ा बिलकुल एकांत स्थानमें बनाया था परन्तु वहां भी उन दुष्टोंके सिखलाए हुए कई दिहाती मनुष्य समय २ पर आया करते और हैबतराव तथा रमाके साथ उच्च मित्रकासा बर्ताव किया करते थे. जिस समय शम्भूका हरण हुआ हैबतरावने कई पत्र निंबालकर नायक जगपालरावको और मालोजीको लिखे परन्तु यवन प्रपंची मण्डलीकी फैलाई हुई जालमेंसे वे बाहर निकल न सके.

काल पाकर रमाके एक लड़का उत्पन्न हुआ और हैबतराव तथा सीताबाईको बड़ी प्रसन्नता हुई. जब लड़का २।३ मासका होगया तो यवनोंका प्रपंच फिर चलने लगा. एक दिन सवेरेके समय उनके सिखलाए हुए दो एक मनुष्योंने आकर हैबतरावसे कह दिया कि शम्भू मारागया. इतनाही नहीं वरन उनहीमेंसे एक ने यहांतक प्रमाण देदिया कि एक मनुष्यसे कुश्तम कुश्ता होनेमें वह मारागया और दूसरेने उसका मृत देह अपनी आंखोंसे देखना स्वीकार किया. इस तरहकी मिथ्या गप्प उड़ानेसे दुष्टोंने यही प्रयोजन सोचा था कि अपनेको निराधार और असहाय समझकर रमा हमारे वशमें आजावेगी परन्तु यहांपर इसका फल उलटा निकला. पुत्र और भ्राताकी

मृत्यु सुननेसे पिता और बहनको जो दुःख हुआ है उसका लिखना यहांप उचित नहीं है क्योंकि वह महा दुःख है, इतना होनेसे पर भी उन लोगोंने क दिनोंतक अपना मुकाम वहीं रक्खा परन्तु जब वे दुष्ट मुसलमान सिपाही उस स्थानमें आने जाने लगे तो उन सब लोगोंने वहांका रहना हानिक समझ युक्तरीतिसे अपने २ अंगको पुराने चिथड़ोंकी राख और तेलसे काल कर लिया जिससें कोई पहचान न सके और बिलकुल फटे चिथरे पहनक अमावास्याकी काली रात्रिमें वहांसे अन्यत्रका मार्ग लिया.

प्रकरण २०.

खोयेहुओंकी खोज ।

समयको जाते कुछ भी देर नहीं लगती. रामजीको भेजे कई मास बीत गये परन्तु शम्भू और सर्जेरावका कुछ भी पता न चला. मालोजीके चित्तको इसका बड़ा दुःख था परन्तु वश कुछ भी नहीं चलता था. सहजहीमें माघका महीना आगया और शिंगणापुरका तालाब भी तैयार होगया. उधर तो वास्तु शांति करनेकी त्वरा है क्योंकि चैत्र मासका मेला पास आता जाता है और इधर खोए हुए मनुष्योंका पता न लगनेसे मालोजीका चित्त उदास रहता है. वास्तुशान्तिमें उत्सव मनाना चाहिये परन्तु मनमें तो शोक भरा हुआ है तब उल्लास कैसे हो ? जो वास्तु शांति नहीं की जाती तब तो पैसा लगाया वृथा जाता है क्योंकि यात्रियोंको तालावका लाभ नहीं मिल सकता और की जाती है तो मन मानता नहीं अब तो मालोजी बड़ी दुविधामें पड़े और विचारने लगे कि क्या करना चाहिये. अन्तमें यही निश्चय हुआ कि वास्तु शांति करके उपरांत खोए हुए मनुष्योंकी खोज करना चाहिये तदनुसार मालोजी सकुटुम्ब शिंगणापुरकी ओर रवाना हुए. बड़े. ही ठाटबाटके साथ वहांपर शांति और ब्राह्मण भोजनका काम हुआ और श्रीशंभुकी कृपासे तालावमें पानी भी अटूट और मीठा निकला. काम समाप्त हो जाने पर एक दिन रात्रिके समय महादेवजीने मालोजीको स्वप्नमें दर्शन दिये और वर मांगनेकी आज्ञा दी. मालोजीने हाथ जोड़कर प्रार्थना की " महाराज ! जो आप मुझसे प्रसन्न हुए हैं तो मुझको एक पुत्र दीजिये, परन्तु वह होना चाहिये पराक्रमी, सुधार्मिक और देशाभिमानी । " उत्तरमें महादेवजीने आज्ञा की " मैं तेरी भक्तिसे बड़ा प्रसन्न हुआ हूँ । जा तेरी इच्छाके अनुसारही तुझको पुत्र होगा और स्वयं मैं तेरे कुलमें जन्म लूँगा " । इस वरदानको पाकर मालोजी तथा दीपाबाई आदिको बड़ी प्रसन्नता हुई और सब लोग वहांसे शिंवखेड़की ओर रवाना हुए ।

मार्गमें एक दिन इनका डेरा भीमानदीके किनारेपर पड़ा, तो वहांपर एक साधु देखनेमें आया जिसने अपना नाम ज्ञानानन्द बताया परन्तु उसकी सूरत कुछ परिचितसी जान पड़ती थी इसपरसे मालोजीने उसको पहचान लिया और पूछा " रामभाऊ ! तुम इस वेषमें कैसे ? " साधुने भी इन्हें पहचान लिया और कहा " क्या कहूँ साहब ! मैं बड़ा अभागा हूँ। एक बार तो आपने मेरी रक्षा करके प्राण बचाए परन्तु उन दुष्टोंने फिर दूसरी बार मन्दिरपर आक्रमण करके हम दोनों स्त्री पुरुषोंको बांध लिया । मैं जबसे उनके घेरेमेंसे छूटा हूँ तबसेही मैंने यह वेष धारण किया है अब भी स्त्री और ४ । ५ वर्षके बालकका पता नहीं है, नहीं मालूम उनकी क्या दशा होगी। सुभाषितमें लिखा है:—

"श्लोक-ऋणकर्त्ता पिता शत्रुर्माता च व्यभिचारिणी ।
भार्या रूपवती शत्रुः पुत्रः शत्रुः कुपण्डितः ॥"

"अर्थात् ऋण करनेवाला पिता, व्यभिचारिणी माता, रूपवती स्त्री और मूर्ख पुत्र ये चारों शत्रु होते हैं। महाराज ! रूपवती स्त्रीहीके कारण मेरी यह दशा हुई है।"

मालोजीको इससे बड़ा दुःख हुआ परन्तु भावी प्रबल जानकर उन्होंने साधु महाराजको धैर्य दिया और शिङ्णापुरके महादेवपर कुटी बनाकर रहनेकी प्रार्थना की। साधुजीने वहां रहना स्वीकार किया तब उन्होंने वहांपर उनका सब प्रबन्ध कर दिया और खोई हुई स्त्री तथा पुत्रका पता लगानेका पक्का प्रण कर घरका मार्ग लिया। इस तरहपर गङ्गथड़ी प्रान्तमें चलते चलते जब मालोजी गोदानदीके किनारे पहुँचे तो अकस्मात् दीपाबाईका स्वास्थ्य ऐसा बिगड़ गया कि वहींपर २ । ४ दिन मुकाम करना पड़ा। वहांपर जङ्गल बड़ा अच्छा और सघन था और तिसपर भी नदीका किनारा था इससे मालोजीके हाथ शिकार खेलनेका अच्छा स्थान आगया और जबतक वहां रहे तबतक नित्य शिकार होती रही।

एक दिन मालोजी शिकारके लिये बहुत दूर निकल गये। इतनेहीमें खूब जोरसे पानी आगया और सन्ध्या होगई जिससे वे पीछे डेरेपर नहीं पहुँच सके परन्तु पासही कुछ झोपड़ियां देखकर वहां चले गये। वहांपर झोपड़ीके बाहर एक अधेड़ वयका मनुष्य काले रङ्गका भूतजैसा बैठाहुआ था उससे मालोजीने रातभर ठहरनेके लिये स्थान देनेकी प्रार्थना की। उस बिचारेने भी तुरन्त उनका कहना स्वीकार कर लिया और एक झोपड़ीमें उनके साथके आदमियोंको ठहराकर मालोजीको खास अपने रहनेकी झोपड़ीमें स्थान दिया। उस दिनकी शिकारमें मालोजीके हाथ हिरनीके दो छोटे छोटे बच्चे पकड़ गये थे, उनको इन्होंने एक रस्सीसे बांधकर द्वारके पास छोड़

दिया था। उनको देखकर झोपड़ेमेंसे एक ४। ५ वर्षका बालक निकला अ
कहने लगा "आई! आई!! हीं वघ कसलीं पिवळीं मांजरें तीं! बाब
बाबा!! हीं कोणी हो आणलीं?" अर्थात् "मा! मा!! देख तो कै
पीली बिल्ली हैं! बाबा! बाबा!! इनको कौन लाया है?"।

उत्तरसो इसका बूढ़ेने कुछभी नहीं दिया बरन, और उस बालकको
रहनेकी धमकी दी परन्तु वह बालक चुप न रहा और उसी तरहपर पूँछतार
इतनेहीमें झोपड़ीके अन्दर से एक लग भग पचीस वर्षकी स्त्री निकली अ
उस बालक को पकड़ लेगई परन्तु वह मौका पाकर फिर बाहर आगया अ
उसी तरह अनेक नई २ बातें पूँछने लगा. थोड़ेही देरमें मालोजीने जान लि
कि घरमें पांच जीव हैं, एक वृद्ध मनुष्य, दो स्त्रियां, एक ४।५ वर्षका बालक औ
एक इतनेही महीने का बच्चा परन्तु उनकी जात पांतकी कुछभी खबर न पड़
स्त्री, पुरुष और उस बालकका रंग ऐसा काला था कि उनका दिहाती हो
ही प्रमाणित होता था परन्तु उस बालककी स्पष्टवाणी तथा उन लोगोंके दे
की आकृति और चलने फिरनेका ढंग देखनेसे जान पड़ता था कि
अवश्यही कोई उच्चकुलके मनुष्य हैं. उनकी सूरत पहचाननेके हे
मालोजीने टिमक जलते हुए देखी तेल के दीपकको कुछ
तेज किया और जलते हुए घासकी धूलीमें फूंक लगाकर उसे प्रज्वलित किय
इतनेहीमें उस बूढ़ेने अपना मुँह फेरकर अँधेरेमें कर लिया. अब तो मालोजीक
और भी संदेह बढ़ा और इसका भेद जाननेकी उत्कंठा हुई. उस बूढ़े पुरुषक
भी मालोजीकी सूरत और आवाजसे कुछ परिचित होनेका विश्वास हो होत
था परन्तु इस समय तक उसने इनका नाम नहीं सुना था इसलिये उसक
अपनी सूरत दिखानेमें भय होता था. थोड़ी देरमें इधर उधरकी बातें करत
करते मालोजीने अपना नाम प्रकाशित कर दिया. बस फिर क्या देर थी
उनका नाम सुनतेही वह पुरुष उनके पैरोंमें गिर गया और भीतरसे निकल
कर एक युवा स्त्रीने पैर पकड़ लिये. इस समय हमारे मालोजी बड़ेही आश्चर्य
डूब गये और उनका नाम जाननेको उत्सुक हुए इतनेहीमें उस पुरुषने द्वारकी
ओर मुँह करके कहा "बेटी रमा! यह तेरे भाई और मालोजी आगये! जर
बाहर तो आ" अबतो सब लोगोंके आनन्दका पार न रहा और लगे सब
परस्पर कंठसे कंठ और छातीसे छाती लगाकर मिलने. इतने परसे पाठकोंने
इन पांचों जीवोंको पहचान लिया होगा. यदि कुछ संदेह रहा हो तो मैं
बताए देता हूं. इस तरहपर हैबतराव, रमा, तथा सीता बाईको पाकर मालो
जीको बड़ाही हर्ष हुआ. प्रातःकाल होतेही मालोजी सबको लेकर अपने डेरे
पर गये और दीपाबाई आदि सबको साथ लेकर शिंधखेड़ पहुँचे.

प्रकरण २१.

मालोजीका प्रपञ्च पुत्र जन्म ।

शिंगणापुरसे लौटने पर मालोजीने सबसे प्रथम काम यह किया कि सुलतान अहमद दूसरेके दरबारमें शम्भुके पकड़े जानेके विषयमें निंबालकर नायक जगपालरावसे लिखवाकर खंजेरावके खोजानेसे जादवरावसे लिखवाकर, और पुंडे नायकका शिफारिशी पत्र सहित अपनेको पहुँचे हुए कष्टोंके लिये सीताबाईसे लिखवाकर तीन पत्र भिजवाये और कई मराठे सरदारोंको ऐसा मिला लिया कि वे भी इस अत्याचारके विषयमें सुलतानसे अड़कर कहनेको तैयार होगये. केवल इतनेही पर मालोजीका संतोष न हुआ परन्तु उन्होंने हैबतरावसे भी एक बड़े जोर शोरकी अर्जी लिखवाकर सुलतानके पास पेश कराई जिसमें शम्भु, खंजेराव, रमा, सीताबाई, रामभट्ट आदि सबही लोगोंका पता न लगने और उनको बिना प्रयोजन पकड़े जाने तथा कष्ट सहनेका पूरा २ हाल दिखला दिया. इसका फल यह हुआ कि सुलतानने इन सब अर्जियोंको सत्यमान लिया और इसकी पक्की जांच करनेका विचार किया. विचार तो किया परन्तु अब इस बातकी तलाश और पूछ पांछ होने लगी कि इसे भारी कामको करनेके लिये भेजा किसको जाय. इस समय भी मालोजीने ऐसा ढङ्ग रचा कि हैबतरावही इस कामके लिये नियत किया गया और 'मनमें भावे मुँड़ी हिलावे' की कहावतके अनुसार उसने भी एक दोबार झूठासा इनकार करने उपरांत यह काम करना स्वीकार कर लिया. मालोजी ये बातें मानो पहलेहीसे जानते हों इस तरहपर ये सब अर्जियां भिजवानेके साथही आवाजी गोविंदके द्वारा खूब सोच समझकर कुछ शर्तें सुलतानसे स्वीकार करानेके लिये स्थिर कर चुके थे. वही सर्तें हैबतरावने इस समय सुलतानके आगे पेश कर दिया. शर्तें ये थीं–

१–हैबतराव पचीससे लेकर पचास तक ऐसे खास अपने धरू हथियार बंद मनुष्य रखै जो समय पड़ने पर उसकी पूरी सहायता करैं परन्तु वे समझे जाय सरकारी नौकर.

२–सरकारी मुहरका ऐसा परवाना दिया जाय जिससे जहां चाहै वहां ही बिना रोक टोक ठहर सकै.

३–यदि अपनी रक्षा करनेमें और जांच करनेके काममें एक आधे मनुष्यका खून भी होजाय तो क्षमा किया जाय.

४–इस काममें जो खर्चा लगै सो सरकारसे मिलै.

यद्यपि शर्तें कुछ कड़ी थीं परन्तु मालोजीने सुलतानके दरबार भरके मुख्य आदमियोंको ऐसा मिला लिया था कि सब लोग एकमत होकर

जो कुछ मालोजी कहते थे उसीके अनुसार सम्मति देते थे. अन्तमें यदि काम पूरा न पड़े तो खर्चेके रुपये पीछे देनेकी मालोजी और पुंडे नायककी जमानतपर हैबतरावकी सब शर्तें सुलतानने स्वीकार कर ली और जोर जुल्म तथा अत्याचारोंकी जांच करनेका काम उसके सिपुर्द कर उसे बिदा किया. अब तो मालोजीकी मनचाही बात होगई. रामजी आदि लोगोंको, जो शम्भु तथा खंडेरावके अमुक स्थानमें कैद होनेकी खबर प्रथमही लाचुके थे, मालोजीने हैबतरावके साथ किया और अन्य कई अपने मनुष्योंको देकर बहुत दूर तक वह उनको पहुँचाने गये तथा आवश्यकताके समय खबर पातेही स्वयं उनकी सहायताके लिये जानेका प्रणकर उन्होंने सब लोगोंको रवाना किया.

इधर महादेवकी कृपासे दीपाबाई गर्भवती हुई जिस दिनसे गर्भ रहा दीपाबाईके मुखमें कुछ तेज बढ़ने लगा और ज्यों २ गर्भ बढ़ता गया त्यों २ ही तेजमें भी वृद्धि होती गई. यहां तक कि थोडेही महीनोंमें उसका चेहरा ऐसा चमकने और सुन्दर दीखने लगा कि जैसा पाऊडर लगानेसे भी नहीं चमकता. शुक्ल पक्षकी द्वितियाके चंद्रमाकी तरह बढ़ता हुआ दीपाके मुखका तेज सातही आठ महीनेमें पूर्णताको पहुँच गया जिसको देखकर लोग कहने लगे कि बालक तो तेजस्वी होगा.

गर्भावस्थामें स्त्रियों को उकौने बहुत होते हैं. बहुधा देखा गया है कि किसी गर्भिणी का मन लड्डू, जलेबी खाने पर जाता है. किसी का सुन्दर २ वस्त्र पहनने पर जाता है, किसीको नाचना गाना अच्छा लगता है तो कोई राख खाती है, कोई कोयला खाती है कोई मट्टी खाती है और किसी को रात दिन सिवाय लड़ने भिड़ने और घर वालों तथा पड़ोसियोंसे कलह करनेके और कुछ अच्छा नहीं लगता है. इस तरह पर गर्भिणी स्त्रियोंके उकौने भिन्न २ प्रकारके होते हैं और इसी परसे भावी सन्तानके अच्छे बुरे होनेका अनुमान भी कर लिया जाता है. परन्तु हमारी दीपाबाई के उकौने कुछ विचित्रही प्रकारके थे. उसको कभी तो अपने पतिको सिंहासनारूढ़ देखनेकी इच्छा होती थी कभी युद्ध देखनेकी, कभी उसका मन किलाबन्दी करनेकी ओर जाता था तो कभी सेनाकी कवायत कराने की ओर. उसकी यह दशा देख २ कर मालोजी बहुतही प्रसन्न होते थे और मनमें कहते थे कि श्रीशम्भुकी कृपासे जो पुत्र होने वाला है वह वास्तवमें वीर और पराक्रमी होगा तथा लड़ने भिड़ने और मरने मारनेसे डरने वाला न होगा इन लक्षणों को देखकर पति पत्नि दोनों फूले अङ्ग नहीं समाते थे. वास्तवमें बातभी ठीकही है. जैसे ब्राह्मणकी शोभा वेद पढ़ने और भागवत स्मरण करनेमें है वैसेही क्षत्रियोंकी शोभा लड़ने और धर्मकी तथा प्रजाकी रक्षा करनेमें है किसी कविने कहाभी है:-

दोहा-कुल सपूत जान्यो परै, लखि सब लक्षण गात ।
होनहार बिरवानके, होत चीकने पात ॥

इस तरहपर 'पूतके लक्षण पालने' में तो दीखतेही हैं परन्तु गर्भमेंही विदित होने लगते हैं ।

इस तरह दिन पर दिन और महीनोंपर महीने निकलने लगे और दीपाका गर्भ बढ़ने लगा जब नौमास पूर्ण हुए तो दीपाके पुत्ररत्न उत्पन्न हुआ अबतो मालोजी, दीपाबाई विट्ठूजी उनकी स्त्री आदि सबही घरके लोगोंको अति आनन्द प्राप्त हुआ इस समय सबही फूले अंग नहीं समाते थे और सबही अपनेको भाग्यवान् गिनते थे. पुत्र तो हुआ था मालोजीके जिसकी खुशी विशेषकरके उनही दोनों पति पत्नीको होनी चाहिये थी और कुछ २ और घरवालोंको भी परन्तु अड़ोसी पड़ोसी और टोले मोहल्लेवाले भी ऐसे खुश होतेथे मानो उनकेही पुत्र उत्पन्न हुआ हो जो मनुष्य इस बातकी खबर पाता था सोही दौड़कर अपने इष्ट मित्रोंको सुनाता तथा मालोजीके द्वारपर जाता था और उनको खुशी करनेके साथही नवोत्पन्न बालकके 'हजारी उमर' पानेका आशीर्वाद देताथा. इस तरहपर बातकी बातमें सारे ग्रामभरमें यह खबर फैल गई और आँगनमें भीड़ होने लगी. नाई लोग हरे २ पत्तोंकी वंदन वारें बांधने लगे, नाइनें आँगनको हरे गोबरसे लीपने लगीं, ढोल और बाजे वाले बाजा बजाने लगे, स्त्रियां गाने लगीं, ढाढी नाचने लगे, भांड़ नकल करने लगे और इस तरहपर साराघर आनन्द मंगलसे भर गया. मालोजी भी जो आता था उसको मिश्री तथा नारियल दिये विना नहीं जाने देते थे और लोग भी हर्षके समुद्रमें थाह लेते हुए लहरोंके समान झुंड बनाकर आते और जाते थे. मालोजीका घर आज आनन्द और मंगलका घर बनगया था और जो वहां जाता था वही हर्ष लूट लाता था: इस तरहपर चारों ओर हर्षही हर्ष छारहा था. कसर इतनी थी कि इस आनन्दका वास्तविक सुख पानेवाली आज बूढी पटैलिन नहीं थी. मालोजीके पुत्रका सुख देखने और उसको खिलाकर अपने हाथको सार्थक करनेके लिये पटैलिनकी बहुतही उत्कंठा थी परन्तु अवसर न आया. जिस कामके लिये विचारी बूढ़ी पटैलिन हाय २ करके मर गई परन्तु मालोजीके पुत्रका मुँह न देख सकी उसीका आनन्द आज सब लोग पारहे हैं. खैर ! अपने अपने भाग्यकी बात है. इसमें किसीका बश नहीं.

इस तरह पर अब मालोजी सर्वसुखी होगये हैं. प्रथम तो शरीरसे निरोग होनाही कठिन है नीरोग हुए तो खानेको नहीं. खानेको मिला तो घरमें मनुष्य नहीं और जो मनुष्य भी हों तो मेल नहीं यह दशा आजकल सर्वत्र देखनेमें आती है परन्तु परमात्माकी पूर्ण कृपासे मालोजीके साथ सबही बातें अनुकूल हैं. शरीर भी नीरोग है, खाने पीनेको भी अच्छी तरह है, राज्यमें पैर

भी जमा हुआ है, प्रतिष्ठा भी अच्छी है मनुष्य सब एक दिलके हैं, भाई अनुयायी है, पत्नी सच्ची पतिव्रता है, मित्र सच्चे और शुभचिंतक हैं और सर्वोपरि घरमें मेल और आनन्दका राज्य है. इतना तो पहलेही था अब ईश्वरकी कृपासे खाली गोदका भी दुःख मिट गया, पुत्ररत्नका मुँह देखनेका अवसर आया और समय पाकर तुतलाती हुई बालककी वाणी सुननेकी आशा होगई कहिये पाठक ! इससे भी मनुष्यके लिये और अधिक सुख क्या होगा ? भूतलपर रहकर जितने सुख मिलनेके होते हैं वे सब आज हमारे वीरमालोजीको प्राप्त हैं, उनही सबको आज वह भोग रहे हैं और वेही सब आज उनको परमात्माकी अटूट कृपाका अनुभव करा रहे हैं. चलो अच्छी बात है सबको ऐसाही हो और सबका सुख इसी तरह पर बना रहै.

प्रकरण २२.

विजयी मालोजी।

ईश्वरने और तो सब वस्तु बनाई सो ठीक है परन्तु एक पेट न बनाया होता तो बहुतही अच्छा होता. यदि पेट न होता तो मनुष्य किसीकी सेवा न करता कोई किसीको माल न गिनता और न कोई किसीकी पर्वाह करता इस पेट पापीनेही सब बातें बिगाड़दीं इस पेटकेही लिये खुशामद करना पड़ता है पेटकेही लिये भलाई बुराई और तेरी मेरी करना पड़ता है, पेटकेही लिये मूर्खको बुद्धिमान कहना पड़ता है, पेटकेही लिये दुराचारीको सदाचारी और दुष्टको शिष्ट कहना पड़ता है पेटकेही लिये कमीनोंको शरीफ और पाजियोंको हुजूर कहना पड़ता है, जिनको देखनेसेही चित्तमें घृणा उत्पन्न होती है पेटके लिये उनसे भी मित्रता करनी पड़ती है और तो क्या परन्तु इस दुष्ट पापी पेटके लिये 'गधेको बाप' बनाना पड़ता यह एक ऐसी बुरी बला मनुष्यके पीछे लग गयी है कि जिसके मारे वह न तो सुखसे सो सकता है, न बैठ सकता है. चाहे गरीब हो, चाहे अमीर सबको यह पेट पापी सताता है और इसीके लिये सबको परिश्रम करना पड़ता है इस चमड़ेकी झोपड़ी रूप पेटमें जिस समय भूखरूपी आग लगती है तो उसको शान्त करनेके लिये मनुष्य न करनेका कामतक कर डालता है. पेट जो चाहता है सो करालेता है।

गोपाल कविने सत्य कहा है किः-

सवैया-पेट छुड़ावत मात पिता अरु, याही ते देश विदेशहु होई।
पेटहि कारण मित्र बिछोहके, छोही कुटुंबि है तरु जोई ॥
पेटहि ऊंचरु नीच सुनावत, याहि ते काम यथा विधि होई।
पेटहि मूल गुपाल भने यह, पेट करै सो करै नहिं कोई ॥

इस पेटहीके लिये मनुष्यको पराधीन होना पड़ता है, और पेटकेही लिये नौकरी चाकरी करनी पड़ती है. यद्यपि किसीने कहा है किः—

नौकरी न कीजे यार घास छील खाइये।
और छीलें भास पास आप दूर जाइये ॥

परन्तु पेट पापीका पालन करनेके लिये परमात्माने जितने प्रपंच रचे हैं उनमें नौकरी भी मुख्य है और जहां नौकरी की कि स्वतंत्रताका नाश होकर परतंत्रताका सिरपर राज्य हुआ. कैसेही गद्दी तकियों पर बैठने वाले क्यों न हों कैसेही अधिकार प्राप्त क्यों न हों, कैसेही औरोंपर हुक्म चलानेवाले क्यों न हों परन्तु जिनकी गिनती नौकरोंमें है उनको स्वतंत्रता तो मानो छिनही चुकी है. 'पराधीन स्वप्ने सुखनाहीं।' वाली कहावतके अनुसार जब स्वप्नमेंही सुख नहीं होता तब जाग्रतावस्थामें तो आशाही क्या रखना चाहिये. तात्पर्य यह कि पेट पापीके लिये मनुष्यको दूसरोंकी सेवा कर अपना आपा बेच देना पड़ता है, स्वतंत्रता और सुखको तिलांजुली दे देना पड़ता है और बाजीगरके बंदरकी तरह जैसे २ मालिक नचावे वैसे वैसे नाचना पड़ता है.

पराधीनीके फंदेसे हमारे मालोजी भी बचने नहीं पाये थे. इसी पराधीनीसे उनके भी सुख और आनन्दमें विघ्न खड़ा होगया था. महाराना प्रताप सिंहसे निरंतर लड़ते रहने पर जब मुगलबादशाहअकबरको उनकी वीरताका सच्चा अनुभव होगया और महारानाने वन वन और नाले नालेमें फिरकर जंगली भील, कोल आदि लोगोंकी तरह रहने पर भी अपनी स्वतंत्रताको न छोड़ अन्तमें अकबरकी सेनाको नीचा दिखाया तो बादशाहने उनका पीछा करनेका विचार बदल दिया और दक्षिणपर चढ़ाई जा की. इस समय दक्षिणमें कोई मुख्य राज्य कर्ता नहीं था. केवल सबही 'कोठी २ के मीर' बन बैठे थे और उन्हीको दबाने तथा वश करनेके लिये अकबरकी यह चढ़ाई हुई थी.

अकस्मात ज्योंही मुगलसेना दक्षिणमें आई कि चारों ओर खलभली मच गई और अपने अपने राज्य अथवा यों कहिये कि कोठरीकी रक्षा करनेकी चिंता होने लगी. इसी कामके लिये मालोजीको जल्दीका बुलावा आया और उनको अपनी सद्यप्रसूता स्त्रीवड़में पड़ी हुई स्त्री तथा तीन दिनके बालकको छोड़कर जाना पड़ा. ऐसा कौनसा मनुष्य होगा जिसके चित्तको ऐसी दशामें स्त्री पुत्रको छोड़कर जाना बुरा नहीं लगता होगा परन्तु करना क्या ? वही पेट पापीकी पराधीनता.

अकबर बादशाहकी सेना बड़ी धूमधामसे आई थी, साथमें पैदल और सवारोंका तो कहनाही क्या परन्तु तोपें भी कई थीं. यह दशा देखकर जादवरावकी अक्कल गुम होगई और अधिकार छिन जानेका पूरा भय होगया. केवल भयही नहीं बरन सब तरहसे उसने आशा छोड़ दी परन्तु मालोजीने उसको

समझा बुझाकर हिम्मत दिलाई और अपनी मुठ्ठीभर सेनासे लड़ाई करनेकी तैयारी कराई. जिस समय जादवराव अपने घरसे युद्धके लिये निकला उसको लौटकर पीछा आनेकी बिलकूल भी आशा नहीं थी और इसीलिये यह चलते समय अपनी स्त्रीसे भी कह गया था कि "यदि ईश्वर बचावैगा और तेरे भाग्यमें सोहाग लिखा होगा तो फिर आनही मिलेंगे परन्तु मुझको आशा नहीं है कि मैं जीवित आऊँ बस आज हमारी अंतिम भेट है."

मालोजीकी यह दशा नहीं थी वह खरे शूरवीरकी भांति बारंबार अपनी तलवारको निरखते और कहते थे कि "आज इसकी परीक्षाका दिन है देखें तो कितने मनुष्योंकी सफाई करती है इतने दिन तो खाली पीठीका बोझाही उठाना पड़ता था परन्तु काम आजही आनेका समय आयाहै तलवारकी तारीफ यही है कि जैसे खेतमें भाजी काटते समय हंसिया चलती है और रुकती नहीं वैसेही शत्रुकी सेनामें पड़कर सिरसे धड़को जुदा करनेमें बराबर और खटाखट चलती रहै और कभी पीछे न फिरै" चलते समय भी वह स्त्रीसे यही कहकर गये थे कि "किसी बातकी चिन्ता मत करना ईश्वरकी कृपासे शत्रुको जयकरके जल्दीही लौटता हूं तुमको युद्ध और काटमार देखनेकी इच्छा भी होती थी उसीके लिये परमेश्वरने आज यह अवसर दिया है, खेद इतनाही है कि तू देख नहीं सकैगी परन्तु कुछ चिन्ता नहीं युद्धमें विजय कर जब मैं लौटूंगा तो सारा हाल तुझको कह सुनाऊंगा जिससे कानद्वारा तू लड़ाईके समाचार जान सकेगी इस पुत्रका जन्म अच्छी घड़ीका हुआ है कि इसके आतेही मुझको खेलने और हाथोंकी परीक्षा करनेका समय मिला इतने दिन हाथ परहाथ धरे बैठे रहते थे सो आज कुछ करेंगे तो सही"

बस बातकी बातमें लड़ाई आरम्भ होगई और दोनों ओरसे गोले गोलीकी वर्षा, तीरोंकी झड़ी और तलवार भालोंकी गदागद होने लगी. तोप बन्दूकोंकी गर्जना, तलवारों की चमकती हुई बिजली, तीरों की सनसनाहट और गिरी हुई लाशों से बहती हुई रक्तकी नदी ने उस समय का दृश्य ठीक वर्षा कालके सदृश बना दिया था. कोई तलवार का घाव खाकर कराहते थे, कोई तीरोंसे बिंधकर चिल्लाते थे; और कोई गोलियोंकी मारसे घायलहोकर रोते थे. मरते २ भी कोई अपने पुत्रका नाम लेकर पुकारता था कोई स्त्री को याद करता था और कोई अपने उत्पन्न करने वाले परमात्माका स्मरण करता था. ऐसे भी बहुतसे मनुष्य थे जो मरने की अन्तिम सीढ़ीपर पहुँच जानेपर भी गालियां ही देदे कर अपने कलेजेको हलका करते थे. प्रयोजन यह कि थोडेही देरमें चारों ओर मुरदोंके ढेर लग गये और जिधर दृष्टि जाती थी उधरही हाथ कटे पैर कटे सिरकटे घायल दिखाई देते थे. इस समय उस भूमि का दृश्य बड़ाही दुःखदायी, चित्तको व्यथा उत्पन्न करने वाला, भयप्रद और साधारणसे

मनुष्योंको विनाही मृत्यु आये यमराजके पास पहुँचा देनेवाला था. उस दृश्यको देखकर बहुतसे कायरोंकी तो धोतियां बिगड़ती थीं.

इसतरह पर लड़ते २ जादवरावकी सेनाकी हार आनेका अवसर आ गया और स्वयं जादवराव हार मान गये. तब तो मालोजी विचारमें पड़े, तुरंतही उन्होंने कुछ बहादुर सवारोंको नंगी तलवार लेकर अपने साथ लिया और इस जोर शोरसे धावा किया कि शत्रुके गनगिनती जवानोंको काट डाला. एक वार तो वह सामनेसे गये और दूसरी वार उसी बची हुई सेनाको लेकर पीछे लौटे. इस समय उनको अपना काम करनेमें और भी सुबिधा हुई क्योंकि सब लोगोंकी उधर पीठ थी. इस तेजीसे वह लौटे और काटमार करने लगे कि असंख्य शत्रु सेना उनके हाथसे कट गयी और शत्रुओंकी एक पताका भी उनके हाथ आगयी. बस पताका हाथसे निकलतेही मोगल सेना तितर बितर होने लगी. इधर जादवरावकी बची बचायी सेनाने मालोजीको साथ दिया जिसका फल यह हुआ कि शत्रुसेना पीछे हट गयी और स्वयं मोगल सम्राट् अकबरको नीचा देखना पड़ा.

इस तरह पर हमारे वीर मालोजीने आज अपनी वीरता दिखलाकर अपने वीर नामको चरितार्थ कर दिया और मुगल सेनाको हटाकर जादव रावका जय कर दिखाया. क्यों न हो सच्चे क्षत्रियके गुण भी तो कहे हैं:-

कवित्त-खेतसे न भागैं ना भगोड़िनके पीछे पड़ैं, धर्मको न छोड़ैं चाहे प्राणहू लों छोड़िदैं। धर्मके विरुद्ध नाहिं काहूको सतावैं कभी, औरहू सतावै तो तुरंत दंत तोड़िदैं ॥ कबहू बलदेव ना विधर्मिनके साथी बनैं, अबलन उबारिबेमें तन मन धन जोड़िदैं ॥ ठाड़े कटि जावैं पीठि रणमें ना दिखावैं, पांव पीछे ना हटावैं मौतहूको मुख मोड़िदैं ॥

बस इसी दिनसे मालोजीने जादवरावके हृदयमें अपना घर कर लिया. इसी अहसानसे जादवराव मालोजीको स्नेह पूर्ण भावसे देखने लगा, इसी दिनसे उसको विश्वास होगया कि मालोजी कोई एक अमूल्य और अलभ्य वस्तु है. और उसी दिनसे वह उनका बड़ा आदर सत्कार और मान करने लगा. संसारमें मतलबही सारहै. कहा है कि:-

दोहा-अपनी अपनी गरजको, लरजत हैं सबकोय।
बिना गरज लरजै नहीं, जङ्गलहू को मोर ॥

महात्मा तुलसीदासजीका वचन है कि-

चौपाई-सुरनर मुनि सबकी यह रीती। स्वारथ लागि करैं सब प्रीती ॥

और किसीने यह भी कहा है कि 'भय बिन होय न प्रीति' इन्हीं सब कारणोंसे जादवराव मालोजीको इतना मानताथा। क्योंकि प्रथम तो उसको

ऐसे २ लड़ाई झगड़ों और काटमारमें उनको आगे कर देनेकी गरज थी और दूसरे उनसे भय भी था कि कहीं मुझ परही हाथ साफ न करे.

प्रकरण–२३.

शम्भु, सर्जेरावकी शोध।

प्रातःकालका समय है, सूर्य भगवान् दिनभरके लिये अपनी प्रियासे विदा होकर यात्राके लिये घरसे रवाना होचुके हैं और सोलह घोड़ोंके रथमें विराजमान होकर आगेको बढ़ निकले हैं। चारों ओर पर्वतों और ऊंचे २ वृक्षों पर बालसूर्यके प्रकाशकी निर्मल किरणोंके पड़नेसे कांतिसी फैलने लगी है। नगरों और कसबोंमें लोग उठ २ कर अपने २ प्रातःकालीय कार्यों में लगे हैं। कोई घरमें झाड़ू मारता है, कोई गाय भैंसका दूध निकाल रहा है, कोई स्नान कररहा है तो कोई ब्राह्मण भस्म धारण किये कुशासनपर बैठ गोमुखीमें हाथ डाले अपनी सन्ध्या और जप आदि करके परमात्माका स्मरण कररहा है। ऐसे समयमें गोदा नदीके किनारे इमामबाड़ी नामक एक छोटीसी गढ़ीके दरवाजेपर कुछ सिपाही बैठे हुए इधर उधरकी गप्पें मार रहे हैं, कुछ हाथमें लोटा लिये जङ्गलकी ओर जा रहे हैं, कुछ दोनों हाथोंमें पानी लेकर मुँहको धो रहे हैं और "या अल्लाह! भेज कोई सोनेकी चिड़िया और हूरका बच्चा, आंखका अन्धा और गांठका पूरा" कहरहे हैं। कितनेही चिलम भर भरके फूँक रहे हैं तो कितनेही आंखें मलरहे हैं। पासहीमें एक खटियापर पैर फैलाए हुए एक मनुष्य लेटा हुआ है, जिसके वस्त्रों और ढङ्गसे जान पड़ता है कि वह कदाचित् सब सिपाहियोंमें सरदार है। उसने अपने मुँह और दाढ़ीपर दोनों हाथ फेरकर कहा "क्यों पीरखां! क्या खबर लाये? कहो क्या माजरा?"।

पीरखां–"जमादारसाहब! खुदाके फज्ल और आपके इकबालसे सब अच्छा है मगर क्या कहूँ वह तो किसीके काबूमें नहीं आती. मैंने उसको बहुतही समझाया, बहुतही रुपये पैसे और ऐश आराम मिलनेका लालच दिया और जब इससे भी काम बनता न देखा तो यहभी धमकी दी कि नाहक क्यों जान खोती है? मगर न जानें वह किस बलाकी पुतली है कि इतनेपर भी अपने हठको नहीं छोड़ती। वह जान देनेको तैयार होती है मगर कहना मंजूर नहीं करती। क्या कहूँ साहब! मैं उसको आपसे मिला देनेका बीड़ा उठाकर गया था मगर वहांपर मेरी दाल नहीं गलती। मैंने हजारहो तदबीरें लड़ायीं मगर वह एकसे दो नहीं हुई। जहांतक मेरा खयाल पहुँचता है मैं कह सकता हूँ कि वह हमारे ताबे नहीं होगी चाहे जानही उसकी ले लीजाय।"

जमादार-" क्या कहा ? वह हमारे तावे नहीं होगी ? अजी वह क्या तावे नहीं होगी वह होगी और उसकी साया होगी। मैंने एक तदवीर सोची है। तुम जानते हो वह अभी कम उम्र और नयी है इस लिये हमसे डरती है। उसको समझानेके लिये उस हिन्दूसे काम लेना चाहिये जो हमारे यहां कई महीनोंसे कैद है। वह भी हिन्दवानी है इस लिये उससे बातें करनेमें उसको कुछ परहेज न होगा और दोनों हैं भी हम उम्रही। इस लिये उसके जारियेसे काम जल्द बनेगा।"

पीरखां-" जीहां! तदबीर तो ठीक है मगर वह कौनसा हिन्दू है जिससे आप काम कराना चाहते हैं ?"

जमादार-" भूल गये क्या ? वह है ना जगपालरावका नौकर! जिसको हम आज कई महीनोंसे पकड़ लाये हैं और जो हमारे यहां कैद है!"।

पीरखां-" हां! हां! याद आगया!!! वही ना जो अपना नाम शम्भू बतलाता है ?"

पीरखांके मुंहसे ज्योंही यह पिछला वाक्य निकला कि ठीक उसीसमय सामनेसे एक साधु वेष मनुष्य आ पहुँचा और बोला " बाबा जय नरसिंह!"

ये दोनों मनुष्य अपना काम न बननेके कारण जले भुने तो पहलेहीसे होरहे थे, साधुका वचन सुनतेही और भी भड़क गये और 'कुम्हार कुम्हारीसे जीते नहीं गधेयाके लाठी मारे' वाली कहावतके अनुसार चिढ़कर बोले, " कैसा नरसिंह ? यहां नरसिंह बरसिंहका क्या काम है ?"।

साधु-" बाबा! ऐसा क्रुद्ध क्यों होता है ? नरसिंहकी कृपासेही सब होता है"।

जमादार-" अच्छा २ सुन लिया! क्यों कान खाता है ?"

साधु-" बाबा! साधु भूखा है। कुछ दिलावै तो ठाकुरके भोग लगै"।

जमादार-" दिलावे सो क्या तेरा कुछ कर्ज आता है? यहां कुछ धरोहर रखगया है जो मांगता है ?"।

साधु-" बाबा! साधुओंकी तो यही धरोहर है कि जहां गये वहीं जय नरसिंह, हमारी जागीरमें चारखूँट पृथ्वी है। जहां जाते हैं वहीं कोई सखीका लाल मिलजाता है"।

जमादार-" सखीका लाल क्या मिलजाता है मुझको तो बड़ा ताज्जुब होता है कि आजकल चारों ओर साधुओंकी पलटनें दिखाई देती हैं उनका पेट कैसे भरता होगा ?"।

साधु-" बाबा! जिसके नामपर हमलोग मूँड़ मुँड़ाते हैं उसी परमात्माको हमारे पेटकी चिन्ता रहती है। चाहिये मनमें विश्वास! फिर कुछ कमी नहीं है। तुमने सुना नहीं है विश्वास और दृढ़ता क्या वस्तु है और इससे क्या फल निकलता है ? सुनिये—

" एक ब्राह्मण किसी ग्राममें प्रतिवर्ष जाया करता और भागवतकी एक कथा कहके सौ दोसौ रुपये कमा लाया करता था । एकबार ऐसा हुआ कि दैवकोपसे वहांपर अकाल पड़गया और बिचारे ब्राह्मणकी कथा किसीने न कहलायी । तब तो पण्डितजी बड़े दुःखी हुए और मनमें विचारनेलगे कि कोई कथा नहीं कहलाता तो खैर ! परन्तु अपना नियम नहीं छोड़ना चाहिये, कोई नहीं सुनता तो क्या हुआ किसी मन्दिरमेंही जाकर कथा कहना चाहिये । इस तरहपर विचार कर ब्राह्मणदेवता एक मन्दिरमें गये और लगे अपने पोथी पत्रा फैलाने, परन्तु वहांके पुजारीने इस भयसे कि कहीं यह ब्राह्मण मुझसे दक्षिणा न मांग बैठे उसको वहांसे उठा दिया । इसी तरह बिचारा पण्डित कई मन्दिरोंमें गया परन्तु कहीं भी उसको किसीने न बैठने दिया । तब तो विवश और दुःखी होकर ब्राह्मणने अपने घरका मार्ग लिया । मार्ग तो लिया परन्तु उसके चित्तको इस बातका बड़ा दुःख था और वह बारम्बार अपने मनमें यही कहता था कि देखो ! सदा तो मेरे मुँहसे इसी बहानेसे भगवतचरचा निकलती थी; परन्तु अबकी बार वैसा नहीं होगा । इसीतरह पश्चात्ताप करता हुआ वह ब्राह्मण ज्योंही ग्रामके बाहर पहुँचा कि उसकी दृष्टि एक फूटेसे शिवालयपर पड़ी । बस तुरन्त वह वहां पहुँचा और पोथी पत्रा खोलकर लगा कथा कहने । उस दिनसे वह नित्य प्रातःकाल वहां जाता और नियमितरूपसे भागवतकी कथा कहकर सायङ्कालको ग्राममें जाकर कहीं सो रहता ! होते होते जब कथा पूर्ण होनेमें एक दिन शेष रहगया तो महादेवजीने कहा ' गणेशजी ! क्यों क्या विचारा ? विचारा ब्राह्मण नित्य आकर हमको कथा सुना जाता है । कल कथाकी समाप्ति होगी । उसको भेंट देना चाहिये' । गणेशजीने उत्तर दिया ' ठीक है । कहिये क्या देना चाहिये ? ' महादेवजीने कहा ' कमसे कम पांचहजार रुपये । ' गणेशजीने उत्तर दिया ' अच्छा सब प्रबन्ध होजायगा कथा पूरी होजाने दीजिये ' । इधर तो ये बातें होरही थीं, उधर एक कंजूस मक्खीचूँस बनियां अपनी खोयी हुयी घोड़ीको ढूँढ़ने निकला था सो मेह बरसना आरम्भ होजानेके कारण उसी शिवालयके बाहर छायामें जा खड़ा हुआ । भीतर होनेवाली इन बातोंको सुनकर वह मनमें विचारने लगा कि ' अहो बड़े मजेकी बात हुई । विना महनत पैसा आता है । कथा वाले ब्राह्मणसे ठेका करलेना चाहिये जिसमें गहरे होजायँगे ' । घोड़ी ढूँढ़ना तो वह भूल गया और तुरन्त पूँछते पूँछते उस ब्राह्मणके पास पहुँचा । इधर उधरकी कुछ बातें करने उपरान्त उसने ढाईहजार रुपयेकी थैली पण्डितजीके आगे धरी और कहा ' महाराज ! आप शिवालयमें नित्य जाकर भागवतकी कथा कहते हैं परन्तु वहां सुननेवाला कोई है नहीं इस लिये यह लीजिये आपकी भेंट और मुझे लिख दीजिये कि ' कथाकी भेटमें अब जो कुछ आवे

उसमें मेरा दावा नहीं '। आप ब्राह्मण हैं इस लिये मुझको आपपर दया आती है और इसीसे यह रकम मैं आपके भेंट करता हूँ '। ब्राह्मणको प्रथम तो इस बातसे बड़ा आश्चर्य हुआ क्यों कि उसको वहांसे एक कौड़ी भी मिलनेकी आशा नहीं थी परन्तु अन्तमें उसने २५००) की थैली अपने पास रक्खी और बनियांके कहने अनुसार फारगती लिखदी । अब तो प्रातः-कालही बनियां राम बिना परिश्रमके २५०० रुपया पानेकी आशामें उस शिवालयमें जा बैठा और पण्डितजीके आनेकी राह देखने लगा । पंडितजी भी अपने नियत समयपर वहां पहुँचे और शेष भाग पूरा करके कथा समाप्तकर निश्चिंत हो घर पर जा सोये. बनिया पांच हजार रुपये पानेकी आशामें वहीं बैठा रहा. दस मिनट हुए, पंद्रह हुए, बीस हुए, आधा घण्टा हुआ, पौन हुआ, और एक घण्टा होगया परन्तु पांच हजार रुपयेके बदले वहां पांच कौड़ी भी न आयी. तब तो बनिया घबराया और मनमें कहने लगा 'हाय२ मैंने धोखा खाया'। कुछ भी आहट होती थी तो वह चौंक कर उस ओर देखता और मनमें कहता था कि कोई रुपये लेकर आया परन्तु आशा पूरी नहीं होती थी. वह कभी तो मनमें विचारता था कि कोई रुपये लेकर बाहरसे आता होगा इसलिये द्वारकी ओर देखता, कभी विचारता कि छत फोड़कर रुपये बरसेंगे इसलिये छतकी ओर आंखें फाड़ २ कर देखता कि कहीं पर दरार तो नहीं चली और कभी शोचता कि आंख बन्द करनेसे रुपये गोदमें चुपचाप आ जायँगे इसलिये आंखें बन्द करता. इतनाही नहीं बरन घरसे चलते समय वह अपनी स्त्री और पुत्रसे कह आया था कि अमुक शिवालयमें आज मुझको पांच हजार रुपये मिलेंगे परन्तु पांच हजारका साढ़े बारह पंसेरी बोझा मुझ अकेलेसे नहीं उठ सकेगा इसलिये घण्टे भरमें तुम वहां आजाना सो भी आगये परन्तु रुपये नहीं आये. उसको वहांपर बैठे २ चार घण्टे होगये और रुपये न मिले तब तो उसको बड़ा क्रोध आया और एक लात गणेशजीके पेटमें मारकर उसने कहा 'क्योंरे बड़े पेटके ? उस समय तो कहता था कि अच्छा पांच हजार रुपये कथाकी भेट करेंगे और अब क्यों चुपहोकर बैठा है ? कहां है वे रुपये ?' ज्योंही उसने लात मारी कि गणेशजीने उसका पैर पकड़ लिया और कहा 'यहां भी क्या दूकानदारी है कि ब्राह्मणको २५००) रु० देकर २५००) तू नफा खाना चाहता है. अमुक दिन तूने मनौती मानी थी कि मेरा यह कार्य हो जायगा तो मैं पांच हजार रुपयेके ब्राह्मण भोजन करूँगा सो कार्य भी होगया परन्तु आजतक एक कौड़ी भी तूने नहीं खर्चकी. तो अब वे रुपये ! २५००) तो तू देही चुका है और २५००) और उस ब्राह्मणको देकर उसके हाथकी रसीद ला तब तू छूट सकेगा.

"इस तरहपर उस ब्राह्मणको पांच हजार रुपये प्राप्त करा दिये परन्तु कराये तबही जब उसके धैर्य और नियम तथा दृढ़ताकी परीक्षा कर ली. बाबा ! तुलसीदासजीने कहा है:-

"दो०-तुलसी विलम्ब न कीजिये, लेत हरीको नाम ।
मनुष्य मजूरी देत हैं, क्यों रक्खेंगे राम ॥

"आप जानते हैं कि हम साधु लोग चाहे चित्तसे लेते हैं चाहे औरोंको दिखानेके लिये परन्तु दिन भर लेते तो रहते हैं भगवानहीका नाम. क्या इसका बोझा उसके सिर नहीं पड़ता है ? नहीं २ अवश्य पड़ता है और इसीसे विना उद्योग किये हमारा पेट भरता है. आज हमारी हुंडी आपहीपर उतरी है और आपहीसे हम लेंगे."

जमादार-"नहीं २ ! यहां हुंडी सुंडी नहीं उतरती. सब जिस्ममें राख लगा ली, हाथमें एक लम्बा चिमटा लेलिया और तुंबी पकड़कर लगे मांगने. लो साहब हम भी साधु हैं. ऐसे ठगोरोंको हम एक कौड़ी भी नहीं देते, हां जो तुममें कुछ गुण हो तो बताओ."

साधु-"बाबा गुण क्या बतावें ? हम जादूगर तो हैं नहीं कि नयी २ चीजें निकाल दें और न हम भांड हैं कि नकल बनाकर और गा बजाकर किसीको प्रसन्न कर दें. हां ! तू जानता है ! हम लोग जङ्गलमें रहनेवाले हैं, धूप, बरसात, गरमी, सरदी सदा सहते रहते हैं और खेती बारी, लेन देन कुछ करते नहीं हैं. ऐसी दशामें कुछ न कुछ गुण तो हमारे पास अवश्यही होना चाहिये परन्तु जो महात्मा होते हैं वे अपना गुण इस तरहपर किसीको दिखाते नहीं हैं, क्योंकि इससे उनकी तपस्या क्षय होती है."

जमादार-"हां हां हम जानतेहैं ! खानेको न मिला तो बाबाजी होगये, घरकी जोरू मर गयी तो फकीर बन गये या कमाई न की गयी व कर्जदार बन गये तो मूंड़ मुड़ा डाली. इस तरहके फरेबी लोगोंको देना हमारे यहां बड़ा पाप लिखा है. यहांसे चले जाओ । हमारे यहां तुम्हारी दाल न गलैगी । जब तक तुम कुछ परचा नहीं दिखाओगे तब तक हम तुमको अपने नजदीक भी न आने देंगे।"

हमारे नवागत साधुने आते समय कुछ दूरहीसे जमादार और पीरखांकी बातें सुनकर यह तो जानही लिया था कि मैं जिसकी तलाशमें आया हूं वह यहीं पर है और साथमें इतना भी उसने समझ लिया था कि वह मुसलमान सिपाही जिसको हम ऊपर जमादार कह चुके हैं किसी अबलाके प्रेममें फँसा हुआ है । वह तुरंत बोल उठा "बाबा ! यद्यपि मेरे गुरूनेः किसीको परचा देनेकी मुझसे नाहीं कर दी है क्योंकि ऐसा करनेसे हमारा तप क्षय होता है, परन्तु तू नहीं मानता और उलटी साधुओंको ठगोरा बताता है तो लेदेख एक छुद्र कलामैं तुझको बताता हूँ ।"

इतना कहकर उस साधुने अपना झोली झंडा उतारकर एक ओर रख दिया और चिलम भरना आरम्भ किया। प्रथम तो उसने झूँठ मूँठ पृथ्वीपरसे उठाकर एक कंकर चिलममें डाला और फिर अपनी थेलीमेंसे तमाखू निकाल कर भरी। तमाखूके साथही उसमें सनी हुई एक चांदीकी डेली भी, जो इसी कामके लिये उसने थेलीमें डाल रक्खी थी, चिलममें डाल दी और ऊपरसे दिया सलाई घिसकर लगा दी। इसके उपरांत उसने प्रथम चिलमका मुँह हाथसे ढक लिया और थोड़ी देरतक कभी ऊपर और कभी नीचे देखकर और कभी कानके और कभी नाकके अंगुली लगाकर मन्त्र पढ़नेका ढोंग किया और तब जमादारके हाथमें देकर कहा "ले बाबा! तमाखू तो तूने बहुतही पी होगी और वह भी बढ़िया रे परन्तु यह साधुकी तमाखूका भी स्वाद ले।"

जमादार, पीरखाँ और साधूमें दो चार बार चिलम घूम चुकने उपरांत साधुने अंतमें फिर चिलम जमादारके हाथमें दी और कहा "बाबा! पीचुके तो चिलमको लौटा देना।"

जमादारने ज्योंही चिलमको उलटा किया तो उसमेंसे कंकरके बदले एक चांदीकी डेली निकली जिसको देखकर दोनों दंग होगये। बस काम बन गया। अब तो उन्होंने जान लिया कि साधु बड़ा महात्मा है और कहा "अच्छा महाराज तो यहाँपर धूनी लगाइये। अब आपको किसी तरहकी तकलीफ नहीं उठानी पड़ेगी।"

साधुने वहींपर अपना डेरा डाल दिया और लगी चिलमोंकी दम खिंचने। यहांपर आनेसे पूर्वही साधु खूब खा पीकर दुरस्त हो लिया था क्यों कि उसको यह ढोंग करना था। थोड़ी देरमें जब उसके लिये खाने पीनेका सामान आया तो साधुने लेना अस्वीकार किया और मुट्ठीभर राख पानीमें घोलकर पीली। यह देखकर लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने उससे कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया "बाबा! आज मैंने तुम लोगोंको परचा दिखानेके लिये अपने भगवानको कष्ट दिया है और अपने गुरुकी आज्ञाको उल्लंघन किया है इससे मेरे लिये यही दंड है।"

अब तो सब सिपाही उसकी यह बात देखकर लट्टू हो गये. कोई कहने लगा 'महाराज बड़े पहुँचे हुए हैं,' कोई कहने लगा ' बड़े तपस्वी हैं" कोई कहने लगा 'आप बड़े महात्मा हैं' और कोई कहने लगा 'मालूम होता है अभी कैलाससे सीधे चले आते हैं.' इस तरह साधुने सबको मोहित और अपने वशमें कर लिया और आप बड़ा महात्मा तथा सिद्ध बनगया।

रात्रि पूरी होकर प्रातःकाल होतेही साधुने अपना बंधना बोरिया उठाया और चलनेकी तैयारी की तब तो हमारे जमादार साहब घबराये और हाथ जोड़कर कहने लगे "महाराज! मुझसे कुछ कुसूर बन गया हो तो मुआफ

कीजिये. आप ऐसे नाराज क्यों होगये ? क्या किसीने आपसे कुछ कहतो नहीं दिया कि एकदम उठकर आप जाते हैं ? आप जैसोंके दर्शन हमारे किस्मतमें कहां थे मगर खुदाके फज्लसे आज हमको आपके दर्शन हुए। हम आपकी खिदमतमें हर तरह हाजिर हैं. आप जाइये नहीं "।

साधुने उत्तर दिया " बाबा ! हम साधुओंको एक स्थानपर अधिक दिन तक नहीं ठहरना चाहिये, क्योंकि इससे संसारी मोह लगजाता है। अब मुझको जाने दो. "

जमादार तो साधुकी बातोंपर ऐसा मोहित होगया था कि कुछ कहनेको बात नहीं. वह उसके पैरमें गिर गया और हाथ जोड़कर कहनेलगा-"महाराज! आपने मेरे लिये इतनी तकलीफ उठायी कि एक दिन आपको भूँखे रहना पड़ा और अब मुझको इसी तरह छोड़कर जाते हो. आपके सामने कहना तो बे अदबी है मगर आपके सिवाय मेरी तकलीफ रफा करनेवाला कोई नजर नहीं आता. "

साधुने उत्तर दिया " बच्चा ! आज रात्रिमें मैंने पहलेही अपने योगबलसे सब बातें जानली थीं और विशेष करके इसी कारणसे मैं यहांसे जाता हूँ। क्योंकि पराई स्त्रीको तेरे वशमें करना मुझसे बन नहीं सकता । "

अब तो सब लोगोंका और भी आश्चर्य बढ़गया और वे परस्पर एक दूसरेका मुँह देख देखकर कहने लगे "अहो ! ऐसी पोशीदा बात इन्होंने कैसे जानली ? दरअस्ल यह कोई पूरे औलिया और पहुँचे हुए हैं । "

इस समय जमादारकी बड़ीही अजब हालत होगयी थी जिस तरहपर मूंजीके हाथसे मोहरोंकी थेली, वैष्णवोंके हाथसे माला और लेखकोंके हाथसे कलम नहीं छूटती और जिस तरहपर कामीके हाथसे परस्त्रीका अंचल और चुगलखोरोंके मुँहसे भलाईके शब्द नहीं निकलने पाते वैसेही जमादारके हाथसे साधुके पैर नहीं छूटते थे। उसने कहा "महाराज ! चाहे कुछ हो मगर यह काम तो आपको करनाही पड़ेगा, आपही मुझपर रहम नहीं करेंगे तो और कौन करेगा । "

साधुजी तो यह बात पहलेही चाहते थे परन्तु केवल ' मनमें भावे और मूंड़ी हिलावे ' की कहावतके अनुसार और लोगोंसे आग्रह करानेके लिये यह प्रपंच कर रहे थे. सब लोगोंको वहांसे हटाकर उन्होंने जमादारको एकांतमें कहा " बच्चा क्या करूं तेरी नम्रता और आग्रह देखकर मुझको आज यह काम करना पड़ता है। नहीं तो हजार रुपये देने पर भी मैं ऐसा करना कभी स्वीकार नहीं करता; अच्छा देख ! मैं एक गंडा बना देता हूँ जिसको तू उसके गलेमें बांध देना बस वह तेरे पेरोंमें आगिरेगी."

जमादार-"महाराज ! वह तो जबसे आई है और कोठेमें बंद की गई है तबसे भीतरकी जंजीर लगाकर बैठी है. किसीको अंदर तो आनेही नहीं देती फिर मैं उसके गलेमें गंडा कैसे बांध सकता हूं ?"

साधु-" अच्छा तो ऐसाकर ! किवाड़ तो वह मेरी सूरतको देखतेही खोल देगी परन्तु मैं स्त्री जातिको स्पर्श नहीं करता हूं इस लिये दो हिन्दुओंको बुलादे जो उसके पास जाकर गलेमें गंडा बांध देंगे और उनको मैं एक ऐसा मंत्र बतादूंगा जिसका वे दोनों उसके पास बैठकर रातभर जप करते रहेंगे, बस नरसिंहकी कृपासे तेरे सब काम ठीक हो जायँगे परन्तु इसमें एक बात यह है कि तू किसीसे कहना मत और उसको उन दोनोंके भरोसे छोड़कर अपने स्थानपर चुप चाप जा सोना जब रात्रिके ठीक बारह बजें तो दहनी ओरकी मूँछ, बायीं ओरकी दाढ़ी और दहनी ओरसे बाईं ओरका आधा सिर मुडवा कर बिलकुल वस्त्र रहित हो हमारे पास वहांपर आजाना बस तेरी सूरत देखतेही वह तेरे गलेसे लिपट जायगी।"

कामांध जमादारने मनमें कुछ भी इसका विचार न किया कि यह बात क्या है और सब बातें स्वीकार करलीं; शंभु और सर्जेराव, जो वहांपर कैद थे, बुलाकर साधुके हवाले किये गये और गंडा बननेकी क्रिया होने लगी. सायंकाल होतेही साधु, शंभु और सर्जेरावको साथ लेकर वहां पहुंचा; जहां वह विचारी अबला कैद थी। इनको आते देखकर प्रथम तो वह घबराई परन्तु शंभुको वह कुछ कुछ जानती थी क्योंकि जमादारकी ओरसे एकआधीबार समझानेके लिये वह उसके पास जा चुका था। इससे उसने चुप चाप किवाड़ खोल दिया और तीनों भीतर चले गये।

वहां पहुँचकर साधुने उन तीनोंको कैदसे छुड़ानेकी आशा दी और सब बातें उनको भली भांति समझा दीं। वहां पर उनकी बात चीत और पूंछ पाछसे साधुने निश्चय कर लिया कि वह १५-१६ वर्षकी अबला जो कैद थी शृंगारपुरके सुर्वे राजघराणेकी कन्या थी, अंबा उसका नाम था और अबतक वह कुमारीही थी. उधर तो यह बातें हो रही थीं इधर जमादार साहब खटियामें पड़े २ घंटे गिन रहे थे। उनको इस बातकी बड़ी जल्दी पड़ी हुई थी कि कब बारह बजें और कब मैं जाकर उससे मिलूं। ज्योंही बारह बजे कि जमादार साहब साधुकी आज्ञाके अनुसार अपने देहकी सजावट करके वहां पहुँचे और कोठरीके अन्दर घुसे कि चारोंने मिलकर एकदम उनके दोनों हाथ तो पीठपर बांध दिये और मुंहमें कपड़ा ठूंसकर खूब लातों और घूसोंसे पूजा करना आरंभ किया। जब अच्छी तरह गत बन चुकी तब चारोंने उसको पकड़कर बाहर निकाला और उससे किलेके बाहर जानेके लिये गुप्त मार्ग पूंछा प्रथम तो उसने कुछ टालटूल की परन्तु कहावत प्रसिद्ध

है कि 'मारके आगे भूत भागै' ज्योंही ऊपरसे मार पड़ने लगी उसने तुरत उनको आगे होकर मार्ग बता दिया और चारों मनुष्य किलेसे बाहर निकल आये। इस तरहपर मालोजीका भेजा हुआ रामजी साधुवेषमें होकर शंभु और सर्जेरावको कैदसे छुड़ा ले गया और साथमें एक निर्दोष अबलाके सतीत्वकी रक्षा करके शंभुका घर बसानेमें समर्थ हुआ। जमादार रुस्तम जमानने भी अपने दुष्ट कर्मका अच्छा दंड पाया।

रामजीकी ऐसी चालाकी और वीरताको देखकर पाठक समझते होंगे कि यह रामजी कोई दूसराही पुरुष होगा परन्तु ऐसा नहीं है यह वही हमारा रामा है। जिसका वर्णन आप लोग ऊपर पढ़ आये हैं रामा जैसे कायर और डरपोक मनुष्यको ऐसा वीर और चालाक बनानेवाले हमारे मालोजी ही हैं। इस बातके वही उसके मास्टर हैं और उन्हींकी कृपासे आज वह रामाके बदले 'रामजी' कहलाने लगा है। क्यों न हो ? संगतिका यही फल है।

भौंरेका शब्द सुन २ कर कीड़ा भी भौंरा बन जाता है और-

दोहा-करत २ अभ्यासके, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जातते, सिलपर होत निशान॥

के अनुसार रस्सीसे घिसकर पत्थर कट जाता है। तब अच्छे मनुष्यकी संगतिसे मनुष्य अच्छा क्यों नहीं हो सकता ? इसीसे महात्मा तुलसीदासके वाक्यको सदा स्मरण करते रहना चाहिये कि:-

दोहा-एक घरी आधीघरी, ताहूकी पुनि आध।
तुलसी संगत साधुकी, कटै कोटि अपराध॥

और अपनी शक्तिभर अच्छे २ पुरुषोंकी संगति करना चाहिये।

प्रकरण २४.
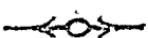
रङ्गमें भङ्ग।

पशु पक्षिकेही बच्चे सुन्दर और सुहावने होते हैं तब मनुष्यके बच्चे सुहावने हों इसमें आश्चर्य क्या है। मालोजीके पुत्र शाहाजीकी सुन्दरता कुछ विशेष प्रकारकी थी। नजाने उनकी सूरतमें ऐसी क्या मोहनी बसी हुई थी कि जो उनको देखता था दस पांच मिनटके लिये गोदमें लेकर खिलाये बिना नहीं रहता था। जादवराव, जिसके पास हमारे वीर मालोजी नौकर थे, बच्चोंको रखने और खिलानेका बड़ा शौकीन था. शाहाजी जब २-४ महीनेके हुए तबहीसे उनको जादवराव खिलाया करता और दिन रातके अधिक भागमें अपनेही पास रखता था, वहीं उनको खिलाता था, अच्छे अच्छे वस्त्र समय

समयपर उनको पहनाता था, और सदा उनका मुँह निरखा करता था। जब घरमें जाता तब भी वह उनको अपनी गोदमें लेजाता था. यों तो स्त्रियोंको पराये बच्चेपर अधिक स्नेह नहीं होता है और जिसमें भी अपुत्री स्त्रीको तो बिलकुलही स्नेह नहीं होता स्नेह न होना तो एक ओर रहा वरन उलटा द्वेषसा होता है. वे अशिक्षित होनेसे मनमें समझा करती हैं कि पराये पूतको खिलाना नहीं चाहिये क्योंकि यदि हमारे भाग्यमें पुत्र खिलानेका योग भी होगा तो वह इस तरहपर दूसरोंके बच्चोंको गोदमें लेनेसे मिट जायगा ऐसे ऐसे अनेक कारणोंसे अपुत्री स्त्रियां बहुधा पराये बच्चोंपर प्रीति रखनेके बदले द्वेष और डाह रखती हैं. जादवरावकी स्त्रीके भी अबतक कोई सन्तान नहीं थी और न उसको अब होनेकी आशा थी. तथापि शाहाजीपर उसका बड़ाही स्नेह था। उनका मुँह देखकर वह प्रसन्न हो जाती थी और इस तरहपर तन मन और धनसे उनको खिलाती और प्यार करती थी मानो वह उसीके पेटका हो यहांतक कि मालोजीकी स्त्री दीपांबाई तो केवल धायकी तरह स्तनपान करानेवाली बन गई और वास्तविक माताका सारा चार्ज जादवरावकी स्त्री म्हालसाबाईने ले लिया था यद्यपि दीपांबाईको यह बात पसन्द नहीं आती थी क्योंकि उसको देवी देवताओं और पीर सय्यदोंकी मनोती मानने तथा व्रत आदिके अनेक कष्ट उठाने पर अब पुत्ररत्नका मुख देखनेका अवसर आया था परन्तु जादवराव तथा उसकी स्त्रीका शाहाजीपर हार्दिक प्रेम देखकर और समय समय पर मालोजीके समझाते रहनेसे वह कुछ बोल नहीं सकती थी. इस तरहपर बालक शाहाजी घरमें पड़ोसमें तथा जादवरावके दरबारमें और उसके घरमें ऐसे सर्व प्रिय हो गये थे कि 'भरी सभामें यों फिरैं ज्यों गोपिनमें कान्ह' वाली लोकोक्तिके अनुसार एकसे दूसरे और दूसरेसे तीसरेकी गोदमें जानेके आगे पृथ्वीपर एक मिनट भर भी नहीं रक्खे जाते थे, शनैः शनैः ज्यों ज्यों वे बढ़ते गये त्यों त्योंही उनकी चालाकी और फुरती भी बढ़ने लगी जिसको देख देखकर लोग अनुमान करने लगे कि यह बच्चा भी युवा होनेपर अपने पितासे किसी अंशमें कम नहीं होगा, कहा भी है कि:-

दोहा—कुल सपूत जान्यो परै, लखि सब लक्षणगात।
होनहार बिरवानके, होत चीकने पात॥

मालोजी अपने पुत्रकी यह दशा देख देख कर मनमें बड़े प्रसन्न होते थे और बारंबार शृंगणापुर निवासी महादेवकी स्तुति और प्रार्थना किया करते थे. इधर दीपांबाई अपने पुत्रकी यह दशा देखकर प्रसन्न तो बहुतही होती थी परन्तु स्त्रियोंके स्वाभाविक गुणके अनुसार उसको पूरा भय रहा करता था कि कहीं मेरे पुत्रके दीठ (नजर) न लग जाय इस लिये वह बालक शाहाजीको स्याने भोपों और जादू टोना जाननेवालोंसे पनवाकर कभी गंडे

पहनाया करती थी और कभी तावीज बांधा करती थी इतनाही नहीं बरन जब वह घरमें आते तो वह उनपर राईमोन उतारती और लाल मिरचोंकी धूनी दिया करती थी, वास्तवमें देखा जाय तो ठीक भी है क्योंकि कहावत प्रसिद्ध है कि "एक पुत्रमें पुत्र नहीं, एक आंखमें आंख" अर्थात् एक पुत्र होनेसे मनुष्य पुत्रवान् नहीं होसकता और एक आंखसे आंखवाला नहीं कहलासकता।

ईश्वरकी कृपासे समय पाकर जादवरावकी स्त्री म्हालसाबाईके गर्भसे एक कन्या उत्पन्न हुई जिसका नाम जीजाबाई रक्खा गया और उसका लालन पालन पुत्रके समान होने लगा. उत्पन्न होतेही न लड़का माता पिताको कुछ देदेता है न लड़की कुछ छीन लेती है बरन जो विचारपूर्वक देखा जाय तो पुत्र होतेही खर्च कराने लगता है और उसकी बधाईमें सहजमें कुछ रुपये लग जातेहैं परन्तु बहुधा ऐसा देखा जाता है कि पुत्र जन्मकी खबर सुनकर केवल माता पिता और घरवालोंहीको नहीं बरन अन्यान्य लोगोंको भी प्रसन्नता होती है और कन्या होनेसे एक प्रकारकी उदासी सी छाजाती है. जब प्रथमहीसे उदासी आई तो आगे जाकर उसका क्या परिणाम होगा इसको सब लोग अपने २ मनमें विचार सकते हैं. खैर औरोंको चाहे कुछहो परन्तु जादवराव और उसकी स्त्रीके लिये यह बात नहीं थी. उन्होंने उस कन्याको ही अमूल्य समझा और पुत्रकी तरहपर उसका लालन पालन करना आरंभ किया। स्त्रियोंमें बहुधा ऐसाभी देखा जाता है कि जब तक उनके सन्तान नहीं होती तबतक तो वे औरोंके बच्चोंपर प्यार रखती हैं और जब उनके बच्चा होजाता है तो उनका स्नेह और प्रेम औरोंपरसे हटजाता है परन्तु जादवराव की स्त्री में यह बात नहीं थी. जीजाबाईके होजाने परभी उसका शाहाजीके ऊपर स्नेह कम न हुआ बरन और भी अधिक बढ़गया यह यही कहा करतीथी कि इस लड़के का पैर मेरे घरमें बड़ीही शुभ घड़ी में पड़ा है, इसीके भाग्यसे इस के साथ खेलने वाली यह उत्पन्न हुई है और आश्चर्य नहीं कि किसी दिन इसके भाई भी होजाय. शनैः २ वह बड़ी होने लगी और माता पिता उसकी तुतलाती हुई जिह्वासे काका, मामा नाना, आदि वाक्योंको सुन २ कर आनंदमग्न होने लगे. अबतो शाहाजी और जीजाबाई दोनों साथ खेलने लगे, एक भोजन करता तो दूसरा भी भोजन करता, एक पानी पीता तो दूसरा भी वैसाही करता, एक खेलता तो दूसराभी खेलने लगता और एक रोता तो दूसरा भी रोने लगता अर्थात् अब इनके सबही काम साथ २ होने लगे। और दिनरात के चौबीस घण्टोंमेंसे थोड़ेके सिवाय साराही समय इनका साथ रहनेमें व्यतीत होने लगा। जादवराव तथा उसकी स्त्रीके मनमेंभी इन दोनोंकी समान गिनती थी दोनोंके समानही वस्त्र बनते समानही खाने पीनेका सामान बनता और दोनों समान रूपसेही दो भिन्न २ मनुष्योंकी गोदीमें चढ़कर फिरतेथे.

इसी तरह चलते चलते चैत्रवदी ५ का दिन आगया. हम लोगोंमें होली का अधिक उत्सव और त्योहार फागुन सुदी १५ को मनाया जाता है और गुलाल तथा पानी आदि फेंकनेका काम चैत्र वदी १ को पूर्ण होजाता है. परन्तु महाराष्ट्र लोगोंमें इस कामके लिये चैत्रवदी ५ नियत है उसीको रंगपंचमी कहते हैं और उसीदिन बहुत कुछ धूमधाम की जाती है, आज रंगपंचमीका दिन होनेसे जादवराव सजधजके साथ दरबारमें बैठा हुआ था, मालोजी विट्ठूजी भी अपने अपने नियत स्थानोंमें डटे हुए थे. तथा अन्यान्य अनेक सरदार और बस्तीके भले आदमी भी सुशोभित होरहेथे. एक ओर चांदीके टाट (रकाबी) में रंग बिरंगी गुलाल और अभ्रक भरा हुआ रक्खा था. तो दूसरी ओरके टाटोंमें सोने चांदीके वर्कोंमें लिपटे हुए पान, सुपारी, लौंग, इलायची तथा सुगन्धित हार तुर्रे सजे हुएथे और कई रकाबियोंमें बढ़िया मिठाई और माजूम भरी हुई रक्खीथी सामने भवैये, गवैये, बजैये, नचैये, कुदैये, कत्थक, कलावंत, भांड, नक्काल और अच्छे २ गलेवाली रंडियां बैठी हुई थीं. योंतो प्रायः सबही त्योहारोंमें हम हिन्दू लोगोंमें नशा करनेकी प्रथा है परन्तु होलीका दिन इस कामके लिये अधिक प्रसिद्ध है. उस दिन तो लोग ‘ चढ़ीपर चढ़ावे तो कभी न धोखा खावे ’ वाले भंगड़ियोंके मोटोपर ध्यान देकर माजूम, गुलकंद और भांगके लोटे चढ़ानेमें कमी नहीं रखते हैं. आज सारा दरबार नशेमें चूर होरहा था ऐसेमें जादवरावकी गद्दीके दोनों ओर बैठे हुए पांच और तीन वर्षकी अवस्थावाले दोनों बालक-शाहाजी और जीजाबाई-भी खेलनेके आनन्दमें मग्न होरहे थे. वे कभी जादवरावकी पीठपर चढ़ बैठते थे, कभी कंधेपर सवारी जा करते थे, कभी गोदमें छिप जाते थे, तो कभी गुलाल और अबीर उसके मुँह, पगड़ी और वस्त्रोंमें लगा देते थे. बच्चोंका यह खेल देख २ कर सभासद लोग बड़ेही हंसते और प्रसन्न होते थे. तथा स्वयं जादवराव भी ऐसा आनन्द मग्न होगया था कि कदाचित उस समयके सुखके आगे वह स्वर्गके सुखको भी तुच्छ गिनता हो तो कुछ आश्चर्य नहीं. इस आनन्द और नशेमें मग्न जादवरावने दोनों बालकोंको गोदमें बिठला लिया और खिलाते खिलाते उसके मुँहसे निकल गया. “ परमात्माने जोड़ी तो अच्छी बनाई है. जो इन दोनोंका जन्म भरके लिये परस्पर सम्बन्ध होजाय तो क्याही अच्छा हो. ”

जादवरावके मुखसे ज्योंही ये शब्द निकले कि मालोजी खड़े होकर बोल उठे“सरदारों और सभासदों ! सुना आप लोगोंने ? आजसे शाहाजीकी सगाई जीजाबाईसे हो चुकी और जादवराव हमारे समधी बन गये.”

जादवरावकी जनानी ड्योढ़ीके पहरे पर जो सिपाही नियुक्त थे उनमेंसे एक हमारे पूर्व परिचित कालेखां भी थे. जिस समय वह यहां पर नौकर

होनेको आया था तो उसके मुँहपर लगी हुई ईश्वरीय मुहरको देखकर जाद-वरावने यही उत्तर देकर उसको नौकर रखना स्वीकार नहीं किया था कि-

श्लोक-खादरचा षट्दोषेण, अष्टदोषेण मांजरा।
वहड़ा बहत्तर दोषेण, काण संख्या न उच्यते॥

अर्थात् ठिगनेमें छः, कंजामें आठ और भेंडे कैंचेमें ७२ दोष होते हैं और कानेके दोषोंकी संख्याही नहीं होती, परन्तु मालोजीने उसको बहुत कुछ समझा बुझा और सिफारिश करके बड़ी कठिनाईसे नौकर करवाया था उसी दिनसे कालेखां भी प्रत्यक्षमें बड़ा नम्र और आज्ञापालक बनकर रहता था, परन्तु उसके मनका मैल साफ नहीं हुआ था और अवसर पानेपर मालो-जीको हानि पहुंचानेमें कसर नहीं रखता था. जो लोग अपना मौका गांठने वाले होते हैं वे अपना काम बनानेके लिये समय पड़ने पर गधेको बाप बना लेते हैं. कालेखां अपने मनमें खूब जानता था कि मालोजीपर जादवरावका पूर्ण विश्वास है, इतनाही नहीं वरन वह जादवरावके लिये 'छातीका बायां हाथ' होगये हैं, उनके बिना उसको एक मिनट भी नहीं सुहाता और वास्तवमें उसका उनके बिना कामही नहीं चल सकता ऐसी दशामें प्रत्यक्ष रूपपर वह उनका एक बाल भी बांका नहीं कर सकता था. इस लिये उसने जादवरावकी स्त्री हालसाबाईको मिलानेका यत्न किया. चाहे जैसा दृढ़ संकल्प मनुष्य क्यों न हो परन्तु बारम्बार किसीकी भलाई या बुराई सुनते २ कभी न कभी अवश्यही बात ध्यानमें जमजाती है. जब पुरुषोंकीही यह दशा है तब स्त्रियोंका तो कहनाही क्या क्योंकि उनकी बुद्धि ओछी होती है। हालसाबाई यद्यपि मालोजीके गुण और स्वभावकोअच्छी तरह जानती थी और उसको उनके विषयमें रत्तीभर भी संदेह नहींथा परन्तु महात्मा तुलसीदासजीकी यह चौपाई-"अतिसंघर्षण करै जो कोई। अनल प्रकट चन्दनतें होई।" झूंठी थोड़ीही होती है कुछ दिनतक तो कालेखां की झूंठीं झूंठीं बातोंपर हालसाबाईने ध्यान न दिया वरन समय समयपर वह उसको फटकार दिया करती थी जिससे दो चार दिनके लिये वह चुप होजाया करता था, परन्तु जिस तरहपर कुत्ता रोटीका टुकड़ा देख लेनेसे लातें खानेपर भी दौड़ दौड़ कर पास आये बिना नहीं रहता वैसेही चुगलखोर अपमान सहने और दुदकारने फटकारने पर भी अपनी आदतको नहीं छोड़ता है. कालेखांने भी मालोजीकी झूंठीं शिकायतें और बुराई करना नहीं छोड़ा। मालोजी तो अपने काममें मग्न रहते थे उनको इतना अवकाश नहीं मिलता था कि हालसाबाईके पास कभी जाकर इधर उधरकी झूंठीं गप्पें उड़ावें और न वह इस बातको पसन्दही करते थे, एक बात यह भी थी कि वह अपने कामको मुख्य समझते थे और जहांतक बनता था उसे ईमानदारी और सत्यतासे

मालिकके कामको अपना घरूकार्य समझकर करते थे जबसे वह आये थे तबसे जादवरावकी कभी किसी कामोंमें हार नहीं हुई थी, कभी किसी तरहकी हानि नहीं हुई थी, और कभी किसी बातमें नीचा नहीं देखना पड़ा था. गांडीव धनुषधारी पांडव अर्जुनकी दो प्रतिज्ञाएँ थीं.'

"अर्जुनस्य प्रतिज्ञेद्वे, न दैन्यं न पलायनम्" अर्थात् कभी किसीके आगे दीनता न करना और रणमेंसे कभी भागना नहीं. इन्हीं दोनों प्रतिज्ञाओंको मालोजीने भी ग्रहण किया था, सर्वोपरिपालतो यह थी कि नीतिमें लिखा है:-

श्लोक-निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वास्तुवन्तु लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वायथे-ष्टम् ॥ अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वान्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

अर्थात चाहे कोई निंदाकरे चाहे प्रशंसा. चाहे लक्ष्मी प्राप्तहो चाहे नष्ट हो, और चाहे मृत्यु आज आवे चाहे युगके अन्तमें; परन्तु धीर मनुष्य न्यायके पथको नहीं छोड़ते इसीके अनुसार उनको अपना काम सत्यतासे करनेके सिवाय किसी बातकी पर्वाह नहीं थी. वह न किसीसे खुशामद कराते थे न उनको किसीकी खुशामद करना पसंद था. परिणाम इसका यह निकला कि दुष्ट कालेखांने लाळसाबाईके कान खूब भर दिये जिससे अब उसके कुछ कुछ विचार मालोजीकी ओरसे बदलने लगे और वह शंकित चित्तसे उनके कामोंकी पूंछ पांछ करने और कालेखांकी बातोंको ध्यानसे सुनने तथा उनको सत्य मानने लगी. इस तरहपर कालेखां अपने दुष्ट विचारोंमें सफल होने लगा, जिस समय रंगपञ्चमीका उत्सव मनाया जारहाथा और दरबारमें जादवरा-वके "परमात्माने जोड़ी तो अच्छी बनाई है. जो इनदोनोंका जन्मभरके लिये परस्पर संबंध होजाय तो क्याही अच्छाहो इस वाक्य के उत्तरमें मालोजीने कहा था कि आजसे शाहाजीकी सगाई जीजाबाईसे होचुकी और जादवराव हमारे समधी बनगये" उससमय काले खां भी वहीं मौजूद था। अंगरेजी में कहा कि Make hay whib the sun Shirser अर्थात मौका पाकर अपने कामसे कभी मत चूको, इसीके अनुसार उसने इससे बड़ा फायदा निकाला और दौड़ते २ जादवरावके घर जाकर लाळसाबाईसे कहा "बाई साहब! सुना आपने आजका हाल? अब आपका राज्य हाथसे गया. अभी भरे दरबार में मालोजीने हमारे मालिकसे कहाकि आपके लड़का तो है ही नहीं राज्य कौन करेगा? अपनी कन्याका विवाह मेरे पुत्रसे करदो तो मैं सबप्रबंध ठीक कर लूंगा हमारे मालिक तो सीधेसाधे हैं उन्होंनेभी फौरन मंजूर करलिया इसतरह चालाक मालोजीने सब दरबारी लोगोंको गवाह बना लिया है अब यह सल्तनत छीनकर आपको निकाल देगा. देखो हमारे मालिक-होंहीसे उसका पेट भरा है और उन्हींके साथ दगा करता है. रावसाहब

क्या जानते थे कि आस्तीनमेंसे सांप निकल पड़ेगा. उन्होंने तो उसकी गरी
हालतपर रहम खाकर उसको रोटियोंसे मिलाया था। और वह यह चाला
चलता है मैं भी आपका नमक खाता हूं। इसलिये यह मुझे बुरा लगा अ
मैंने आपसे रिपोर्ट आनकी अब मरजी आपकी है. हम तो अर्ज करनेवाले है

इतना सुनते सुनते म्हालसाबाईकी आंखें लाल हो आईं क्रोधके मारे
पर पसीना आगया। और वह बड़ी डपटके साथ बोली—"हमारा राज्य छीन
चाहता है ? कलही मैं उसको यहांसे निकलवाए देती हूं. देखूं तो वह क
करता है ?"

इधर तो ये बातें हो रही थीं उधर दरबार बरखास्त होने पर जादवर
अपने घरमें आये तो क्या देखते हैं कि म्हालसाबाई क्रुद्ध होकर कुछ बड़ब
रही है. ज्योंही जादवरावने घरमें पैर दिया कि वह बोल उठी "क्यों क्या
दिया ? आज तो जीजाबाईकी सगाई शाहाजीके साथ कर आयेना" ?

जादवरावने उत्तर दिया "नहीं नहीं अभी तक तो सगाई बगाई कुछ
नहींकी. मैंने तो केवल इतनाही कहा था कि इन दोनोंका जन्म भरके लि
परस्पर संबंध होजाय तो कैसा अच्छा " ?

म्हालसाबाईने तमककर कहा "हां हां ! मैं सब जानती हूं. यह मालो
तुम्हारे पीछे हाथ धोकर पड़ा है सो देखे तो जाओ क्या होता है तुम
उसका विश्वास करते हो परन्तु देखना. वह धीरे धीरे अपना पैर फैलाता जा
है. सो किसी दिन तुमसे राज्य छीनकर तुम्हें घरसे न निकाल दे तो मे
नाम म्हालसाबाई नहीं."

जादवराव—"नहीं नहीं प्यारी ! यह बात नहीं है. तुम तो भोली, कि
धूर्तके बहकानेमें आगयी हो इससे ऐसा कहती हो. जैसा तुम उसको इ
समय समझ रही हो वह वैसा नहीं है ."

म्हालसाबाई—"नजाने तुम पर उसने क्या भुरकी डालदी है कि तुम
वही वह दीखता है। परन्तु याद रक्खो मेरी बातको किसी दिन करम प
हाथ रखकर रोओगे इस समयका मेरा कहना तो तुमको कड़वा लगता हो
परन्तु जब समय आवेगा तब मेरी बात याद आवेगी."

जादवराव—"परन्तु प्यारी ! यहतो बताओ कि हुआ क्या जिस
लिये तुम इतनी रुष्ट होती हो ?"

म्हालसाबाई—"मुझसे पूछते हो सो तुमको मालूम नहीं है कि क्या हुअ
वह भिखारी कल जूतियां चटकाता हमारे द्वारपर आया था आजही इतन
दिमाग उसका चढ़गया कि हमारी लड़कीसे अपना लड़का ब्याहना चाहत
है ? कहां राजा भोज और कहां गंगातेली ? आज उसके ऐसे हौंसले बढ़ग

…को क्या मिलेगा ?"

जादवराव—"उसको निकाल देनेसे … नहीं मिलेगा तो मुझसे पूछते क्यों

म्हाळसाबाई—"फिर वही बात ! … हो ? जो तुम्हारे मनमें आवै सो करो ऐसा कड़ा दंड देनेके लायक उसने

जादवराव—"नहीं नहीं प्यारी … हो, किसीके बहकानेसे बहक जाती हो कोई काम नहीं किया. तुमतो योग्य और वीर मनुष्यको जरासी बातपर जरा मनमें तो विचारो कि ऐसे …र कितनी हानि उठानी पड़ेगी." निकाल देनेमें कितना अपयश … मैं समझ गयी. अब अधिक कहनेका क्यों श्र…

म्हाळसाबाई—"बस … स्त्री और स्वामीके अधीन सेवक तो संसारमें रहते करते हो ? पतिके आधी… यही देखनेमें आई कि वह तो मालिक होगया है हैं परन्तु यह उलटी बा… तुम्हारे ध्यानमें आवै सो करो परन्तु अब मेरे आगे मत और तुम नौकर हो … भलेहीके लिये कहती हूं परन्तु तुम्हारी 'विनाशकाले खड़े रहो. मैं तो अ… गया है इस लिये कोई भी बात तुम्हारे ध्यानमें नहीं जमती. विपरीतबुद्धिः' …

जादवराव—"नहीं प्यारी ! यह बात नहीं है. अभी तुमने उसके गुण नहीं सुने हैं इसी… से इतनी रुष्ट होती हो. तुम कहोगी सोही करेंगे परन्तु जरा बात सुनो."

म्हाळसाबाई—"फिर तुमने वही बात निकाली ! प्यारी गयी तुम्हारी चूल्हेमें और प्यारा गया भाड़में 'हाथ सुमिरनी, पेट कतरनी' वाली बात कर रहे हो. इसमें सार क्या है. 'लेना एक न देना दो' ऊपरसे तो बड़ी चिकनी चुपड़ी बातें करते हो परन्तु करते हो वही जो तुम्हारे मनमें आता है."

जादवराव—"तो अब तुम क्या चाहती हो ?"

म्हाळसाबाई—"मैं चाहती हूं वही जो पहले कह चुकी."

जादवराव—"पहले क्या कह चुकी ? उसको निकाल देना."

म्हाळसाबाई—"हां ! हां !! हां !!! एकवार कहतो दिया ! अब क्या बार बार यही कहलाओगे ?"

जादवराव—"नहीं २ ऐसा नहीं हो सकता इसमें बड़ी बदनामी है."

म्हाळसाबाई—"नहीं हो सकता तो यह लो मैं रोटी भी नहीं खाऊंगी. तुमको वही प्यारा है तो उसीको रक्खो. अब मैं नहीं रहूंगी। मुझसे भी वह अधिक है तो उसीको रक्खो मैं अफीम खालूंगी, ऊपरसे गिर पडूंगी, शस्त्र मारलूंगी, किसी भी प्रकारसे अपना जीव निकाल डालूंगी तब तो तुम्हारी तारीफ होगी ना ?"

इतना कहकर म्हाळसाबाई वहांसे उठ खड़ी हुई और कोठरीमें किवाड़ बंदकर जा सोयी इस तरहपर कालथा चोरने दोनों पति पत्नीमें लड़ाई और घरमें बेचैनी फैलादी, यद्यपि म्हाळसाबाई बड़ीही समझदार, पतिभक्ता,

और पतिके अनुकूल चलने वाली थी. कभी ऐसा अवसर नहीं आया था जिसमें पतिको पत्नी पर अथवा पत्नीको पतिपर इतना क्रोध और घरमें कलह करना पड़ा हो परन्तु हजरत कालेखां साहब सिपाहीकी बदौलत ये सब झगड़ा हुआ और उसीके कारण आज परस्पर दोनोंके चित्त फट गये. फारसी के एक कविका वाक्य है कि—

'ऽहज कदमी दूकहकी मशहूर; जहां जायेंगे वहां करेंगे धूर'

जो सब गुण इसमें विद्यमान थे. बड़े बड़े विद्वान् अपने कर्ममें चूक जाते हैं, अच्छे अच्छे न्यायी भी समय पड़ने पर चूक जाते हैं, हजारों रुपयोंकी लागतके नामी घोड़े भी कदम भूल जाते हैं और 'To err is humar. अर्थात् मनुष्यसे भूल होही जाती है' इस वाक्यके अनुसार प्रत्येक मनुष्य कभी न कभी चूक जाता है. और जो क्या परन्तु सारस्वत चूर्ण और सारस्वत बुद्धिका खा खा कर भी अपनी स्मरण शक्तिको बढ़ाते और तीव्र करते हैं वे भी कई बातें भूल जाते हैं परन्तु न जाने परमेश्वरने चुगल खोरको ऐसी कौनसी शक्ति देदी है कि वह अवसर पर अपना स्वार्थ सिद्ध करने और औरों की हानि करनेकी इच्छासे दूसरोंकी बुराई करनेमें कभी नहीं चूकता किसी कविका कथन है कि:—

कवित्त—चूकि जात जौहरी जवाहिर परखजानै, चूकै जात पंडित पढ़ैया वेद चारीको। चूकि जात घोड़ेको चढ़ैया असवार पूरो, चूकि जात बाजे रोजगार रोजगारीको ॥ चूकि जात मेघ मेघराजनको बारहूमें, लेखो चूकिजात या लिखैया लेख धारीको। बान किरबानको चलैया पूरो चूकिजात, एक नाहिं चूकै है चुगुल कभी द्वारीको ॥

और भी देखिये:—

कवित्त—देखतके नीके अरु नाम बहु आदरके, देखते भलाई सदा जीवमें जोर रहें। भेद भेद पूछें मूछें ऐंठत न आवै लाज, पापके समूह सिंधु आंखिन भरे रहैं ॥ कादिर कहतके कटे नके तलाशियेको, हाट बाट-हूमें दरबारमें खरे रहैं। निंदाको जु नेम जिन्हें चुगुली अधारपर, स्वारथ सिधायबेके खोजही परे रहैं ॥

दोहा—साधुनके हित हतनमें, खल जन कुशल महान ।
चतुर कर्णी गण हरनमें, निरपराधके प्रान ॥ १ ॥
जिभ्या रसना मिस सर्पिणी, राखी खल मुखमांहि ।
जेहुतें याको डस्यो, कोउ जन जीवत नांहि ॥ २ ॥

यासंसारमें दुष्ट ऐसेही होते हैं.

अब तो सादुल्लाह बड़ा घबराया और मनमें कहने लगा "हाय रे! मैंने कैसी भूल की कि इस दुष्ट कालेखांको घरमें आने दिया. दुष्टोंको तो यदि कम

उसे तो गांवमें भी न घुसने देना चाहिये. इतनी अवस्था होजानेपर भी आज दिन तक मैंने स्त्रीके मुंहसे ऐसे कटु शब्द कभी नहीं सुने थे सो आज मुझको सुनना पड़ा. इच्छा तो यही होती है कि इसी समय उसको पिटवाकर नगरसे बाहर निकलवा दूं परन्तु सच है कि अब पछताए क्या हो 'जब चिड़ियां चुग गयीं खेत.' दुष्टके द्वारा जो दुष्ट बीज बो दिये गये हैं उनका तो फल दुष्ट ही होना चाहिये. खैर और तो हुआ सो हुआ परन्तु अब उस हठीलीका हठ कैसे टलेगा" इसी विचार और उधेड़ बुनमें लगा हुआ जादवराव अपने स्थानपर जा लेटा परन्तु निद्रा न आयी. एक कोठेमें पड़ी हुई म्हालसाबाई रातभर क्रोधके मारे बरबराती रही, एक कमरेमें पड़े हुए जादवराव अपनी मूर्खतापर अपनेहीको धिक्कारते, बुरा भला कहते और बिस्तरपर इधर उधर करवटें बदलते रहे परन्तु निद्रा किसीको न आयी. इस तरहपर घरमें विग्रही फैल गयी और बड़ा पछतानी होनेपर भी हमारे महरबान कालेखां साहबके कृपा कटाक्षसे रङ्गमें भङ्ग होगया जिससे रात्रि आनन्दमय होनेके बदले महा उदा-सीका घर बन गयी दोनों पति पत्नीको तो दुःख होनाही चाहिये परन्तु उन सिपाहियों और वहांके अन्य लोगोंको भी इस बातसे बड़ा दुःख हुआ था। इधर मिस्टर कालेखां मनही मन फूले नहीं समाते थे और अपने यत्नमें सफल होनेकी आशासे सौ २ बांस उछलते थे.

म्हालसाबाईके शब्द ऐसे तीरके समान होकर लगे थे कि जादवरावका हृदय बिलकुल जीर्ण होगया था. घाव भी साधारण तीरसे नहीं विषैले तीरसे हुए थे जिनका भरना बड़ा कठिन माना जाता है. उन्हीं घावोंसे व्यथित जाद-वराव अपनी कोठरीमें पड़ा हुआ अनेक विचार करता था परन्तु कोई भी बात तै नहीं होती थी. वह कभी तो अपनी स्त्रीको फटकार देनेका विचार करता था और कभी मालोजीको निकालनेका, कभी कहता था 'स्त्रीको मुंह न लगाना चाहिये' और कभी यह भी कहता था कि 'स्त्रीका क्रोध बुरा होता है' जो बिना समझे उसने अपना प्राण किसी तरह आत्मघात करके खोदिया तो स्त्रीहत्याका पाप गले बँधेगा और बना बनाया घर बिगड़ जायगा. इस तरह पर वह अपने मनके तराजूपर मालोजीके गुण और दोषोंको तौलता था और गुणकी ओरवाला पलड़ा नीचा भी रहता था परन्तु मालोजीने जो शादी जी और जीजीबाईके परस्पर विवाहके सम्बन्धमें सब लोगोंको साक्षी बना लिया था इस अपराधका बोझा उनके दोषोंके पलड़ेमें इतना बढ़ गया था कि वह नीचा होगया और अवगुणोंका पलड़ा ऊपरको उठ गया. अब अबतक जादवरावके मनमें जो मालोजीके गुण जमे हुए थे सो उखड़ गये और दोषोंका जमाव होने लगा. परिणाम यह निकला कि प्रातःकाल होते २ जाद-वरावका विचार बिलकुल बदल गया और मालोजीके लिये जो आदरभाव लेश तक था सो अब नहीं रहा.

ज्योंही प्रातःकाल हुआ और चिड़ियां चोंचाने तथा गायोंके रांभनेका समय हुआ कि जादवराव उठा और नियमित कामसे निपटकर दरबार हालमें गया. वहां जाकर उसने सब अपने सगे सम्बन्धियों तथा अहलकारोंको बुलाया और साथमें मालोजी विठुजीको भी निमन्त्रण कराया. जब सब लोग आगये तो जादवरावने रङ्ग पञ्चमीका उत्सव मनानेके बहानेसे मालोजी विठुजीको भोजन करनेका निमन्त्रण किया. विठुजीने कुछ उत्तर न दिया परन्तु मालोजीने कहा " साहब ! यों तो हम नित्य आपकाही खाते हैं आप अब हमारे समधी होगये हैं इसलिये हम इस समय आपके यहां भोजन नहीं कर सकते. जब विवाह होगा और शाहजी आपके दामाद बनकर आवेंगे तबही हम भोजन करेंगे।

अबतक तो फिर भी जादवरावको कलकी बात हंसी और नशेमें उड़ जानेकी आशा थी परन्तु मालोजीके मुखसे ये शब्द सुनतेही वह सुन्न पड़गया और बोला " नहीं २ ! ब्याहके लिये हमने कब कहा था ? वह तो हंसीकी बात थी। क्या तुमने उसे सत्यही मान लिया ? "

मालोजीने उत्तर दिया " क्या अब भी आपको कुछ संदेह है ? क्या बड़े आदमी कहकर बदल जाया करते हैं ? नहीं २ ऐसा कभी नहीं हो सकता। संसारके जितने कार्य हैं सब विश्वाससेही चलते हैं। एक साधारण मनुष्य भी अपनी कही हुई बातको नहीं फेरता तब आप ?

जादवरावने ललकार कहा ' तब आप क्या ? क्या तुम हमको झूंठा ठहराते हो ? यों तो हम चाहे कर भी देते परन्तु अब तुम हठ करते हो तो हम कभी नहीं करेंगे !

मालोजी—" खैर आप चाहे न करें परन्तु हम तो अपनी ओरसे कर चुके हैं। सत्पुरुषोंका धर्म अपने वचनका पालन करना है। आप भी जो वचन देचुके हैं उसका पालन करना आपके लिये आवश्यक है और आप करेंहीगे इसमें संदेह क्या है ? "

जादवराव—" तुम तो बड़े गहेलपटू जान पड़ते हो। विवाह भी क्या जबरदस्तीसे होता है ? जाओ हम नहीं करते और ऐसे मनुष्यको अपने यहां रखना भी नहीं चाहते जो बातका बतगड़ बना डाले।

अबतक तो मालोजी शांतिके साथ उत्तर देरहे थे परन्तु इन अंतिम शब्दोंको सुनकर उनकी नस २ में राजपूती खून उछलने लगा और वह बोले ये सब लोग इस बातके गवाह हैं कि आपने अपनी कन्या जीजीबाईका विवाह शाहजीके साथ करना स्वीकार किया है। याद रखना जो मेरा नाम मालोजी है और मैं सच्चे राजपूतकी संतान हूं तो जीजीबाईको शाहजीकी

भी बनाही लूंगा। तुम तो कहते हो कि मैं ऐसे मनुष्यको रखना नहीं चाहता परंतु मैं स्वयं ऐसे स्थानमें रहना पसंद नहीं करता महात्मा तुलसीदासजीने कहा है कि:-

दोहा-तुलसी जहां विवेक नहिं, तहां न कीजै वास।
श्वेत श्वेत सब एकसे, कैरव कपूर कपास॥

अर्थात् जहां कुसुम का फूल, कपूर कपास तीनों ही श्वेत होनेके कारण एकसे गिने जाते हों वहां नहीं रहना चाहिये. इतनाही नहीं वरन और भी कहा है कि:-

दोहा-आव नहीं आदर नहीं, नहीं नैन में नेह।
तुलसी वहां न जाइये, कंचन बरसै मेह॥

अर्थात् जहां आदर सत्कार न हो और आंखोंमें स्नेह नहो वहांपर कंचन बरसता हो तप भी नहीं जाना चाहिये. और भी एक कविने कहा है कि:-

सवैया-चरचा कुटनीनकी नीकी लगै भडुआनकी खातिर ताजी रहै।
रंडियानकी लागै भली बतियां गंडियांकी जहां सिरताजी रहै॥
नहिं जानतहै बात गुनीन सुनी कवि का शिविरों इत राजी रहै।
निशिवासर पासमें पाजी रहैं तो अमीर या वक्तको राजी रहै॥

सो वास्तवमें सत्य है. यदि मैं पहले जानलेता कि अंधेके आगे रोना और अपनी आंखें खोना वाली दशा होगी तो मैं कदापि यहां नहीं आता. आपके यहां सब धान बाईस पंसेरी है आप भले और बुरेको नहीं पहचानते और न मनुष्यकी परख करना जानते हैं आपके यहां तो मूर्खोंका, बातोंही जमा खर्च करनेवालोंका सर्वस्व हजम करजाने परभी डकार न लेने वालोंका झूठोंके बादशाहोंका और भीतरही भीतर अपना घर भरके प्रत्यक्षमें शुभचिंतक बननेवाले ढोंगी पुरुषोंका राज्य है. ऐसे स्थानमें मुझ जैसे एकमार्गी और सच्चे मनुष्यका निर्वाह कैसे होसक्ताहै मैंने बड़ी भूल की कि आपके पास इतना समय नष्ट किया खैर आप चाहे गुण न मानें परन्तु परमेश्वर तो इसका फल अवश्य मुझको अच्छाही देगा आप यह न समझिये कि मैंही इसका पालन करता हूं देखिये:-

सवैया-दांत न थे तब दूध दियो अब दांत दिये कछु अन्नभी दैहैं।
जलमें थलमें पशु पंछिनकी सुधलेत वही तेरीहू सुध लैहैं॥
काहेको शोच करै नर मूरख शोच किये कछु हाथ न ऐहैं।
जानको देत, अजानको देत जहानको देत सो तोहुको देहैं॥

जिससमय स्त्रीके पेटमें गर्भ स्थित होता है उसी समयसे उसके पालनके लिये परमात्मा स्तनोंमें दूध उत्पन्न करने लगता है जिसको उस समयमेंही इतनी चिंता होतीहै उसीको सदा चिंता रहती और वही सबका पेट भरता है और इसलिये नीतिमें लिखा है कि:-

श्लोक—कोऽति भारः समर्थानां किन्दूरं व्यवसायिनाम्।
को विदेशः सुविद्यानां कः परः प्रियवादिनाम्॥

अर्थात् समर्थके लिये कुछ भार नहीं है व्यवसायीके लिये कोई वस्तु दूर नहीं है विद्यावानके लिये कोई विदेश नहीं है और प्रिय बोलनेवालेके लिये कोई अप्रिय नहीं है. जब तक परमेश्वरकी कृपा है जहां जाऊंगा तहांही खानेको मिलेगा और वह भी आदरके साथ. कहना तो अपने मुंहसे नहीं चाहिये परन्तु जितनी तनमनसे मैंने आपकी सेवा की है उतनी किसी योग्य और सत्पुरुषकी की होती तो वह अवश्यही जन्म भर गुणमानता आपके यहां अन्धाधुन्धकी साहबी और घटाटोपका राज्य होरहाहै और स्वार्थी लोग आपके मुंहपर 'ठकुर सुहाती' कह २ कर आपकी गांठ काटते और अपना घर भरते हैं परन्तु जो समय पड़ा तो देखना वे लोग कहां जातेहैं. और मैं तो अब जाता हूं परन्तु मेरी बातोंको आप याद रखना समय पर आपको काम देंगी"

इतना कहकर मालोजी उठखड़े हुए और वहांसे चल दिये सायमें विठ्ठूजी भी हो लिये इन शब्दोंसे जादवरावके कुछ २ कान खुले और उसने उनको जानेसे रोका परन्तु वे न ठहरे और वहांसे चल दिये इधर मालोजीके मानेहुओंने फिर जादवरावके कान भरना आरम्भ किया और वह भी इस ढंगसे कि वह मालोजीके जानेका दुःख भूल गया, मालोजी उसी समय वहांसे चल कर अपने घर आये और उन्होंने दीपासे सब समाचार कह सुनाये उन्होंने विठ्ठूजीको तो एक दो दिनमें सारा प्रबन्ध करके आनेकी सलाह दी और वह अपनी स्त्री तथा पुत्र सहित उसी दिन वहांसे अपने स्थान वेरुलगांवकी ओर रवाना होगये. इस समय इनके साथ केवल धर्माजी थे।

प्रकरण २९.

कालेखांको इनाम।

जिस समय ये सब बातें होरही थीं कालेखां भी वहीं मौजूद था. उधर तो मालोजी उठकर घर गये इधर वह भी अपने घर गया और दस पांच अच्छे २ जवानोंको साथ लेकर वेरुलके मार्गमें जा बैठा. ज्योंही मालोजी ग्रामसे निकलकर उस स्थानपर पहुँचे कि कालेखां इनके पास आया और कहने लगा" साहब ! महरबानमन् ! जादवरावकी बातें सुनकर मुझको बड़ा अफसोस हुआ, देखो जमानेकी खूबी ! आपने उसके साथ जैसा सलूक किया है उसको देखते हुए अगर वह आपको अपने चमड़ेका जूता बनाकर पहनावे तब भी ज्यादः नहीं है मगर अफसोस ! सद अफसोस !! उसका

आज यह नतीजा निकला कि खैर ! आप अकेले जायँगे इसीसे मैं इन सबको लेकर आपके पास आया हूं. चलिये हम लोग वेरुळ तक आपकी खिदमतमें हाजिर हैं पीछे लौट आवेंगे. ”

मालोजीने उत्तर दिया “ नहीं २ तुम्हारे चलनेकी क्या आवश्यकता है. हम तो जैसे आये थे वैसेही चले जायँगे. आप लोग अपने २ स्थानपर जाइये. मैं आपको तकलीफ़ देना नहीं चाहता. ”

कालेखां–“ लाहौलवला कुव्वत ! इसमें क्या तकलीफ़ है. आपने तो मेरे साथ ऐसा सलूक और रहम किया है कि मैं उम्रभर नहीं भूलूंगा. इससे बढ़कर मेरे लिये और मौकाही कौनसा आयेगा जिसमें मैं अपना हक अदा करूंगा ”

मालोजीने कहा “ नहीं खां साहब ! मुझे आपको साथ लेचलनेकी कोई आवश्यकता नहीं है. आपकी इतनीही कृपा मेरे लिये बहुत है कि आपने इतना कहा तो सही. ”

कालेखांने उत्तर दिया “ इस तरहके अल्फाजोंसे मुझे न दबाइये. जिले ज़िदोंपर पथरी न फैंकिये. हम तो आपकेही हैं फिर हमारे साथ जानेमें आपको इतना बोझा क्यों पड़ता है. आप इसका कुछ विचार न कीजिये साहब ! हम आपको वेरुळ पहुँचाकर पीछे लौट आवेंगे. ”

जब इस तरहपर इनका आग्रह देखा तो सब लोगोंकी यही राय ठहरी कि चलो मार्गमें भय न रहेगा. चोर, डाकू और वनचर जीवोंसे रक्षा होगी, उसकी चिकनी चुपड़ी बातोंमें आकर मालोजीने उनको साथ लेलिया परन्तु उसके कपटको कोई न जान सका. यहांपर मुझको कपटका उदाहरण स्वरूप एक बात याद आ गई है. सुनिए:–

एक बिल्ली जब वृद्ध हो गयी और चूहे हाथ न आनेसे भूखों मरने लगी तो कुछ उपाय विचारने लगी. एक दिन उसने ज्योंही किसी पड़ोसीके मकानमें जाकर एक दूधकी हंडियामें शिर डाला कि हंडिया फूट गई और उसका घेरा गलेमें रह गया. बस अब तो बिल्लीके लिये चूहोंको ठगनेका एक अच्छा उपाय हाथ आगया. वह उसी समय वहांसे चली और एक खेतमें बहुतसे चूहोंके बिल देखकर लेट गयी थोड़ी देरमें एक चूहा बाहर निकला तो क्या देखता है कि उसकी जात भरका शत्रु पड़ा हुआ है. उसी समय लौटकर उसने सब चूहोंसे यह बात कह दी जिससे सब सचेत होगये और कोई भी बाहर न निकला. जब एक दिन रात इसी तरह निकल गया तब तो बिल्ली भूखके मारे घबराई और जोर २ से ' सीताराम ' २ करने लगी चूहोंने जब उसको इस तरहपर ' सीताराम ' का भजन करते सुना तो जाना कि यह बिल्ली नहीं कोई भक्त है, और अपने २ बिलोंमेंसे बाहरको मुँह निकालकर

पूछा "तू कौन है और यहां क्यों पड़ी है ?" उसने उत्तर दिया "मैं हूं तो बिल्ली परंतु मेरा नाम है शांतिब्रह्म मैंने बहुतसे पाप किये हैं परंतु अब वृद्ध होगयी हाथ पैर चलते नहीं और इंद्रियोंने अपने २ शस्त्र पटक दिये तब हत्या करना छोड़कर यहां आपड़ी हूं अब यही प्रण कर लिया है कि चूहोंको मारना नहीं" तब तो चूहे बोल उठे "ठीक है! अब आप सिद्ध बने हो! "सात सौ चूहे मार बिल्ली हज्जको चली" "इसी कहावतको सच्ची करती हो" बिल्लीने उत्तर दिया "नहीं भाइयो ! यह बात नहीं है. भांड़ चाहे भूखके मारे मर जाय परन्तु उसका कहना कोई सत्य नहीं मानता. वैसेही तुम भी मेरी बातको झूंठीही मानते हो. सच है 'दूधका जला मठेको फूंक २ कर पीता है' परन्तु मैं सच कहती हूं कि तुमको अब मुझसे बिलकुल नहीं डरना चाहिये. मैं सब यात्राएं कर आयी हूं. तुमको यदि विश्वास न हो तो यह देखो मेरे गलेमें केदारनाथ महादेवका केदार कंगन पड़ा है. कहो अब भी तुमको मेरे कहनेमें कुछ सन्देह रहा ?"

अब तो सब चूहोंने अपनी २ गरदन बिलोंसे बाहर निकालीं और बिल्लीके गलेमें हँडियाका घेरा देखकर कहा "वास्तवमें बात सत्य है, अब हमारे डरने का कोई कारण नहीं रहा चलो खूब खेलें और गुलछरें उड़ावें" बस फिर क्या देर थी. सब चूहे बाहर निकल पड़े और लगे उछलने कूदने. यहां तक कि थोड़ीही देरमें चूहोंका भय बिलकुल जाता रहा और छोटे २ बच्चे तो बिल्लीके ऊपर तक चढ़ जाने लगे. बिल्लीने भी ऐसा बकध्यान लगाया कि हाथ पैर तक न हिलाया और पूरी समाधि चढ़ाली. नीतिमें लिखा है श्लोक— 'भक्ष्यभक्षकयोःप्रीतिर्विपत्तेः कारणं महत् । अर्थात्–खाद्यपदार्थ और खानेवाले की प्रीति एक महा विपत्तिका कारण है क्योंकि 'भैंस खलीसे मित्रता करै तो खाय क्या' ? जब चूहे उछल कूद चुके और बिलमें घुसने लगे तो बिल्लीने आँखें खोलीं और सब चूहोंके घुस जानेपर पिछलेको पकड़के खाडाला. इसी तरह वह नित्य करने लगी. कई दिनोंके उपरान्त जब चूहोंकी संख्या कम होने लगी तो उनको बिल्लीपर खाजानेका सन्देह हुआ और उसकी परीक्षा करनेका उन्होंने विचार किया. विचार तो किया परन्तु आगे कौन पड़े ? अन्तमें एक बूढ़े और बड़े चूहेको इस कामके लिये नियत किया गया और निकलते समय उसे सबसे आगे और बिलमें घुसते समय सबसे पीछे रक्खा गया. बस अबतो भेद खुल गया और सब चूहोंको मालूम होगया कि बिल्ली सबसे पीछे वाले चूहेको खालेती है. तब उन्होंने कहा—

शांति ब्रह्मनमस्तस्मै, नमः केदार कंकणं सहस्र चूहे भोक्तव्यं, यंद पुच्छो न दृश्यते ।

बस यही दशा हमारे मालोजी और कालेखांकी हुई आठ सात कोस जाने तक तो कालेखां ने अपना रूप प्रकट नकिया परन्तु ज्योंही कुछ झाड़ी और जंगली मार्ग आया कि कालेखां तो अपने कुछ सिपाहियों सहित नंगी तलवार करके आगे जा खड़ा हुआ और साथवालों ने मालोजी की गाड़ी को चारों ओर से जाघेरा. यह दशा देखतेही सब लोगों के होश 'फाख्ता' होगये और लगे वे इधर उधर देखने. इससमय भी हमारे वीर मालोजी खाली हाथ नथे और न उनके साथवाले धर्माजीही खाली थे. ज्योंही इन्होंने तलवारें निकालीं उनदोनों वीरोंने भी अपनी २ तलवारोंको म्यानसे बाहर किया और ललकारकर कहा जिस "किसीकी इच्छा हो हमारे आगे आजावै देखते हैं तुममें सब गीदड़ही हैं या कोई शेर भी है" मालोजीने गाड़ीवाले को इशारा करके गाड़ी को तो वहांसे आगे भेजदिया और लगे दोनों मनुष्य मुसलमानोंकी खबर लेने, बड़ी देर तक दोनों ओर से हाथ चलते रहे परंतु कुछ भी परिणाम न निकला, परिणाम निकलना तो चाहिये था मालोजीकी हारमें क्योंकि वे केवल दोही मनुष्य थे और मुसलमान थे पूरे एक दर-जन, परंतु परमात्माकी कृपा और इनदोनोंके हाथकी सफाईसे आधे शत्रु तो घायल होकर गिरगये और शेष को दोनोंने बड़ी फुरती और चालाकीसे एक रस्सेमें बांधलिया दुष्टता निपुण नीच कालेखां साहब यदि घायल होकर गिर जाते तो और भी अच्छा था परंतु वह भी जीवित पकड़े जानेवालोंमें शामिल था अबतो मालोजी और धर्माजी दोनोंको बड़ा क्रोध आया और दोनोंनेही कालेखांकी खूब गत बनायी इतनेपरभी उनको संतोष न हुआ, उन्होंने उसकी दाढ़ी तो पकड़ ली हाथमें और ऊपरसे लगाना आरंभ किया जूते. यहांतक कि मारे जूतोंके खोपड़ीके बाल भी उड़ गये. तब मारना तो कर दिया बंद और कहा " किसीने सत्य कहा है कि:-

दोहा-काणा, खोड़ा, कूबड़ा, सिर गञ्जा जो होय ।

इनसे तबही बोलिये, हाथमें जूता होय "॥ मैं पहले जानता था कि अंग-हीन मनुष्य दयाके पात्र हैं परंतु अब मुझको मालूम हो गया कि वे दयाके पात्र नहीं हैं वरन उनके उत्पन्न करनेवाले परमात्माने उनपर छाप लगादी है जिसमें और लोग उनको देखतेही जानलें कि ये ऐबोंके भंडार हैं यदि मैं इस बातको पहले जानता होता तो तुमपर दो बार दया न करता. अब मुझको मालूम हुआ कि ऐसे लोग मक्खीकी तरह अपना प्राण देनेके साथ औरोंको भी पूरा कष्ट पहुंचाने वाले होते हैं. अब तक तो तुम अकेलेही थे परंतु अब 'बड़े भाई तो बड़े भाई और छोटे भाई सबातिल्ला' वाली बात हो गयी साथी भी तुमको अच्छे मिले हैं, कहा है कि,

सौमें सूर सहसमें काना, सवा लाखमें ऐंचा ताना । ऐंचा ताना कहै पुकार, मंजर तैं रहियो हुशियार ॥ सो बात झूंठी थोडीही होती है. फारसीमें भी तो कहा है कि–

चश्म अरजक, मूअ महगूं, रूअ जर्द, ईहा हमें, बाहे चूकस नेकी नकर्द अर्थात् जिसकी आंखें मंजर हों, बाल भूरे हों, और चेहरा जर्द हो वह आदमी कभी किसीके साथ नेकी नहीं करता. इस मंजरका तुमको अब साथ होगया फिर कमी क्या रही ' पहलेही बंदर और फिर खाई भांग ' वाली दशा हो गयी अब तुम्हारी मंडली पूरी ' चंडाल चौकड़ी ' बन गयी न जाने इसके द्वारा कितने मनुष्योंके प्राण जायँगे, कितनोंको कष्ट उठाना पड़ैगा और कितनोंको रोना पीटना पड़ैगा. हमारे शास्त्रमें दया करना धर्म लिखा है और तुलसीदासजीने भी लिखा है कि–

दोहा–दया बराबर धन नहीं, पाप तुल्य अपमान।
तुलसी दया न छांडिये, जब तक घटमें प्राण ॥

परंतु दया करनेसे कई स्थानपर पाप हो जाता है. जो मैं तुझको पहलेही पूरा २ दंड दे देता तो आज इन विचारोंको तेरे साथ दुःख न उठाना पड़ता दया भी पात्र पर करना चाहिये कुपात्रपर. नहीं सर्पको दूध पिलाना जैसे किसीका प्राण लेनेके लिये है वैसेही कुपात्र पर दया करना भी आपत्तिकारक है. बालूमें घी डालने परभी जैसे चिकनापन नहीं आता वैसेही दुष्ट पर दया करने परभी उसको बोध नहीं होता. चाहे जितनी दया कीजाय परंतु दुष्टजन अपनी दुष्टता नहीं छोड़ते. जो उपदेश करके दुष्टको समझाना चाहते हैं वे बडी भूल करते हैं. कहा है:–

सो कौतुक तें मनुज हलाहल पीवन चाहत।
कालानलको अभय दौरि पुनि चुंबन चाहत ॥
सर्पराजको पकारि अंक भरि लैबो चाहत।
जो दुर्जनको सीखदेय वश करिबो चाहत ॥

क्योंकि–

दोहा–दुर्जन पढ़ि वेदांतहू, साधु न होत मनाक।
जिमि नित रहत समुद्रमें, मृदु न होत मैनाक ॥

शेर–चहै इल्मआरा पढ़ायो उन्हें,
जाहिल जिगरका कभी ना गुनै।
रजीलोंको शरीफोंका तरीका आ नहीं सकता,
कभी गदहे चले हैं नाज तक रफ्तार तौसन पर ॥

अर्थात् जैसे समुद्रमें रहनेपरभी मैनाकपर्वत नरम नहीं होता वैसेही वेदांत रटा डालनेपर भी दुर्जनमें कुछभी साधुता नहीं आती और जैसे गधे घोड़ेकी चाल नहीं चल सकते वैसेही नीच मनुष्यको सिखानेमें हजार यत्न करनेपर भी भले लोगोंकी चाल नहीं आ सकती.

तुझ जैसेही किसी नालायक आदमीसे चिढ़कर करनेश कविने कहा है:-

कवित्त-खात हैं हराम दाम करत हराम काम ।
धाम धाम तिनहींके अपयश छावैंगे ।
दोजखमें जैहैं तब काटि काटि कीरा खैहैं ।
खोपड़ीको गूद काग टोंटिन उड़ावैंगे ॥
कहैं करनेश अब घुस्सनि तैं बाज तजैं ।
रोजा औ निमाज अंत यम काढ़ि लावैंगे ॥
कविनके मामिलेमें करै जोन खामी तौन ।
नमक हरामी मरैं कफन न पावैंगे ॥

सो बहुतही ठीक है परन्तु तब भी दुष्ट अपनी दुष्टतासे नहीं चूकते महात्मा तुलसीदासजीने बहुतही सत्य कहा है कि:-

दोहा-बाज बहेलिया बधिकजन, इनकी चाही होय ।
तुलसी या संसारमें, जीवित बचै न कोय ॥

यदि कुत्तेका वश चलै तो चौकेहीमें जा घुसै परन्तु भगवानगंजेको नाखून नहीं देता है । नहीं तो खुजला खुजला करही मर जाय खैर अब मुझको भी.

'शठं प्रति शठं कुर्यात्' अर्थात् शठके साथ शठताहीका वर्ताव करना चाहिये क्योंकि लातके भूखे बातसे नहीं अघाते हैं. दोबार तेरा अपराध क्षमा कर देने पर भी आज तू फिर तीसरीबार आया है इससे इच्छा तो यही होती है कि तेरा सिर धड़से जुदा करदूं जिसमें 'न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी' परन्तु ऐसा करनेसे तेरी नालायकीका नमूना औरोंको नहीं मालूम होगा. इसीसे मैं तेरा प्राण नहीं लेता हूं. इतना अवश्य है कि अपराधीको बिना दण्ड दिये छोड़नेमें पाप होता है इसलिये दण्ड तुमको अवश्य दूंगा यदि आंख फोड़ी जाय तो पहलेही भगवानके घरसे तू दण्ड पाचुका है, नाक काटी जाय तो वह प्रथमही कटा हुआ सा है हाथ या पैर तोड़ दिया जाय तो तू कमाने खानेसे जाय इसलिये कोई भिन्न प्रकारका दण्ड तुझको देना चाहिये जिसमें प्रत्येक मनुष्य तेरी सूरत देखतेही जानलेवें "कि यह इसप्रकारका मनुष्य है"

इतना कहकर मालोजीने एक पैसा खूब गरम करवाया और उसके ललाटपर लगवा दिया. यही दशा उसके साथ वाले दूसरे पथर सिपाहीकी कीगयी और शेष सिपाहियोंकी दहनी दाढ़ी, बाई मूंछ और दोनों भौं कटवादिये

गये. इस तरह पर नयी प्रकारकी सजा देकर मालोजीने उन सबको छोड़ दिया और आपने अपने वेरुलगांवका रास्ता लिया.

प्रकरण २६.

सुखकी सीमा।

'स्त्रीणां चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवो न जानाति कुतो मनुष्यः' अर्थात् स्त्रीके चरित्र और पुरुषके भाग्यको देवता भी नहीं जानसकते तब विचारे मनुष्यकी तो गिनतीही क्या है. जिससमय मालोजीने अपना जन्मस्थान देऊलगांव छोड़कर वेरुलका मार्ग लियाथा तब औरोंकी तो कौन कहै स्वयं मालोजीको भी यह आशा नहीं थी कि मैं ऐसा नाम प्राप्त करूंगा। जिस समय वह जादवरावके पास दरवानीके कामपर रहे तब भी किसीको यह विचार नहीं होता था कि जो आज दरवानी कररहा है. समयपाकर उसीके दरवान बननेके लिये बीसों आदमी उसके पास हाथ जोड़े खड़े रहेंगे. जिस तरह पर उनके इतने बढ़जानेकी किसीको आशा नहीं थी उसी तरह जब वह जादवरावका दहना हाथ बनगये थे तो कोई स्वप्नमें भी इसबातकी शंका नहीं करता था कि एक दिन उनको यहांसे बिदा होना पड़ेगा क्योंकि उनपर जादवरावकी पूर्ण कृपा और विश्वास था और एक मिनट भर भी उसको उनके बिना चैन नहीं पड़ताथा परन्तु "दैवी विचित्रा गतिः" ईश्वरकी बड़ी विचित्र गति है. वह जो चाहता है कर डालता है. जो काम वर्षोंके निरंतर उद्योगसे होना कठिन होता है उसकी कृपासे निमिष मात्रमें बन जाता है, पलक मारनेमें जितनासा समय लगता है उसके आधे नहीं, तिहाई नहीं, चौथाई नहीं, अष्टमांश बल्कि शतांशमें संसार इधरका उधर होजाता है. तात्पर्य यह कि जो उस परमात्माकी इच्छा होती है सोही होता है, उसमें किसीकी कुछ भी नहीं चल सकती. इसमें तो कुछ संदेह नहीं है कि जो उसकी इच्छा होती है सोही होता है; परंतु वह भी काम न्यायसे करता है. जो मनुष्य Honesty is the best policy अर्थात् 'ईमानदारीसे चलनाही सर्वोत्तम राजनीति है,' इस अंगरेजी कहावतके अनुसार चलता है. God helps him who helps himself? अर्थात् 'जो अपने आपको सहायता करता है उसकी सहायता भगवान् करता है, जो इसपर विश्वास रखता है सत्यपथपर चलनेवाला है और जो किसीको कभी नहीं सताता है उसकी रक्षा करनेके लिये वह हजार हाथवाला सर्वांतर्यामी जगदीश्वर सदा

साथ रहता है. जब जादवरावके यहांसे इनको विदा होना पड़ा तो सब लोग इनकोही दोष देते थे और कहते थे कि ऐसा पद फिर इनको नहीं मिलैगा. वास्तवमें बात थी भी सत्यही, क्यों कि जादवराव जैसे प्रबल शत्रुके सामने पड़ना मालोजी जैसे असहाय मनुष्यके लिये सर्वथा अयोग्य था परंतु जिसकी पीठ पर भगवान विराजमान हों उसके लिये अयोग्यभी योग्य होजाता है. दु:साध्य काम सुसाध्य हो जाता है और असंभव संभव होजाता है. मालोजीके उस समयके प्रणको किसीने भी सत्य नहीं मानाथा बरन सब लोग मनमें हंसते थे कि यह भी बंदर घुड़की बताते हैं परंतु आगे जाकर वेही सब बातें परमात्माकी कृपासे सत्य होगयीं क्यों न हो? उस जगदाधार जगदीश्वरसे सब बातें पास हैं.

जादवरावसे रुष्ट होकर मालोजी अपनी स्त्री, पुत्र तथा धर्माजी सहित वेरुल पहुँचे और विट्ठूजी भी अपना सारा सामान तथा मनुष्योंको लेकर वेरुल आ पहुँचे, अब तो फिर भी मालोजी विट्ठूजीके हाथमें वही हँसिया, कुल्हाड़ी और रस्सी आगयी और वही पटैलाईका धंधा जारी हुआ. अंतर केवल इतनाही रहा कि यादवरावके पास जानेसे पूर्व बहुतसे काम जो उनको अपने हाथसे करने पड़ते थे सो इस समय अन्य नौकरोंसे कराये जाते थे, परन्तु तब भी जमींदारीके कई काम तो स्वयं उनकोही करने पड़ते थे. अब तक काम औरोंके भरोसे पर चलता था परन्तु अब इनके आ जानेसे प्रत्येक काममें पूरी पूरी सँभाल रहने लगी जिससे आमदनी भी पूरी बढ़ गयी और सब काम ठीक ठीक चलने लगा सब तो अब सुखसे रहनेलगे, परन्तु मालोजीके हृदयसे उनका किया हुआ प्रण न हटा. जब जब उनके चित्तको कुछ एकाग्रता मिलती थी तबही तब वही बदला लेने और अपने प्रणका निर्वाह करनेके विचार मालोजीके हृदयमें उठने लगते और उधेड़बुन होने लगती थी. इसी तरह करते हुए तीन चार वर्ष निकल गये और कोई अवसर हाथ न आया तब तो मालोजीके चित्तको अतिखेद हुआ और वे अनेक उपाय विचारने लगे परन्तु खाली विचारोंसे काम नहीं बन सकता. विचारके समय विचार काम देते हैं परन्तु पैसेका काम विचारसे पूरा नहीं पड़ता. जादवराव जैसे जबरदस्तसे लड़ना कुछ सहज काम नहीं था कि चट विचार किया और पट काम बनगया. वहां तो पूरे द्रव्यकी आवश्यकता थी और द्रव्य इतना पास था नहीं जिससे काम चल सकै बस इसी बातकी हार थी. संसारमें जितने काम हैं उनमेंसे इने गिने दोचारको छोड़कर शेष सब काम द्रव्यहीसे होते हैं. किसी कविने कहा:-